श्री गुरु हरिराय साहिब विशेषांक

 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही ५४३
जून 2011 वर्ष ४ अंक १०

संपादक — सिमरजीत सिंह, एम. ए., एम. एस. सी.
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, एम. ए. (हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी), बी. एड.

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१॥
भूली मालनी है एउ ॥
सतिगुरु जागता है देउ ॥१॥रहाउ॥
ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥२॥
पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥
जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ॥३॥
भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥
भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥४॥
मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥
कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥५॥१॥१४॥ *(पन्ना ४७९)*

भक्त कबीर जी आसा राग में अंकित इस पावन शबद द्वारा फूल-पत्तियां भेंट करने से संबंधित प्रचलित दिखावे के मूर्ति-पूजन की व्यर्थता दर्शाते हुए धर्म-मार्ग पर चले जिज्ञासु को वनस्पति में विद्यमान जीवन की अनुभूति कराते हुए वनस्पति के संरक्षण और प्रभु के चिंतन तथा भक्ति-भावना को विकसित करने का गुरमति शाहमार्ग दर्शाते हैं।

भक्त कबीर जी कथन करते हैं कि मालिन हरेक पत्ती को तोड़ती है जबकि हरेक पत्ती में ही जीव अथवा जीवन की धारा चल रही है। जिस पत्थर अथवा पत्थर की मूर्ति की भेंटा करने के लिए मालिन हरेक जानदार पत्ती को तोड़ती है वह पत्थर बेजान है। इस प्रकार बेजान पत्थर की सेवा करती हुई मालिन वास्तविक मार्ग से परे चल रही है। मालिन को यह ज्ञान-अनुभूति नहीं कि वास्तविक पूजनीय तो सच्चा गुरु अथवा सच्चे गुरु का सच्चा उपदेश है।

भक्त जी कथन करते हैं कि हे मालिन! पत्ते ब्रह्म-रूप हैं, डाली विष्णु-रूप है और फूल शिव-रूप। सृजना का सत्कार करने को रास्ता दिखाते हुए कह रहे हैं कि मालिन इन तीन देवताओं को तो अपने सामने स्वयं खत्म कर रही है, फिर यह सेवा किसकी कर रही है? अर्थात् मनुष्य को सच्चे ज्ञान-मार्ग पर आना चाहिए न कि मात्र रस्मी पूजा-उपासना तक ही सीमित रहना।

भक्त जी फरमान करते हैं कि देखो तथा विचार करो कि मूर्ति बनाने वाले ने पत्थर में से यह मूर्ति तराशने हेतु इस पर पांव रखकर इस पत्थर को छांटा अथवा तोड़ा। यदि यह मूर्ति सच्ची अथवा जानदार होती तो क्या यह ऐसा अपमान करने वाले को खत्म न कर देती अर्थात् यह अवश्य ही प्रतिक्रिया या प्रतिकर्म दर्शाती। वस्तुतः जानदार जीव ही प्रतिक्रिया दर्शाते हैं न कि बेजान वस्तुएं।

चावल, दाल, लपसी तथा पंजीरी का तो पुजारी ही भोग लगाता है, मूर्ति को यह भेटा नहीं पहुंचती। खेद की बात है कि सारा संसार ही सच्चे प्रभु को भूला हुआ है। भक्त जी पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ कहते हैं कि हमें मालिक ने अपनी कृपा करके भूलने से बचा लिया है अथवा उसकी कृपा से हमको सही मार्ग पर चलने का भरोसा है। गुरमति मार्ग पर होने के कारण हमें भटक जाने की कोई आशंका नहीं है।





आओ! सातवें पातशाह द्वारा रोगियों की सेवा तथा वातावरण संरक्षण के महान सरोकारों को अपनायें।

हम सभी दस गुरु साहिबान के जीवन तथा व्यक्तित्व, उनके गुरगद्दी काल में हुए कार्यों तथा सिक्खी लहर के बहुआयामी विकास-विगास के बारे में परिचित होते हुए बहुप्रकारी लाभ लेने में सौभाग्यशाली हैं। वस्तुत: किसी अच्छे विचार, ख्याल का मन-मस्तिक में आना ही अच्छे सौभाग्य का संकेत होता है। जब हम उस विचार, ख्याल को किसी प्रकार के व्यवहारिक रूप में डालने की दिशा में क्रियाशील होते हैं तो यह और भी ऊंचे भाग्य होने का संकेत होता है। वस्तुत: हरेक गुरु-व्यक्तित्व ने इस दैवी ज्योति के प्रकाश से अपने-अपने गुरगद्दी काल में सिक्खी की रूहानी नैतिक उन्मुख एवं मानवतावादी लहर को युग अथवा समय की आवश्यकता के अनुसार विकास तथा विगास प्रदान किया। ये तीन आयाम सभी गुरु व्यक्तित्वों के मुख्य सरोकार रहे चूंकि ये गुरु नानक पातशाह द्वारा गहन चिंतन-मनन के उपरांत जन-कल्याण हेतु धारण किये गए सरोकार थे।

सातवें पातशाह जी के गुरगद्दी काल में सिक्खी लहर के विकास-विगास के रूबरू होने पर यह सच्चाई दिन के उजाले की भांति स्पष्ट रूप में उजागर होती देखी जा सकती है। हमारे माननीय लेखकों/लेखिकाओं ने विभिन्न स्रोतों का गहन तथा व्यापक अध्ययन-विश्लेषण करने के उपरांत सातवें गुरु जी के समूचे जीवन और विशेषत: उनके गुरु-काल में सिक्खी लहर के विकास-विगास पर भरपूर प्रकाश डाला है। हम अपने पाठकों से यह आशा करते हैं कि जहां वे गुरु जी के अद्वितीय जीवन-वृत्तांत, उनके लासानी व्यक्तित्व तथा जीवन-कृत्यों के बारे में पढ़कर स्वयं उनके जीवन, व्यक्तित्व और कृत्यों की जानकारी अपने मन-मस्तिष्क में बसाने का लाभ लें वहां वे यदि इस जानकारी को अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के साथ सांझी करें तो वो एक और भी अधिक सराहनीय बात होगी। इससे भी आगे गुरबाणी अथवा गुरु-जीवन, कृत्य, व्यक्तित्व मात्र पढ़ने-सुनने का ही सरोकार नहीं है। गुरु साहिबान पूर्णत: अमल तथा व्यवहार के पक्षधर रहे हैं, इसलिए उनकी बाणी अथवा उपदेशों को सुन-पढ़ कर कमाने का हम सभी को वास्तविक लाभ है।

गुरु जी कीरतपुर साहिब में गुरगद्दी पर विराजमान हुए। यहां गुरु जी ने एक बहुत बड़ा दवाखाना एवं शफाखाना खोला जिसमें दुर्लभ औषधियों को रखा। गुरु-घर में यह बीमार तथा दुखी मानवता की सेवा के निर्मल उद्देश्य की पूर्ति करता रहा। वस्तुत: गुरु पातशाह का हृदय अत्यंत कोमल था। आप जी दुखी तथा बीमार लोगों को सुखी तथा निरोग करने के लिए एक विह्वल भावना तथा संवेदना रखते थे।

सातवें पातशाह का कीरतपुर साहिब में स्थापित किया औषधालय सब प्रकार के रोगों के निवारण हेतु था। इसमें टेढ़े रोगों के उपचार की कैसी अच्छी व्यवस्था थी इसका आभास हम इसके बारे में मुगल बादशाह शाहजहां के सबसे बड़े तथा सबसे प्रिय पुत्र दाराशिकोह का सफल उपचार होने के हमारे लेखकों/लेखिकाओं द्वारा प्रस्तुत वृत्तांत से सहज-भाव ही होता किया जा

सकता है। इस उपचार में गुरु-घर का शाहों-कंगालों, अमीरों-गरीबों तथा मित्रों-दुश्मनों के साथ समदृष्टि वाला सद्व्यवहार बेमिसाल है। गुरु-घर की ऐसी उपचार-व्यवस्था को आज विश्व भर में सभी धर्म-स्थानों में यदि अपनाने की दिशा में गतिशील हुआ जाए तो यह मानवता के उस महान मसीहा गुरु पातशाह जी के प्रति हमारी सबसे अच्छी श्रद्धा-भावना की सूचक होगी।

सातवें पातशाह एक अद्वितीय वातावरण-संरक्षक तथा प्रेमी भी थे। गुरगद्दी पर विराजमान होने से पूर्व ही आप वनस्पति के साथ कितना प्यार करते थे इसका ऐतिहासिक उल्लेख हमें गुरु इतिहास के वृत्तांत में से प्राप्त होता है। कीरतपुर साहिब में एक बड़ी वाटिका गुरु पातशाह की इच्छा तथा हुक्म से साकार हुई जिसमें विभिन्न प्रकार के दुर्लभ पौधे लगाये गए जो वातावरण को शुद्ध करने तथा सुंदरता प्रदान करने में भरपूर योगदान डालते थे। गुरु पातशाह ने जीव-जंतुओं तथा पक्षियों को भी उनके अनुकूल वातावरण प्रदान किया।

आज तक वातावरण में बहुत बड़े बिगाड़ दृश्टव्य हो रहे हैं और हमारा चौगिर्दा बेहद पलीत हो रहा है। इस दिशा में भी हम गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों द्वारा विशेष प्रयत्न करने बनते हैं। हमको समानांतर रूप में अपने गुरुद्वारा साहिबान में और अपने चौगिर्दे में अधिक से अधिक वृक्ष तथा पौधे लगाकर दूषित हो रहे वातावरण को शीतलता, हरियाली तथा शुद्धता की ओर परिवर्तित करना चाहिए। गुरुद्वारा साहिबान में जिस प्रकार हम गुरु पातशाहों के समय के ऐतिहासिक वृक्षों की संभाल कर रहे हैं यह पहुंच-दृष्टि गुरु-घर के आंगन में लगे हुए अन्य वृक्षों के प्रति भी हो तो कितना अच्छा हो। यह व्यवस्था संगत के आराम तथा सुख-सुविधा के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती है और यह वो ढंग है जिससे हम सभी गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख गुरु पातशाह की खुशियों के पात्र बन सकते हैं, सही अर्थों में उनकी प्रसन्नता ले सकते हैं। गुरु-घरों में मात्र संगमरमर ही लगाये जाना और संगमरमर के आवश्यकता से अधिक मोह में पौधों-वृक्षों की कोई संभाल न करना या लहलहाते पौधों-पेड़ों को खत्म कर देना कदापि बुद्धिमता वाला कर्म नहीं जिसका हमको विश्लेषण करना चाहिए। वातावरण प्रेम और विशेषत: वृक्ष लगाने तथा उनकी संभाल करने हेतु जो उदाहरण खडूर साहिब वाले बाबा सेवा सिंघ जी ने प्रस्तुत किया है वो दूसरे धर्म-मार्ग अनुयाइयों को भी अपने सम्मुख रखकर चलना चाहिए। गुरुद्वारों से पौधों का प्रसाद देने की अच्छी परंपरा पहले ही आरंभ हो चुकी है, इसका अधिक से अधिक फैलाव होना चाहिए। देश भर में वृक्ष लगाने की मुहिम चलाए जाने की आवश्यकता है। गुरमति ज्ञान के पाठकों के लिए यह बात खुशी तथा संतुष्टि वाली हो सकती है कि उनकी पत्रिका के लिए लेख लिखने वाले कुछ लेखक भी इस दिशा में पहले ही अच्छे प्रयास कर रहे हैं।

जनाब हुसन-उल-चराग से प्राप्त विवरण के अनुसार वे एक संस्था का संगठन करके लाखों की संख्या में हरेक वर्ष वृक्ष लगा रहे हैं। यह जानकर बहुत संतुष्टि तथा गर्व महसूस हुआ। लेखक बेहद संवेदनशील होता है। यदि वह अमल तथा व्यवहार भी दर्शाये तो यह सोने पे सोहागे जैसी अच्छी बात होती है। यदि गुरमति ज्ञान के सभी लेखक और पाठक इस विशेषांक की संपूर्णता पर वातावरण संरक्षण की दिशा में चल सकें तो इस विशेषांक का प्रयोजन सफल हो जाएगा।



सलतनते-हफतम : पातशाही सातवीं श्री गुरु हरिराय साहिब

-जनाब हुसन-उल-चराग*

भाई नंद लाल जी ने गुरु-महिमा फारसी जुबां में की है। यह बात बड़े दुख से लिखी जा रही है कि भाई जी द्वारा लिखा इतना बड़ा गुरमति खजाना आम आदमी तक नहीं पहुंच पाया। इसका मुख्य कारण था कि जिस हालात में सिक्खों को अनंदपुर साहिब छोड़ना पड़ा वे ऐसे हालात थे कि गुरु-दरबार का खजाना व लेखकों के साहित्य को संभालना नामुमकिन था। जो संभालने की कोशिश की गई उसका बड़ा भाग सरसा नदी पार करते समय नष्ट हो गया। दूसरा, अनंदपुर साहिब से प्रस्थान के पश्चात वे तमाम कविगण एक जगह इकट्ठा न हो पाए। भाई नंद लाल जी भी वापिस मुलतान लौट गये और उनका देहांत हो जाने के पश्चात् उनकी रचनाएं यूं की यूं ही पड़ी रह गईं और प्रकाशित न हो पाईं। कुछ-एक सिक्ख विद्वानों के सिवाए आम सिक्ख को फारसी बोलनी या समझनी नहीं आती थी और न ही किसी ने भाई जी के महान कार्य का पंजाबी में तरजुमा ही किया। तीसरा, भाई नंद लाल जी द्वारा की गई गुरु-महिमा, न ही किसी ने फारसी जानने वालों में इसका प्रचार ही किया। कारण था कि फारसी जानने वाले लोग अधिकतर मुसलमान थे, इसलिये भाई जी के महान कार्य को पढ़ा तथा पहचाना नहीं जा सका और सिक्ख जगत इस बहुमूल्य खजाने से वंचित रहा।

बेशक इक्का-दुक्का कुछ लेखकों ने भाई नंद लाल जी के लेखन की तारीफ की, जैसे कि भाई संतोख सिंघ ने अपने ग्रंथ "सूरज प्रकाश" में की है। भाग्यवश भाई वीर सिंघ ने भाई नंद लाल जी की भूली-बिसरी लिखतों को सिक्ख जगत के समक्ष रखना शुरू किया। भाई नंद लाल जी की फारसी और पंजाबी कृतियों का संग्रह 'कुल्लीआत भाई नंद लाल गोया' बाबा मोहन सिंघ मलेशिया और स. जोगिंदर सिंघ द्वारा १९६३ में प्रकाशित कराया गया। गुरमुखी अक्षरों में इनका अनुवाद डॉ. गंडा सिंघ से संपादित कराकर पहली बार १९६८ ई में प्रकाशित किण जिसका तीसरा संस्करण २००० ई में प्रकाशित किये जाने की सूचना है। भाई साहिब ने बेशक सीधे रूप से गुरबाणी की व्याख्या नहीं की मगर उन्होंने गुरबाणी के असीमित विस्तार को जिस स्नेह एवं निर्मल भावावेश से बयान किया है वह बेमिसाल है। भाई जी की रचना जो फारसी में है, वह सिक्ख-मत तथा गुरबाणी के प्रभाव के फैलाव को नये अंदाज से पेश करती है।

सब सिक्ख भाइयों को याद रहे कि भाई नंद लाल जी ने श्री गुरु हरिराय साहिब की महिमा गायन करते हुए गुरु जी के नाम के साथ एक विशेष शब्द 'गुरू करता' का प्रयोग किया है, जो आम प्रयोग में नहीं है, जैसे :

हक परवर हक केश गुरू करता हरि राइ
सुलतान हम दरवेश गुरू करता हरि राइ।

सबसे पहले हम सिलसिलेवार सलतनते-हफतम की भाई नंद लाल जी द्वारा की गई गुरु-महिमा शुरू करते हैं और बीच में जहां गुरु

*१४-सी, रेस कोर्स रोड, श्री अमृतसर, मो : ९८१५१८८८१०

जी के नाम से पहले 'गुरू करता हरि राइ' आया है वहां पर इस विशेषण का अर्थ तथा भावार्थ करेंगे।

सलतनते हफ्तमश अज हफ्त व नूहु बरतरीं
व सद हजारां सुबअ व तिसआं खाक नशीं।

सातवीं पातशाही गुरु नानक साहिब की ज्योति-प्रकाश की नौ परतों, जिसमें सात आसमान एक अरश, एक कुरस, जिन्हें मिलाकर नौ हुए (ये आंकड़े इसलामी हैं), इन तमाम क्षेत्रों और इनके अलावा सद मतलब १००, हजारों, जिसका अर्थ हुआ १०,०,००० भाव लाखों, जैसे हम एक लाख को अंग्रेजी में कहते हैं 'हंडरेड थाऊजैंड', उसी तरह फारसी में कहा गया है 'सद हजार'। इसका भाव यह हुआ कि लाखों खंडों और उनके लाखों निवासी गुरु जी की ताबिआ (हजूरी) में हैं यानी कि गुरु जी का प्रभाव पूरी सृष्टि पर फैला हुआ है। भाई साहिब का जन्म गजनी (अफगानिस्तान) में हुआ और शिक्षा अरबी-फारसी में हुई, इसलिये वे उदाहरणें अधिकतर इसलामी पृष्ठभूमि से देते हैं।

अलवी अनि कुदसी बसतह कमर बर दरश
व कुदसी आंने उलवी चाकरे फरमा बरश।

यह बात गौर करने की है कि गुरु जी की महिमा गाते हुए भाई साहिब कह रहे हैं कि बड़े से बड़े और अच्छे से अच्छे लोग जिसका यहां पर मतलब है भद्र पुरुष, साधू-संत के रूप में तथा औलीआ, प्रभु-भक्ति में लीन गण, देवी-देवते, फरिश्ते सब गुरु जी के प्रभाव अधीन हैं और कमर बांधे तैयार-बर-तैयार (बर दरश) दर-दरवाजे पर ताबिआ में खड़े हुक्म के इंतजार में हैं। As John Milton says :

His state is kingly, thousands at his binding speed And post over Land and ocean, without Rest . . . stand and wait.

अज हम गुसल कमंदे मरग व हलाक
व मलकल मौते सहिमनाक अज अजतमश सीनह चाक।

गुरु जी का प्रभाव मौत के फंदे को भी तोड़ देने वाला है और (मलकल मौते) यमराज मृत्यु के फरिश्ते का सीना गुरु जी की उपमा सुनकर फट जाता है यानी कि यमराज भी बेअसर हो जाता है।

तखत नशीने सलतनते बे जवाल
व मकबूले दरगाहे वाहिबुल मुतअल।

गुरु जी सलतनत-ए-बे जवाल-अबिनासी तख्त पर सुशोभित हैं जो खुदावंद-करीम-निरंकार करता पुरख की दरगाह (धुर मूल) में से कबूल किये गये यानी कि गुरु जी अकाल पुरख द्वारा परवान किये हुए 'गुरु' हैं।

मुन अमुल फजाल खुद तालबश
व बर कदर व कुदरत दसतगाह गालबश।

गुरु जी को गुरिआई बखशने वाला प्रभु यानी कि गुरिआई के काम करवाने वाला खुद अकाल पुरख है। गुरु जी के साथ रहकर अकाल पुरख स्वयं कार्य करवाता है जिस कारण सृष्टि की सभी कदरें-कीमतें (गुण) तथा कुदरत संसार-रचना पर गुरु जी का प्रभाव छाया हुआ है।

अज नामे फरुखश काफे ताजी करामते करोबीआ
व राए हक गराईश रिआहे कदूसीआ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कुछ एक दरबार कवियों द्वारा श्री गुरु हरिराय साहिब को 'गुरू करता हरि राइ' लिखकर संबोधित किया है, जिसका जिक्र शुरू में ही लिख देना चाहता था मगर जैसे भाई नंद लाल जी ने गुरु-नाम अक्षरों को बयान किया है, मैंने भी उसी परंपरा के मुताबिक चलते हुए गुरु जी के नाम में आये अक्षरों की व्याख्या पेश कर दी है। "अज नामे

फरुखश काफे" यानी कि जैसे हम हिंदी-पंजाबी (गुरमुखी अक्षरों) में शब्द 'करता' को अक्षर 'क' से आरंभ करते हैं, उसे फारसी-उर्दू में लफ्ज (अक्षर) काफ से शुरू करते हैं, जो खुदा (अकाल पुरख) की उपमा में कहे जाने वाले शब्द 'कादर-करीम' हैं। 'कादर' 'करता' है- करने वाला है, जिसको हम गुरबाणी में यूं समझेंगे, जैसे ੧ੳ वाहिगुरु अपने हुक्म से सृजना करता है वही ੧ੳ वाहिगुरु करता पुरख हो जाता है। इसी को इसलाम में कादर कहा गया है। ईसाई मत में ईश्वर द्वारा एक के बाद एक, सात दिनों यानी कि सात स्तरों में सृष्टि-उत्पत्ति (रचना) बयान की गई है। वही ईश्वर, कादर, करने वाला (रचनहार) करता पुरख है। करीम वह स्थिति है जब कादर (करता) उत्पत्ति मुकम्मल कर चुका होता है। विज्ञान इसका यूं विश्लेषण करता है कि प्रकृति में भिन्न-भिन्न मौजूद तत्व जब प्राकृतिक परिस्थितियों में अनुपातानुसार नमी, ताप आदि आपस में मेल खाते हैं तो नये पदार्थ की रचना हो जाती है, जैसे आक्सीजन तथा हाईड्रोजन २:१ के अनुपात के अनुसार खास ऊंचे तापमान पर मिलते हैं तो पानी की रचना हो जाती है। यह प्राकृतिक क्रिया भी करता-करतार, कादर-करीम है, जो प्रकृति की ऊर्जाओं के मिलाप से संसार रचना होती चली आ रही है।

'करता' शब्द का दूसरा शब्द 'रे' जो भारतीय भाषाओं में 'र' है। 'रे' (र) से रहमत। रहमत (बख्शिश) तब होती है जब अच्छाई का काम किया जाता है। गुरु जी के नाम 'करता' में आई 'रे' (र) हक-अच्छाई पैदा करने की प्रेरणा देने वाली अलाही फरिश्तों की सी महक लिये हुए है।

ताए बा अलफे ओ ताब देह पंजहए तहमतनांने फलक जोर
व हाए बा-राइश हजीमत अफगने फलक हैबताने सलह शोर।

'करता' के लफ्ज 'ते' (त) के साथ फारसी का अलफ यानी कि हिंदी अक्षर 'त' के साथ 'आ' की मात्रा जुड़ी हुई होने से भावार्थ है आसमानी कूवत (ईश्वरीय शक्ति), (फलक जोर) यानी कि दैवी ताकत के बहादुर आदमी जैसे रुस्तम, सहिराब, बहिमन आदि हुए हैं, उनके (ताब देह पंजहए) हाथों-उंगलियों की ताकत भी गुरु जी के समक्ष टूट जाती है क्योंकि यह ताकत तो उनको गुरु जी द्वारा अकाल पुरख की कृपा से प्राप्त होती है।

और गुरु जी के नाम में आई 'हे' जो 'रे' (र) से (व हाए बा-राइश) हरि-फरिश्तों और जोरावरों की ताकत रखने वालों को भी पस्त कर सकती है।

राए बा-अलफश रा अशर बरगजी राम
व ये आखिर यावरे खासो आम।

गुरु जी के नाम में 'हरि' के उपरांत 'राय' (राइ) शब्द में आए पहले अक्षर 'रे' (र) (राए बा-अलफश) के साथ 'आ' की मात्रा मिली हुई है, जैसे फारसी में 'रे' के साथ लफ्ज 'अलफ' लगा हुआ है। (बरगजी राम) इसे समझने के लिये हम एक उदाहरण का सहारा लेते हैं, जैसे कि शहंशाहों के शहंशाह, सम्राट, महाराज आदि जिसका अर्थ होता है जो 'शाहों' का 'शाह' है, राजाओं का राजा है, राजाओं में 'महाराज' है आदि। राजा अपनी प्रजा पर राज करता है, उनके लिये कानून बनाता है, उनसे 'कर' वसूल करता है, मगर 'शाहों' का 'शहंशाह' शाहों से, महाराजाओं से, राजाओं से कर वसूलते हैं, अपनी प्रभु-सत्ता मनवाते हैं। सम्राटों और महाराजाओं के राज्यों का सीमा-क्षेत्र होता है

मगर गुरु जी की शहंशाही (पातशाही) असीमित है। दैवी शक्तियों की सीमा नहीं होती। गुरु जी अकाल पुरख की ज्योति हैं और अकाल पुरख असीमित है। न ही उसका आदि है और न ही उसका अंत है। इसी लिये गुरु जी सीमाबद्ध नहीं बल्कि दोनों जहां (लोक-परलोक) के पातशाह हैं और गुरु जी के नाम में आए आखिरी अक्षर 'ये' (ए) है (यावरे खासों आम) और इस 'ये' का मतलब है खास और आम यानी कि संसार के तमाम बड़े-छोटे लोगों के लिये गुरु जी सहायक हैं।

वाहिगुरु जीओ सत = अकाल पुरख का नाम सत्य है।

हक परवर हक केश गुरू करता हरि राइ
सुलतान हम दरवेश गुरू करता हरि राइ।८७।
(गंजनामा)

'गुरू करता हरि राइ' हक, सच्चाई, असलियत तथा इंसाफ के (परवर) पालक और उसे स्थापित करने वाले हैं (सुलतान हम दरवेश)। वह सुलतान (पातशाह) भी है और फकीर (दरवेश) भी।

फ़याजुल दारैन गुरू करता हरि राइ
सरवरि कौनन गुरू करता हरि राइ।८८।

फयाजुल दारैन--दोनों जहां (लोक-परलोक) पर गुरु जी की कृपा है और 'गुरू करता हरि राइ' जी जीवन काल में और सदैव काल के लिए जीव-आत्माओं के (सरवरि) सरदार हैं।

हक वासफ़ि अकराम गुरू करता हरि राइ
खासां हमा बर काम गुरू करता हरि राइ।८९।

यहां पर 'हक' का मतलब है 'रब'। 'गुरू करता हरि राइ' (वासफि अकराम) न्यायमूर्ति व इंसाफदाता होते हुए उपहार देने व कृपा-दृष्टि रखने वाले हैं। 'खासां हमा' यानी कि जो लोग खासमखास यानी कि विशेष लोग हो जाने में सफल हो गये हैं वे भी वैसे गुरु-कृपा से हुए हैं।

शहनशाहि हक्क नसक गुरू करता हरि राइ
फ़रमा-दिहे नहु तबक गुरू करता हरि राइ।९०।

'गुरू करता हरि राइ' (हक नसक) संसार में हक-हलाल (दसां नोहां दी कमाई) खुद दसती काम करके कमाई रोजी-रोटी के हक में तथा न्याय-इंसाफ की स्थापना करने वाले पातशाह हैं। 'फरमा-दिहे नहु तबक' सृष्टि के नौ तबकों पर गुरु जी का फरमान (हुक्म) चलता है यानी कि गुरु जी का फरमान सीमाबद्ध तथा कालबद्ध नहीं है।

गरदन-ज़नि सरकशां गुरू करता हरि राइ
यारि मुतजर्रआं गुरू करता हरि राइ।९१।

'गरदन-जनि सरकशां' अहंकारी और मनमुख लोगों को 'गुरू करता हरि राइ' फना (खत्म) करने वाले हैं। यहां पर 'गरदन-जनि सरकशां' से भाव है कि जो आदमी मनमुखी व अहंकारी है उनका सरकश (सर काटना ही नहीं) बल्कि सर (जिह्न-मस्तिष्क) को बदल गुरमुख कर देना है। आज़िज बेसहारा लोगों (यारि-मुतजर्रआं) के वे सहायक हैं। यहां मैं सिर्फ इतना कहता चलूं कि आदमी सर (मस्तिष्क) से जो सोच-विधि बनाता है, तजवीजें पेश करता है, उनकी सोची बनाई तजवीजें खतरनाक होती हैं। ऐसे व्यक्ति की सोच का सुधार करने की क्षमता गुरु जी के पास है।





"तारीख-ए-पंजाब" कृत बूटेशाह में श्री गुरु हरिराय साहिब

*-डॉ. जगजीत कौर**

गुरु-परंपरा के सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब को लगभग सभी इतिहासकार एकमत से अत्यंत शांत, सहज, स्थिर, बौद्धिक शक्ति के पुंज तथा गहन आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत मानते हैं। 'छठम पीर', 'दलिभंजन', 'शौर्य-शक्ति' के पुंज श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अपने गुरु-काल में सिक्खों को मुगल सत्ता के साथ न चाहते हुए भी चार युद्ध करने पड़े, परंतु अकाल पुरख की असीम कृपा और गुरु साहिब की कुशल व प्रवीण युद्ध-योजना से खालसे को विजय प्राप्त हुई। इन हालात में शासन सत्ता से टकराव की स्थिति तो बनी ही रही। ऐसे में श्री गुरु हरिराय साहिब जैसे गहन, गंभीर चिंतक, साधु-स्वभाव, चेतना-शक्ति की वजह से पंथ को विकासोन्मुख दिशा-निर्देश प्राप्त होता रहा, धीरमल आदि घरेलू विरोधियों और वाह्य सत्तात्मक दुश्मनों के बावजूद सिक्ख पंथ शांत, सहज वातावरण में पनपता रहा। श्री गुरु हरिराय साहिब स्वयं शांत वातावरण-प्रिय थे, दूसरों की किंचित मात्र पीड़ा व कष्ट से विचलित हो उठते थे, अत्यंत उदारता से सबके दुख हरण करते और सबकी इच्छा पूरी करते। इसी लिए तो स. रतन सिंघ (भंगू) "प्राचीन पंथ प्रकाश" में कहते हैं :

फिर हरि राइ औ हरिक्रिशन भए तिमै गुरदेव।
इछै पूरैं सिखन की सिख करैं गुर सेव।६।

"गुर बिलास पातशाही दसवीं" के रचयिता भाई कुइर सिंघ कहते हैं कि श्री गुरु हरिराय साहिब ने लोक-कल्याण के लिए इतने कार्य किए कि आज तक संसार में प्रत्यक्ष हो रहे हैं :

गुर हरिराइ करै कलयाना।
धरा धरम जग नाम विताना।

ऐसे कल्याणकारी गुरदेव का जीवन बूटेशाह (गुलाम मुहीउद्दीन) ने "तारीख-ए-पंजाब" में अत्यंत श्रद्धा सहित चित्रित किया है। सिक्ख धर्म व इतिहास पर लिखा गया यह लगभग पहला विवरण है जो "महान कोश" के रचयिता भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार अंग्रेजों द्वारा लिखवाया गया है। सर डेविड आक्टरलोनी की प्रेरणा से कैप्टन मरी ने मौलवी बूटेशाह को सिक्खों का इतिहास बताने को कहा। मौलवी बूटेशाह कप्तान मरी का पेशकार था। कैप्टन मरी ईस्ट इंडिया कंपनी की फौज का डाक्टर था और लुधियाना में था। डेविड आक्टरलोनी अंबाला और लुधियाना का राजनीतिक प्रतिनिधि था जो दिल्ली के नेतृत्व में था। इसने "महाराजा रणजीत सिंघ" नामक पुस्तक भी लिखी थी। कैप्टन मरी को महाराजा रणजीत सिंघ के बीमार होने पर सन् १८२६ ई. में लाहौर बुला लिया गया, जहां यह दिसंबर १८२६ से मार्च १८२७ तक रहा। समय-समय पर यह पंजाब के हालात और महाराजा से सम्बंधित पत्र कंपनी को भेजता रहता था जो बाद में 'Punjab as a sovereign state' में छपते रहे जो पढ़ने लायक हैं। "पंथ प्रकाश" में भी इसका जिक्र है- *"मरे साहिब तिह कहयो बखान।"* मौलवी बूटेशाह

**1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur (U.P.)-247001, Mob. : 92197-87756*

ने मरी को जो लिखवाया स. रतन सिंघ (भंगू) को ऐसा लगा कि यह मौलवी सिक्खों का ठीक इतिहास क्या बताएगा, इसलिए उन्होंने स्वयं कैप्टन मरी को सिक्ख इतिहास नोट करवाया जो बाद में "प्राचीन पंथ प्रकाश" के नाम से सामने आया। स. रतन सिंघ (भंगू) से कैप्टन मरी ने लुधियाना के मुकाम पर संवत् १८६६ में जो विवरण लिखवाया वही छंदोबद्ध करके बाद में सिक्खों के लिए संवत् १८९८ में "श्री गुरू पंथ प्रकाश" ग्रंथ के रूप में स. रतन सिंघ (भंगू) ने प्रस्तुत किया। स. रतन सिंघ (भंगू) शहीदों के परिवार से थे। आप सरदार महिताब सिंघ मीरांकोटीए के पौत्र तथा स. शाम सिंघ करोड़ीए के नाती थे। स. रतन सिंघ (भंगू) का देहांत संवत् १९०३ (सन् १८४६) में हुआ। इनकी संतान तहसील समराला के भड़ी गांव में रहती है। स. रतन सिंघ (भंगू) के "पंथ प्रकाश" में कुछ प्रसंग छूट गए थे, जिन्हें पूरा करने के लिए, उसमें और प्रसंग जोड़कर तथा शास्त्रीय नियमानुसार छंदोबद्ध करके लौंगोवाल निवासी ज्ञानी गिआन सिंघ ने संवत् १९२४ में नये "पंथ प्रकाश" की रचना की।

इस प्राकर, यद्यपि मौलवी बूटेशाह कई महत्वपूर्ण तथ्य, जो "पंथ प्रकाश" के अनुसार *"बूटेशाह ने गल कही नहीं सारी"* हैं, फिर भी उसने कई पूर्णत: निष्पक्ष नवीन तथ्य प्रस्तुत किए हैं और जहां वह तथ्यों की तोड़-मरोड़ करता है वहां साथ ही साथ स्पष्ट करता जाता है कि सिक्खों में इस तरह से यह रिवायत प्रचलित है। बूटेशाह के विवरण की महत्ता इस दृष्टि से है कि इसमें अनेक नीवन तथ्यों को उजागर किया गया है।

श्री गुरु हरिराय साहिब का जीनव-विवरण प्रस्तुत करते हुए वह लिखता है कि गुरु जी का प्रकाश १३ माघ, संवत् १६८६ (जनवरी ३०, १६३० ई), वृहस्पतिवार माता दया कौर (राज कौर) की कोख से बाबा गुरदित्ता जी के घर कीरतपुर में हुआ।

श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी का दायित्व श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने स्वयं सौंपा। गुरगद्दी पर विराजमान होते ही निकट व दूर-दराज से संगत बहुमूल्य भेंट लेकर हाजिर हुई। उनकी चारों ओर प्रसिद्धि फैल गई और उन्होंने अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समान ही उदारता और शूरवीरता की कीर्ति प्राप्त की : *"मानद पितर कलां खुद दर शुजाअत व सखावत मशहूरी याफत।"*

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच सपुत्र और एक सपुत्री थी। बड़ा बेटा बाबा गुरदित्ता जी, दूसरे बाबा सूरजमल जी, तीसरे बाबा अणीराय जी, चौथे पुत्र बाबा अटल राय जी और पांचवें श्री (गुरु) तेग बहादर जी। बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अटल राय जी और बाबा अणीराय जी का देहांत गुरु साहिब के समय में ही हो गया था। बाबा गुरदित्ता जी के दो पुत्र थे--बड़ा धीरमल और छोटे श्री (गुरु) हरिराय साहिब जी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री (गुरु) हरिराय साहिब को योग्य जानकर गुरगद्दी सौंपी। उस समय कहा गया कि यह अजब न्याय है कि जो हक बेटे का होता है उसे छोड़कर वह अधिकार पौत्र को दिया जाये : *"अजब अदल व इंसाफ असत कि गुरु साहिब हक मसतहक न रा कि फरजांदानि बाशंद अश दसत दादह मसनद खिलाफ ब पौतर बखशीद।"*

जब माता नानकी जी ने अपने पुत्र श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब के अधिकार की बात की तो गुरु साहिब ने उन्हें यह कह कर शांत कर दिया कि समय आने पर तुम्हारे जैसी

सत्यवंती मां का पुत्र ही गुरुता के दायित्व को संभालेगा। उस समय गुरु जी ने अपने सभी शस्त्र, तलवार, ढाल आदि मंगवा कर माता नानकी जी को दे दिए कि जब पुत्र को गुरगद्दी मिले तो ये सब उन्हें दे दें। समय आने पर भाग्य सहायक बने, अरदास को फल लगा : *"शुकरे खुदा कि अज मदद बखत कार साज बर मिकतहाई हमत खुद कामरान शदामे।"*

श्री गुरु हरिराय साहिब अधिकांश समय कीरतपुर साहिब ही रहते। यहीं संगत अत्यंत उत्साह के साथ गुरु जी के दर्शन को आती। गुरु जी का अत्यंत उदार स्वभाव और अनेकों गुणों के स्वामी आदि अनेक विशेषताएं सुन-सुनकर श्रद्धालु भक्ति-भाव से दर्शन करने आते और उनके अनेकों श्रद्धालु सिक्ख बने। ऐसे में ही भाई फेरू जी थे जो घूम-घूम कर फिरते हुए घी आदि सौदे का व्यापार करते थे। वे गुरु जी के दर्शन करने आए और अपनी सारी पूंजी सहित अपना सर्वस्व गुरु-चरणों पर समर्पित कर दिया। वे इतनी लगन और निष्ठा से सेवा करते कि गुरु साहिब ने इसे 'सुची दाहड़ी' सदैव सत्य और ईमादार रहने का वरदान दिया। अंत तक ये प्रभु-नाम-सिमरन तथा भक्ति में लीन रहे और दूर-दूर तक विचरण कर गुरमति का प्रचार करते रहे।

इसी तरह भाई सुथरा जी थे जो हमेशा सच्ची बात कहते। उनके मन में जो बात होती उसे निर्भय होकर कह दिया करते--*"बे महाबा बर जबान मी आवुरद।"* गुरु जी ने खुश होकर इसे 'सुथरा' नाम बख्शा। एक अन्य बठिंडा (मालवा) के भाई भगतू जी थे जिन्होंने गुरु-घर को अपनी सेवाएं अर्पित कीं। गुरु जी ने इन पर बख्शिश की। इन्हें 'भाई जी' खिताब से निवाजा। इनका कई पीढ़ियों तक वंश चला जो सब के सब गुरु-घर को समर्पित रहे।

गुरु जी के प्रति अनन्य भक्ति-भावना और श्रद्धा-भावना रखने वाले भी कई श्रद्धालु हुए। जब गुरु जी डरोली के निकट पहुंचे तो दो अनन्य सेवक भाई परमा और भाई सरमा लकड़ी का काम करने वाले (बढ़ई) दो भाइयों ने अजीब प्रेमाभक्ति का कौतुक किया। उन्होंने पेड़ के साथ पानी का एक छोटा घड़ा लटका दिया। लकड़ी काटते हुए जब उन्हें प्यास लगी तो वे घड़े के पास गए, देखा पानी बहुत ठंडा था, मन में प्रेम उमड़ा। इतना ठंडा पानी तो पहले गुरु जी को पिलाना चाहिए। गुरु जी पास में ही तो आए हुए हैं। इधर जरूर आएंगे, तब उन्हें जल पिलाने के बाद जल पीएंगे, तब तक चाहे प्यास के हमारे प्राण ही निकल जायें, प्यास कितना ही गलबा डाल ले : 'गलबा अतश'। ऐसा प्रण कर लिया। अंतरयामी गुरदेव घोड़े को रफ्तार से चलाते हुए वहां पहुंचे। श्रद्धालुओं से पानी मांगा। घड़े का ठंडा पानी पीया। गुरु जी ने प्रेम सहित उन्हें आशीर्वाद दिया। दोनों को 'भाई' खिताब दिया। दोनों भाई परम सिंघ और भाई धरम सिंघ प्रसिद्ध हुए। गुरु जी के कहने पर उन्होंने 'रूपा' स्थान आबाद किया। गुरु जी ने उन्हें हमेशा दिन-रात लंगर जारी रखने की सेवा बख्शी :

खिदमत अजराई लंगर बा जिह मरहमत फरमूंद।

शाहजहां के राज्य-काल के समय सब कुछ शांत-भाव से चलता रहा। इसके बाद दाराशिकोह और औरंगजेब में संघर्ष चला। श्री गुरु हरिराय साहिब ने दाराशिकोह की मदद के लिए अपने कुछ सिंघ सैनिक भी भेजे थे। दाराशिकोह मारा गया और औरंगजेब बादशाह बना। दिल ही दिल वह गुरु साहिब से वैर रखता था, अतः उसने गुरु साहिब को दिल्ली बुलवा भेजा। हुक्म

में उसने लिख भेजा कि गुरु जी यदि करामात दिखलाने का दावा करते हैं और राज्य करने की व देश जीतने की इच्छा रखते हैं तो हाजिर हों और करामात दिखलाएं :

ब दाअवा करामात दम मीजंद व हवाइ सलतनत व मुलकगीरी दर सर मीदाद।

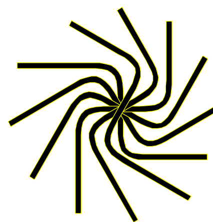
गुरु साहिब खुद तो नहीं गए परंतु अपने बड़े पुत्र रामराय को जाने को कहा और उसे समझा दिया कि वह कोई करामात न दिखाए, क्योंकि गुरु-घर न तो करामात दिखाता है और न ही राज्य करने व देश जीतने की इच्छा रखता है। रामराय अत्यंत चतुर बुद्धि का था। गुरु साहिब ने उसे समझाया था कि करामात दिखाना फकीरी धर्म में ठीक नहीं है :

इजहारे करामात दर मज़हब फुकरा मुसतहसन नेसत।

दिल्ली पहुंचकर रामराय ने पहले तो औरंगजेब के दरबार में उसके हर जिज्ञासापूर्ण प्रश्न का कुशाग्रता से उत्तर दिया और उसकी तसल्ली की। रामराय का उसने पूर्ण सम्मान किया। उसे अपने निकट चंदन की चौकी पर बैठाया और उसे खिलअत भी दी। कुछ दिन बाद उसने करामातें दिखानी शुरू कर दीं। दोनों में खूब मित्रता हो गई। एक दिन औरंगजेब ने पूछा कि श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब और रामराय में से गुरु जी किसे गुरगद्दी पर बैठाना चाहते हैं तो उसने उत्तर दिया कि गुरु साहिब खुद मालिक और मुखतिआर हैं, जिसे चाहें निवाजें : *"गुरु साहिब मालिक मुखतिआर अंद हर कस रा कि ख्वाहंद बनिवाजंद।"*

बूटेशाह बताता है कि रामराय के अंदर गुरगद्दी-प्राप्ति की ख्वाहिश जाग उठी। उसे लगा कि यदि बादशाह सिफारिश के तौर पर इशारा कर दे तो पूरा यकीन है कि गुरु साहिब गुरगद्दी अवश्य उसे ही देंगे। उसने बादशाह को खुश करने के लिए गुरबाणी के अर्थ भी बदल दिए और कई तरह की करामातें दिखाकर बादशाह को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। फिर उससे गुरगद्दी-प्राप्ति के लिए सिफारशी-पत्र भी ले लिया। इस पर श्री गुरु हरिराय साहिब ने निर्णय लिया कि अब तो गुरगद्दी छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को ही दी जायेगी। रामराय यह कैसे भूल गया कि गुरगद्दी सिफारिश से नहीं बल्कि कठिन घाल-कमाई से मिलती है और फिर गुरबाणी के अर्थ उलटाना तो जघन्य अपराध है! गुरु साहिब ने फैसला लिया कि श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब, जिन्होंने इबादत और घाल (रिआजत) में जीवन लगा रखा है वे ही इस गौरवपूर्ण पद के अधिकारी हैं। रामराय रोता-चीखता औरंगजेब के पास गया। उसने देहरादून के इलाके में सात गांव की जागीर देकर एक शानदार इमारत बनवा दी और एक संगमरमर का आलीशान तख्त बनवाकर उसे उस पर बैठा दिया। सारे जग में यह जाहिर हो गया कि गुरु-घर किसी का मतीअ नहीं है और शाही मदद व सिफारिश से तख्त पर बैठने वालों को मुंह भी नहीं लगाता।

कार्तिक वदी नवमी संवत् १७१८ (१६६१ ई) को अक्तूबर मास में श्री गुरु हरिराय साहिब कीरतपुर में परम ज्योति में विलीन हो गए। 



"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" कृत भाई संतोख सिंघ में श्री गुरु हरिराय साहिब - जीवन एवं व्यक्तित्व

*-स. कुलदीप सिंघ**

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में प्रथम रास से आठवीं रास तक श्री गुरु अंगद देव जी से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जीवन तक का चित्रण प्रस्तुत करते हुए गुरु साहिबान द्वारा जन-जागृति की प्रथम लहर का समग्र रूप दर्शाया गया है। जन-जागृति के इस उत्थान के आरंभ में श्री गुरु अंगद देव जी से श्री गुरु अरजन देव जी तक की भूमिका *"तेरा कीआ मीठा लागै"* के संदर्भ में शांतमयी प्रतिक्रिया के रूप में थी, जिसका अवसान गुरु जी की शहादत के रूप में हुआ। "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" के पूरबार्द्ध में धर्म और सत्याग्रह के विरुद्ध दी गई चुनौती को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा स्वीकार करने और निर्भय होकर जूझने का विस्तार से वर्णन है।

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" की रास ९ में श्री गुरु हरिराय साहिब की जीवन-गाथा का मुख्य भाग दिया गया है। इसके इष्ट मंगल में परमात्मा के लिए 'हरि राइआ' शब्द का प्रयोग किया गया है जो ध्वनि-अर्थ से श्री गुरु हरिराय साहिब के लिए भी सार्थक है। श्री गुरु हरिराय साहिब की जीवन-गाथा रास १० के पूरबार्द्ध में अध्याय २७ में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी देने पर समाप्त होती है। श्री गुरु हरिराय साहिब के प्रकाश का तथा दसतारबंदी, गुरगद्दी सम्बंधी उल्लेख श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जीवन संदर्भ में क्रमश: रास ७ व रास ८ में है।

श्री गुरु हरिराय साहिब के प्रकाश के विषय में भाई संतोख सिंघ ने उल्लेख किया है कि बाबा गुरदित्ता जी ने कीरतपुर नगर बसाया और वहां अपनी पत्नी नती (निहाल कौर) के साथ निवास किया। कीरतपुर साहिब में श्री (गुरु) हरिराय साहिब का जन्म हुआ। जब श्री (गुरु) हरिराय साहिब की आयु मात्र ३ वर्ष थी तभी बाबा गुरदित्ता जी परलोक गमन कर गए। बाबा गुरदित्ता जी के देहांत के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बाबा बुड्ढा जी के पुत्र भाई भाना जी से श्री (गुरु) हरिराय साहिब की दसतारबंदी कराई :

भाना अधिक प्रेम रस पाग्या।
उठति भयो ले प्रभु की आग्या।
स्री हरिराइ सीस दसतार।
करी बंधावन हाथ उभारि ॥२९॥
सतिगुर निज कर संग सुधारति।
नभ महिं जैजैकार उचारति।
स्री गुर अमरदास की अंसु।
दई पाग सुंदर अवितंश ॥३०॥ . . .
अदभुत शोभा पाइ रहे हैं।
गुरता पद जनु आज लहे हैं।
औचक सभिनि रिदै फुरि आई।
जानी परै पाइ गुरिआई ॥३५॥ (रास ८/४१)

ग्यारह वर्ष बाद जब श्री (गुरु) हरिराय साहिब की उम्र १४ वर्ष थी तब श्री (गुरु) हरिराय साहिब गुरगद्दी पर विराजमान हुए। सभी ने खुशी मनायी :

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६, फोन : ०५३२-२६५७९६९*

सभिहिनि गुर की आगआ माने।
स्री हरिराइ गुरू सम जाने।
ततछिन जोति दिपी अधिकाई।
बदन सदन दुति रहयो सुहाई ॥३१॥ (रास ८/५३)

श्री (गुरु) हरिराय साहिब को शिक्षा और शस्त्र-विद्या देकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने परलोक गमन किया।

गुरगद्दी के बाद की श्री गुरु हरिराय साहिब की जीवन-गाथा रास ९ के ६० अध्यायों में है। इस रास का मुख्य भाग गुरु जी के जीवन के अतिरिक्त तत्कालीन शासकीय तंत्र तथा धार्मिक कट्टरता पर केंद्रित है। श्री गुरु हरिराय साहिब का भक्त-वत्सल रूप आरंभिक घटनाओं में दिया गया है। गुरु जी ने शिकार के समय वन में कई दिनों से प्रतीक्षा कर रही वृद्धा के द्वारा तैयार भोजन को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। दूर स्थित सिक्खों की भक्ति-भावना भी गुरु जी को भावविभोर कर देती थी।

श्री गुरु हरिराय साहिब के भक्त-वत्सल और आध्यात्मिक प्रौढ़ता के प्रसंगों के बाद शाहजहां के उत्तराधिकारी के विवाद का प्रसंग १२ अध्यायों में वर्णित है। दाराशिकोह को गुरु जी द्वारा दी गई चिकित्सा से लाभ हुआ था। दाराशिकोह से गुरु जी की भेंट गोइंदवाल में हुई। उसने गुरु जी से आत्मोपदेश हेतु निवेदन किया:

यांते लालस अहै हमारी।
प्रापति होवहि क्रिपा तुमारी। . . . ३४॥ (रास ९/१६)

श्री गुरु हरिराय साहिब ने दाराशिकोह को आत्म-ज्ञान का उपदेश दिया :

यांते सुनीअहि दारशकोह!
सतिनाम को प्रेमी होहु।
सिमरन की सहाइता पाइ।
निशचा निज सरूप टिक जाइ ॥३३॥
सनै सनै तन हंता त्यागहु।
नाशवंत लखि नहिं अनुरागहु।
भाणा प्रभु का लागहि मीठा।
देखहु सति सरूप अडीठा ॥३४॥
आदि अंत जो वसतू नांही।
मध कुतो साची ठहिराही।
तन रिखीक अंतहिकरण परै।
सो सरूप तव निशचा धरै ॥३५॥ (रास ९/१७)

हे दाराशिकोह! 'सतिनाम' प्रभु का वास्तविक नाम है। सत्य-स्वरूप प्रभु को स्मरण की सहायता से पहचानो और आत्म-स्वरूप में अपने निश्चय को दृढ़ करो। भौतिक शरीर के अहंकार को धीरे-धीरे हटाओ और देह को क्षणभंगुर मान कर आसक्ति से रहित हो जावो। अदृष्ट प्रभु के सत्य-स्वरूप देखने से प्रभु का विधान मीठा लगता है। यह शरीर न आदि में था और न अंत में रहेगा। इस मध्य अवस्था में शरीर की स्थिति आत्मा के परदे के रूप में है, उसे सत्य कैसे कह सकते हैं? जो स्वरूप तन-इंद्रियों और अंत:करणों से परे है उस स्वरूप में निश्चय करो।

दाराशिकोह गुरु जी से विदा हुआ। उसने धर्मों के सम्बंध को पहचाना। दारा को औरंगजेब की मजहबी और कट्टरता वालों की बदनीयती का शिकार होना पड़ा। दाराशिकोह को दिल्ली लाकर कत्ल किया गया। औरंगजेब ने मथुरा, जयपुर, पुष्कर, अजमेर और काशी के मंदिरों को गिराने का अभियान छोड़ा, जिसका विस्तृत विवरण अध्याय २६ से ३१ तक दिया गया है। राजनैतिक हलचल और नृशंसता के प्रसंगों के बाद औरंगजेब का ध्यान पंजाब में स्थित 'गुरगद्दी' की ओर केंद्रित किया गया कि यदि गुरु जी मुसलमान बन गये तो अन्य लोग अपने

आप इसलाम धर्म अपना लेंगे।
आपनि आप को गुरू कहावैं।
सभिहिनि ते निज चरन पुजावैं।
राहु शर्हा इह्ु मानहिं जबै।
बिना कहे तुरक सु हुइं सबै ॥२७॥ (रास ९/३३)

औरंगजेब को यह प्रस्ताव पसंद आया। मूर्ख औरंगजेब ने यह नहीं समझा कि फकीरों से इस लोक और परलोक में विनम्रता से पेश आने में भलाई है। वह बादशाहत के घमंड में अपने आप को सबसे बड़ा समझता था।

औरंगजेब ने मन्तव्य के अनुसार चिट्ठी भेजी। श्री गुरु हरिराय साहिब ने विचार के लिए सभा बुलाई। बेटा रामराय जाने को तैयार हुआ। गुरु जी ने रामराय को सुरक्षा का भरोसा दिया। रामराय दिल्ली पहुंचा। रामराय गुरु जी को दिये वचन को कि वह हर स्थिति का सामना धैर्य के साथ करेगा भूल गया। इस प्रसंग में अध्याय ३८ से ५६ तक रामराय द्वारा दिखाई करामातों का वर्णन है। करामातों के अंत में रामराय ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एक पंक्ति में शाही वैभव के प्रभाव में आकर 'मुसलमान' शब्द के स्थान पर 'बेईमान' शब्द होने का मिथ्या तथ्य बताया। पंक्ति में शरीर की क्षणभंगुरता दिखाते हुए यह कहा गया कि मर कर शरीर मिट्टी हो जाता है और मिट्टी के रूप उसकी अलग पहचान शेष नहीं रहती। उसी मिट्टी में प्रभु प्राण डाल कर पुन: मानव शरीर सृजित कर देता है। इस प्रकार मानव, मिट्टी और पुन: मानव का चक्कर चलता है। भक्त कबीर जी का इसी संदर्भ में एक दोहा प्रचलित है :

माटी कहे कुम्हार सो तू किआ रूधै मोहि।
इक दिन ऐसा आएगा मैं रूधूंगी तोहि।

श्री गुरु नानक देव जी मिट्टी और मानव के इस परिवर्तन में सुगमता के लिए 'मुसलमान' शब्द का प्रयोग करते हैं, क्योंकि देहांत होने पर 'मुसलमान' शरीर को यथावत गाड़ देते हैं जिसका मिट्टी बनना आसान है। मानव का इस जीवन में या मरणोपरांत होने वाले कष्टों का नियंत्रक भगवान है। वही इसके सोपानों को जान सकता है। इस कथन में इसलाम विरोधी बात नहीं है। रामराय ने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान विशेषत: श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में एक शब्द को बदलते हुए इसके मूल भाव को ही बदल दिया। अत: श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसे त्याग दिया। शब्द में उलट-पलट करना 'शब्द विपर्यय' कहलाता है:

हमने करयो पठावनि जबै।
न्रिभै करयो कहि करि बिधि सबै ॥१६॥ . . .
मिटी मुसलमान जी जोइ।
कर कुलाल के प्रापति होइ।
ईंट रु भांडे घरि घरि धरै।
पुन चहुं दिशि पावक पर जरै ॥१८॥
इस महिं असमंजस क्या जाना।
जिस ते पद उलटाइ बखाना।
स्री नानक को अदब न राखा।
तुरक मान हित बिप्रै भाखा ॥१९॥ (रास ९/५८)

'धुर की बाणी' अजर-अमर है। इसको रखने के लिए स्वर्ण के समान ऊंचा और पवित्र हृदय होना चाहिए। ऐसे पवित्र हृदय बहुत कम हैं। उनका धैर्य सुमेरु पर्वत के समान स्थिर होता है:

दुगध शेरनी को जु निकारे।
कंचन को बासन तिस धारे ॥३४॥
अपर पात्र को करि निज जोर।
परयो देति है ततछिन फोरि। . . .
जरहि अजर नहिं किसहि दिखावहि।
सीस हान लगि सिरर पुगावहि।

निज धीरज ते चलहि न ऐसे।
लगे बाउ गिर मेरू जैसे ॥३६॥

शेरनी का दूध स्वर्ण पात्र में निकाला जाता है, अन्य पात्र को वह तत्क्षण तोड़ देता है। गुरु का शबद सच्ची टकसाल में गढ़ा जाता है। आध्यात्मिक संपदा से पूर्ण व्यक्ति अपने रहस्य को दिखावे की वस्तु नहीं बनाता। वह अपने शीश की कीमत पर भी प्रभु-ज्योति को बाजारू वस्तु नहीं बनाता। रामराय द्वारा करामातों का प्रदर्शन गंभीर अपराध है :

अपनि समीप न आवनि दीनि।
पिख्यो दोश जो कीनसि पीन ॥४९॥ (रास ९/६०)

रास ९ के राजनीतिक ऊहापोह, करामात और धार्मिक कट्टरता के वातावरण से उभर कर भाई संतोख सिंघ रास १० में प्रभु का मंगलाचरण करते हैं, जो सारी शक्ति की सीमा है और सभी जीवों में एक-रस होकर शांत रूप में समाया हुआ है। वे सभी सतिगुरु साहिबान को स्मरण करते हुए दसवीं रास का आरंभ करते हैं जिनकी सहायता से विघ्नों का नाश होता है:

बरनौ दसमी रास को सभि सतिगुरू मनाइ।
बिघन बिनाशनि को करहिं होवहिं सदा सहाइ ॥१४॥ (रास १०/१)

रास १० के आरंभिक अध्यायों में श्री गुरु हरिराय साहिब के जन-कल्याण से सम्बंधित पक्ष को उजागर किया गया है, जिसमें भूमिहीन कृषकों की आवास व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था तथा जमींदारों के व्यवहार की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने करतारपुर की यात्रा की। उन्होंने करतारपुर बसाये जाने का प्रसंग वृद्ध लोगों से सुना और भाई भगतू के यहां निवास किया। सतलुज पार करके गुरु जी महिराज नामक स्थान पर पहुंचे। महिराज गांव में राहको का प्रसंग है। महिराज में पूर्वजों की स्मृति में मेला लगता था। मेले की भूमि के मालिक मेले में लोगों से उपहार लेते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने भी भूमि-मालिकों की बुराई को देखकर उन्हें सिक्ख नहीं बनाया। महिराज के कृषकों के पास भूमि नहीं थी। वे सिदक से आवास बनाकर रहते थे। पेयजल की व्यवस्था भी नहीं थी। श्री गुरु हरिराय साहिब उस स्थान पर पहुंचे। सारी भूमि जैता और पिराणा ने कब्जे में कर रखी थी। श्री गुरु हरिराय साहिब के समझाने पर भी वे नहीं माने। गुरु जी स्थिति को समझ गये:

स्याने पुरखनि की सिख एहो।
ग्रास देहु पर बास न देहो।
इम उत्तर दे तूशनि रहे।
नहीं देति सतिगुर उर लहे ॥४२॥ (रास १०/६)

कृषकों के पुन: निवेदन पर गुरु जी ने सुझाव दिया कि खेत की तरफ जाओ, जहां पहुंचो तथा वहीं निवास बनाओ। कृषकों ने इकट्ठे होकर प्रयास किया। जैता-पिराणा मारे गये। महिराज के कृषकों के निवास की व्यवस्था हो गई।

श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन में करतारपुर के भाई भगतू के परिवार से सम्बंधित प्रसंग भी महत्वपूर्ण हैं। भाई भगतू का अतिसार रोग से देहांत हुआ। भाई भगतू के दो पुत्र थे। बड़े पुत्र जीवन ने एक ब्राह्मण पुत्र को जीवन-दान देकर ब्राह्मण परिवार के दुख का निवारण किया। जीवन की पत्नी गर्भवती थी। गुरु जी ने जीवन के त्याग की सराहना की और पुत्र के यशस्वी होने का वरदान दिया:

संतदास तिस नाम रखीजै।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

"तवारीख गुरू खालसा" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु हरिराय साहिब का जीवन व व्यक्तित्व

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

गुरु साहिबान के जीवन का उद्देश्य मानवता को प्रभु के साथ जोड़कर उनके मन में प्रेम तथा भाईचारे की भावना पैदा करना था। इस मार्ग पर चलते हुए कई बार उन्हें अति संकट के दौर में से भी गुजरना पड़ा। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत हुई और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को जंगों-युद्धों का सामना करना पड़ा। चाहे गुरु साहिब किसी के साथ वैर नहीं रखते थे मगर जब उन पर कोई फौज लेकर चढ़ ही आया तो उन्होंने उसका पूर्ण दृढ़ता तथा वीरता से सामना करते हुए हर मैदान-ए-जंग में फतह प्राप्त की।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच पुत्र थे- बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अणीराय जी, बाबा सूरजमल जी, बाबा अटल राय जी तथा श्री (गुरु) तेग बहादर जी। पांच पुत्रों के अलावा गुरु जी की एक पुत्री बीबी वीरो जी भी थे। श्री गुरु हरिराय साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच पुत्रों में से सबसे बड़े बाबा गुरदित्ता जी के पुत्र थे और गुरु-घर की मर्यादा तथा सिद्धांत को अच्छी तरह समझते थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उनकी गुरिआई संभालने की योग्यता को जानते हुए श्री गुरु नानक देव जी की विरासत को आगे चलाने की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी थी। अनूप शहर के रहने वाले श्री दयाराम क्षत्रिय की पुत्री बीबी किशन कौर के पति श्री गुरु हरिराय साहिब बहुत ही कोमल स्वभाव के मालिक थे तथा प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को बहुत ही प्रेम-भाव से देखते थे। गुरिआई की सेवा संभालते ही उन्होंने संगत में प्रभु-प्रेम तथा भाईचारे की भावना के विकास पर जोर दिया और गुरु-घर में २२०० घुड़सवार रखकर शेष सबको संगत की सेवा करने की ओर रुचित कर दिया। ये घुड़सवार भी अलग-अलग जगहों पर रखे हुए थे। गुरु जी जितने घुड़सवार चाहते अपने साथ रखते थे, शेष को कीरतपुर, करतारपुर या अन्य जगहों पर रखा हुआ था।

पूर्व गुरु साहिबान की भांति श्री गुरु हरिराय साहिब ने भी इस बात पर जोर दिया कि शुभ अमलों (कर्मों) के बिना मनुष्य न तो अपना और न ही किसी अन्य का भला कर सकता है। लेखक बताता है कि एक बार रूम के बादशाह का वकील उनके पास आया और पूछने लगा कि ईसा, मूसा, मोहम्मद साहिब आदि पैगंबरों तथा श्री राम-कृष्ण अवतारों में से जीव को दोजख (जहन्नुम) में जाने से कौन बचा सकता है? गुरु जी ने उत्तर दिया कि सिवाय अपने श्रेष्ठ स्वभाव तथा शुभ कर्मों के कोई नहीं बचा सकता।

गुरु साहिब हउमै, ईर्ष्या तथा द्वैत को भुलाकर सबको सेवा, सिमरन, नम्रता, प्रेम तथा भाईचारे का उपदेश करते थे। उनके इसी स्वभाव को पहाड़ी राजा उनकी कमजोरी समझने लगे। उन्हें अपने वीरों तथा जरनैलों पर बड़ा गर्व था। एक बार दीपचंद कहलूरी

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

तथा गजे सिंघ हंडूरी एवं कुछ अन्य पहाड़ी राजा गुरु-दर्शन को आए तो गुरु जी ने उनकी इस भावना को जान लिया। गुरु जी ने उनका अहंकार मिटाने के लिए कहा कि "तुम्हारे साथ बहुत बड़े-बड़े पहलवान हैं। चलो, सिक्खों के साथ दो हाथ करवाकर तमाशा देखें। अखाड़े में आ भिड़ाए, चार जोड़े भिड़े, राजाओं के चारों गिरे। तब कुछ राजाओं ने तो अपमान समझा, कुछ सिक्खों से डरे। उन्होंने गुरु जी के चरण पकड़ लिए, क्योंकि उनमें से कुछ के पूर्वजों को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ग्वालियर के किले में से बाहर निकाला था। गुरु जी ने सबको सम्मान देकर विदा किया।"

यह घटना इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती है कि गुरु जी का मन बहुत कोमल था। उन्होंने बहुत-से जुझारू रुचि वाले सिक्खों को गुरबाणी के प्रचार के लिए प्रेरित किया था। इसके साथ ही सिक्खों को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शिक्षा के अनुसार शारीरिक रूप से बलवान रहने की प्रेरणा भी की थी। गुरु साहिब नम्रता को एक अतिरिक्त गुण समझते हैं। इसके साथ-साथ वो सिक्खों को वीरता के गुण धारण करने पर भी जोर देते हैं ताकि उनकी नम्रता को कोई उनकी कमजोरी न समझ ले।

श्री गुरु नानक देव जी अपनी उदासियों (प्रचार-यात्राएं) के दौरान जहां भी गए, लोग उनकी शख्सियत से प्रभावित होकर सिक्ख बनते गए। श्री गुरु अमरदास जी ने दूर-दराज के स्थानों पर स्थापित हुई सिक्खी को मजबूत तथा और अधिक प्रफुल्लित करने के लिए मंजी-प्रथा की स्थापना की थी। इसी उद्देश्य को मुख्य रखकर श्री गुरु रामदास जी ने मसंद-प्रथा की स्थापना की थी। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना तथा श्री हरिमंदर साहिब की रचना करके सिक्खी की जड़ों को सदीवी रूप से कायम कर दिया था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने बड़े पुत्र बाबा गुरदित्ता जी को बाबा श्रीचंद को अर्पित कर दिया था। बाबा गुरदित्ता जी ने उदासी भेष में आम लोगों के साथ-साथ दूर-दराज के स्थानों तथा गृहस्थी जीवन छोड़कर सन्यास धारण कर चुके लोगों तक सिक्खी का प्रचार किया था। उदासी भेष लोगों के मन को मोहित करता था और लोग ऐसा पहरावा धारण कर चुके लोगों को ही असली धार्मिक पुरुष मानते थे। वे समझते थे कि उदासी जीवन द्वारा ही सांसारिक जीवन के झमेलों से बचा जा सकता है। बाबा गुरदित्ता जी ने सिक्खी के प्रचार के लिए दूर-दराज के स्थानों पर केंद्र स्थापित किए थे, जिन्हें 'धूणे' या 'धुएं' कहा जाता था। चार प्रमुख धूणों का जिक्र सिक्ख इतिहास में आता है जिनके मुखी प्रचारक थे--भाई अलमस्त, भाई गोइंदा, भाई बालू हसना तथा भाई फूल शाह। इन धूणों के अलावा छ: बख्शिशों का जिक्र भी मिलता है, जिन्होंने उदासी भेष में सिक्खी का प्रचार किया था। ये छ: बख्शिशें इस प्रकार थीं--सुथरेशाही, संगतसाहिबीए, जीतमल्लीए, बखतमल्लीए, भगतभगवानीए, मीहांशाहीए। इन छ: बख्शिशों की स्थापना अलग-अलग गुरु साहिबान के समय हुई थी। इनमें से भगतभगवान का जिक्र श्री गुरु हरिराय साहिब के साथ होता है, जिनके प्रभाव के कारण वो सिक्खी की तरफ प्रेरित हुआ तथा सिक्खी प्रचार में उसने बड़ा योगदान दिया।

भगतभगवान का संबंध बिहार से है। वे वहां तप-साधना करते थे और घूमते हुए पंजाब आए। श्री गुरु हरिराय साहिब से मिलाप हुआ

और सिक्खी धारण की। ज्ञानी गिआन सिंघ बताते हैं कि "भक्त गिरि गुसाईं बोध गया के महंत ने अपनी जमात तथा अन्य अनेक महंतों सहित ज्वालामुखी के दर्शन करने जाते समय गुरु-यश सुनकर कीरतपुर में जा डेरा लगाया। गुरु जी के वचन सुनकर उनका मन कोयल के बच्चे की भांति गुरु जी तरफ फिर आया और उसने गुरु जी के चरण पकड़ लिए, विनती की, अपना सिक्ख बनाओ। गुरु जी ने उनकी अधिक श्रद्धा-प्रीति देखकर चरणामृत तथा सतिनाम का उपदेश देकर वचन किया--*"भगत वछल दरगहि परवाण ॥"* उसी पल से भक्त गिरि का नाम भक्त भगवान (भगतभगवान) प्रसिद्ध हो गया। सभी साथी गुरु-घर के साधु बन गए जिनके तीन सौ साठ डेरे अब पटना जिले में हैं और भगतभगवान की गद्दी दानापुर में है। कुछ दिन गुरु जी पास रहे, सतसंग किया, गुरु-घर की मर्यादा सीखी। ज्वालामुखी की यात्रा की जगह देहरे बाबा नानक की यात्रा करके बेदी मेहरचंद से मिलकर, अपने देश में जाकर बहुत सिक्खी फैलाई।

सिक्खी-प्रचार के लिए गुरु जी ने दूर-दराज के क्षेत्रों में प्रचारक भेजे थे। भाई फेरू का नाम उनमें से प्रमुखता के साथ लिया जाता है। गुरु जी खुद भी जिस गांव या नगर में जाते थे वहां दीवान लगाते, लोगों को परमात्मा के साथ जोड़ते। लेखक ने जिन गांवों में गुरु जी की प्रचार-फेरी के बारे में बताया है उनमें से प्रमुख हैं--श्री अमृतसर, सिंघांवाला, हकीमपुरा, हरीआं वेलां, करतारपुर, गोइंदवाल, जीरा, जंडांवाला, जस्सा, डरौली, दुसांझा, नूरमहिल, पलाही, पुआधड़ा, फराला, बहिली, बिंझूके, बंबेली, भुंगरनी, भूखड़ी, माछूवाड़ा, मुकंदपुर। भाई जस दरिया, चतरा, नत्थू आदि रबाबी गुरु जी की हजूरी में चौंकी भरते तथा संगत को गुरु-संग लगने की प्रेरणा करते। गुरु जी के प्रताप से प्रभावित होकर लोग सिक्ख सजते हैं।

श्री गुरु हरिराय साहिब के समय भारत में शाहजहां का शासन था। उसके बाद उसके पुत्रों में हुई जंग में औरंगजेब विजयी रहा। उसने अपने भाइयों को मार कर तख्त के लिए सब दावेदारियां खत्म कर दी थीं। दाराशिकोह भारतीय परंपराओं को समझता था तथा लोगों में आपसी भाईचारे की वकालत करता था। उसे कष्ट देकर मारने के पश्चात भारत में औरंगजेब ने मौलवियों के प्रभाव अधीन तुअस्सबी नीति धारण करते हुए बहुत-से धार्मिक स्थान तबाह कर दिए थे। लोगों के मन में यह प्रभाव दिया था कि इसलाम ही सुरक्षित स्थान है। औरंगजेब की इस नीति का वर्णन करते हुए लेखक बताता है, "औरंगजेब ने तख्त पर बैठते ही काजियों, मौलवियों के सिखाए हुए, मूर्ति-पूजा हटाने के लिए पहले मथुरा के मंदिर तोड़े, फिर केशव का तथा बांकेबिहारी का मंदिर, जो निहायत बड़े-बड़े कीमती पत्थर के करोड़ों रुपए से बने थे, तोड़कर उनकी जगह मस्जिदें बनवा दीं जो अब तक हैं।

गुरु-घर पहले से ही विरोधियों के निशाने पर था। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत ने यह सिद्ध कर दिया था कि मौलवी सिक्खी के बढ़ते प्रभाव से बहुत दुखी थे और उन्होंने बादशाह जहांगीर के कान भर कर गुरु जी को शहीद कर दिया था। यह तो गुरु-घर में जाहिर हो रही दैवी-करामात ही थी कि सिक्खी घटने की बजाय दिनोदिन बढ़ती जा रही थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के विरुद्ध जितने भी हाकिम चढ़ आए थे, सबको पराजय का मुंह देखना पड़ा था। इसका एक बड़ा कारण था कि जब भी

कोई हाकिम चढ़ाई करके आया तो आसपास के गांवों के चौधरियों तथा आम लोगों ने गुरु जी की तन, मन, धन तथा अपने आदमियों द्वारा पूर्ण दृढ़तापूर्णक सहायता की थी। हाकिमों का यह भ्रम जाता रहा कि श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत से सिक्खी को आघात पहुंच रहा है और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ खड़े थोड़े-से सिक्ख शेष हैं, वो हकूमत की शिक्षित सेनाओं का मुकाबला करने के अयोग्य हैं। औरंगजेब के समय गुरु-घर के विरोधियों ने फिर ऐसे यत्न आरंभ करने शुरू कर दिए जिससे सिक्खी को खत्म किया जा सके। अहलकारों की सलाह के अनुसार उसने गुरु जी को दिल्ली आने का निमंत्रण दिया लेकिन गुरु जी ने उसकी नीयत को जानते हुए दिल्ली जाने से इंकार कर दिया। लेखक बताता है कि औरंगजेब को भड़काकर गुरु-घर के विरोधियों ने गुरु जी की तरफ फौजी सहायता भेजी, जिसमें सबसे पहले जालिम खां उमराव दस हजारी को सेना देकर भेजा। चार मंजिल आया तो कच्चा मांस खाकर शूल उठकर तड़प कर मर गया। फिर दूंदे खां कंधारी को उसी की जगह पर भेजा तो उसे उसके किसी दुश्मन ने सोये पड़े को काट दिया। तीसरी बार नाहर खां नवाब सहारनपुरिए को भेजा। दामले गांव के पास यमुना के किनारे आया तो सेना में हैजा फैल गया, जिस कारण सेना के सरदार डर के मारे कहीं तितर-बितर हो गए। फिर तो जिस उमराव को हुक्म हो वही मुंह फेर जाए। शिवदयाल दीवान ने अर्ज की, बाबे नानक का घराना बेलाग सच्चे फकीरों का है। मूर्ति-पूजा, भस्म मलना, जटें बढ़ाना, कान फाड़ना आदि कोई पाखंड-बनावट नहीं, केवल प्रभु की बंदगी तथा शुभ कर्म करते हैं। ऐसे पीर-फकीर प्रीतिवानों के प्यारे होते हैं।

शिवदयाल गुरु-घर का श्रद्धालु था। वैसाखी के अवसर पर वो गुरु जी के दर्शन को कीरतपुर आया तो सारी बात जा बताई। उसने विनती की कि विरोधी गुरु-घर के प्रति बादशाह के कान भर रहे हैं, यदि दलील तथा ज्ञान के सहारे कोई उसकी तसल्ली करा दे तो उसका क्रोध कुछ शांत हो सकता है। गुरु जी ने उसकी विनती मान कर अपने पुत्र रामराय को दिल्ली जाने के लिए कहा। दिल्ली जाने से पहले गुरु जी ने उसे समझाया, "हम तेरे अंग-संग सहायक हैं। तेरी रसना पर गुरु नानक साहिब की शक्ति निवास करेगी। जो कुछ चाहेगा वही रंग बरत जाएगा, मगर संभल कर रहना। अपने बड़ों की महिमा तथा सच्चाई प्रकट करते रहना, डरना नहीं।"

रामराय के दिल्ली पहुंचने पर बादशाह बहुत खुश हुआ और उसने रामराय को दरबार में हाजिर होने के लिए कहा। इसलाम में पीरों-फकीरों का बहुत सत्कार तथा भय है। सत्कार इसलिये किया जाता है कि फकीर अल्लाह की बंदगी करके आध्यात्मिक उच्चता ग्रहण करते हैं और इनसे डर इसलिए महसूस किया जाता है ताकि किसी बात पर वे नाराज न हो जाएं तथा राज्य में कोई आफत न आ जाए। कहा जाता है कि दिल्ली दरबार में रामराय ने बादशाह को करामातें दिखाई थीं जिनका जिक्र ज्ञानी जी ने भी किया है। उन्होंने वे बहत्तर करामातें भी लिखी हैं जो रामराय ने बादशाह को दिखाई बताई जाती हैं। सिक्ख धर्म में करामात को कोई जगह नहीं है। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को हाकिमों ने करामात तथा शहादत में से किसी एक को चुनने के लिए कहा था तो गुरु जी ने शहादत देना ही योग्य समझा था। कहा

जाता है कि बादशाह को करामातों से प्रभावित होता देख काजियों ने उसे गुरबाणी में आई कुछ विशेष पंक्तियों के अर्थ पूछने के लिए कहा। सिखाये बादशाह ने रामराय को गुरबाणी की पंक्तियों के अर्थ बताने के लिए कहा। रामराय बादशाह को गुरबाणी के अर्थ पूर्ण सत्कार तथा दृढ़तापूर्वक बताता रहा। अर्थ पूछते-पूछते श्री गुरु नानक देव जी की एक पंक्ति आई--*"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"* रामराय इस पंक्ति के सही अर्थ न कर सका और उसने जानबूझ कर पंक्ति के गलत अर्थ कर दिए। उसने *"मिटी मुसलमान"* की जगह *"मिटी बेईमान की"* बोलकर अर्थ कर दिए। उसके इन अर्थों से बादशाह तो बहुत खुश हुआ मगर वहां मौजूद सिक्खों को अच्छा न लगा। जब यह बात श्री गुरु हरिराय साहिब तक पहुंची तो उन्होंने अपना पुत्र होने के बावजूद भी रामराय को मुंह न लगाया और उसे वहां से चले जाने को कह दिया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने मालवा क्षेत्र में सिक्खी की जड़ें मजबूत करने के लिए भरपूर यत्न किए। मन में नम्रता तथा कोमलता होने के बावजूद भी वे गुरमति सिद्धांतों का पूर्ण दृढ़ता से पालन करते और कराते रहे। उन्होंने गुरमति सिद्धांतों के प्रति दृढ़ता का प्रकटावा करते हुए अपने बड़े पुत्र रामराय को सिक्खी-सिद्धांतों से डगमगा जाने पर कभी भी मुंह न लगाया और गुरगद्दी अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को सौंप कर लगभग ३१ वर्ष की आयु में ज्योति-जोत समा गए।



"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" कृत भाई संतोख सिंघ में *(पृष्ठ १६ का शेष)*

अधिक बंस जुति होइ जनीजै।
जनमहि पुत्र प्यार करि पारो।
इक ते हम करि देहि हजारों ॥१८॥ (रास १०/१८)

भाई भगतू का दूसरा पुत्र गौरा था। उससे गुरु जी के अंगरक्षक भाई जस्सा ने कटु वचन कहे। गौरा ने भाई जस्सा की हत्या अपने सेवक के द्वारा गोली मारकर करा दी। गुरु जी वापिस कीरतपुर जा रहे थे। उस समय उनका डेरा तुर्कों के घेरे में आ गया। गौरा ने तुर्कों से डटकर मुकाबला किया। गुरु जी ने उसको उत्साह से बुलवाया और उसने गुरु जी से भेंट की।

श्री गुरु हरिराय साहिब जन-जन के करीब थे। वे धीरमल और रामराय के द्वारा किये बिखराव को निकट से देख रहे थे :

क्रिपा सिंधु सुनि कै मुसकाए।
'भो सिक्खहु! बूझहु इस भाए ॥४०॥
सिख सेवक अबि भूल गए हैं।
बड भुलावनी बिखै पए हैं।
अरथ लोभ के बसी परे हैं।
पाखंडनि को पूज करे हैं ॥४१॥

बिखराव की यह दशा थोड़े समय की है, फिर जहाज एकत्र होगा और पवित्र पंथ प्रकट होगा :

'कितिक समो परि हो अस रौरा।
बिगर जाइं सभि ठौरहिं ठौरा ॥४९॥ . . .
तबि दसमो मैं धरौं शरीर।
देग तेग को धनी गहीर। . . .
तबि जहाज मैं करौं इकत्र।
प्रगट होइगो पंथ पवित्र ॥ . . ५२॥ (रास १०/२१)

श्री गुरु हरिराय साहिब की भविष्यवाणी लगभग १४ वर्ष बाद पूर्ण हुई। श्री गुरु हरिराय साहिब ६ अक्तूबर, १६६१ को बाल अवस्था के अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी सौंप कर इस संसार से विदा हो गये।



"पंथ प्रकाश" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब का नूरानी जीवन-वृत्तांत

*-डॉ. मनजीत कौर**

श्री गुरु नानक देव जी की सातवीं ज्योति श्री गुरु हरिराय साहिब अत्यंत कोमल, शांत तथा उदारचित्त प्रकृति के मालिक थे। एक ओर जहां गुरु साहिब वैद्य के रूप में दीन-दुखियों एवं रोगियों की सेवा में तत्पर रहते वहीं दूसरी ओर शिकार खेलने के बाद घायल हुए प्राणियों को अपने दवाखाने में लाकर इलाज भी करते, उन्हें पुन: स्वस्थ कर जंगल में छोड़ देते। यही नहीं, २२०० जवान भी हर समय गुरु जी के साथ रहते।

जहां एक ओर गुरु जी दुर्लभ जड़ी-बूटियों से असाध्य शारीरिक रोग दूर करते वहीं दूसरी ओर प्रभु-सिमरन की खुराक से मानसिक रोगों का इलाज भी करते। यही नहीं, गुरमति उसूलों के खिलाफ चलने वाले अपने पुत्र रामराय को जीवन-पर्यंत मुंह न दिखाने का आदेश देकर गुरबाणी से किसी भी कीमत पर खिलवाड़ न करने की नसीहत हमें गुरु साहिब के जीवन से मिलती है। इसलिए उन्हें सुलतान, दरवेश, सत्य के अनुयायी तथा दोनों जहां की बख्शिशें करने वाले रहमतों के सागर कहा जाता है।

"पंथ प्रकाश" के पृष्ठ १४८ से १५२ तक संक्षिप्त किंतु गागर में सागर भरने सदृश्य ज्ञानी जी ने सातवें पातशाह का जीवन-वृत्तांत प्रस्तुत किया है।

संक्षिप्त जीवन परिचय : ज्ञानी जी गुरु साहिब के आलौकिक जीवन का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि बाबा गुरदित्ता जी के घर में माता निहाल कौर की कोख से संवत् १६८६ में कीरतपुर साहिब में श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म हुआ। शुरू से ही आप गंभीर प्रवृत्ति के मालिक थे। कभी किसी ने आप जी के नेत्रों में क्रोध नहीं देखा अर्थात् आप हमेशा सहजावस्था में रहते। बचपन से ही आप ईश्वर-भक्ति में निमग्न रहते। जो सामान घर में होता, फकीरों एवं जरूरतमंदों को दे देते। काव्य रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है :

चौपई

स्री बाबे गुरदिते के घर।
मात निहाल कौर से लखतर।
संमत सोलां सो छेआसी।
माघ सुदी दुतीआ प्रकासी। . . .
बालन सो खेलन के समे।
हरि गुर भगति विखे रहि रमे।
जो कुछ घरते करमें ऐहैं।
सोऊ फकीरन ग्रीबन दैहैं। (पृष्ठ १४८-४९)

कोमल-शांत हृदय : लेखक आगे गुरु साहिब के जीवन से संबंधित एक कथा का जिक्र करता है जिससे गुरु साहिब के प्रकृति-प्रेम एवं कोमल हृदयोद्गार की तसवीर स्पष्ट दिखाई देती है। एक बार आप छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ एक बाग में सैर कर रहे थे कि एक पौधे से आपका चोला (अंगरखा) टकरा गया और फूल गिर कर बिखर गये। श्री गुरु हरिराय साहिब उसी स्थान पर बैठ गए और वैराग्य में आकर उनके नेत्रों से अश्रुधारा बह

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

निकली। तभी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने पूछा और फिर उन्हें प्यार से समझाया कि अंगरखे को उठाकर अर्थात् संभाल कर चला करो। उस दिन से गुरु साहिब हमेशा अपने चोले को उठाकर ही चलते :

अति कोमल ताकी इक साखी।
सुनो सिक्खन जोहै लिख राखी। . . .
फिरत हुतो इक बूटे साथ।
छुहि जामां गुल गिरे अकाथ। . . .
भाखओ जामां चलो उठाए।
तब तै कबी न चले फिलाए। (पृष्ठ १४९)

यही नहीं, उनके करुणामयी हृदय की झांकी प्रस्तुत करती अनेक साखियां हैं। आगे ज्ञानी जी लिखते हैं कि एक दिन गुरु साहिब घुड़सवारी कर रहे थे कि एक गरीब बच्चा डर कर धरती पर गिर पड़ा, जिसे देख गुरु साहिब शीघ्र घोड़े से उतरे और उस बच्चे के सिर पर प्यार से हाथ फेरा। वही बच्चा बड़ा होकर जवंदा भगत कहलाया और उसी के नाम से जवंदी ग्राम प्रसिद्ध हो गया। इसी प्रकार गुरु जी ने अनेकों को ईश्वर-भक्ति के लिए प्रेरित किया। संगत को प्रभु-सिमरन में जुड़े रहने हेतु विशेष रूप से प्रेरित किया गया। संगत में शांत रस प्रवाहित कर दिया। इसके उपरांत मालवा क्षेत्र में जाकर अनेक सिक्ख संगत का उद्धार किया।

दाराशिकोह की असाध्य बीमारी : आगे ज्ञानी गिआन सिंघ ने वर्णन किया है कि शाहजहां का बड़ा पुत्र दाराशिकोह, जिसे बादशाह गद्दी पर बिठाना चाहता था, क्योंकि वह अत्यंत नेक और आज्ञाकारी था, वह बहुत बीमार पड़ गया। अनेक वैद्य और हकीमों को बुलाया गया लेकिन उसका रोग किसी की समझ में न आया। हकीमों ने अनेक यत्न किये, लेकिन उसे आराम न आया। अंत में हकीमों ने सलाह दी कि एक तोले का लौंग, दस तोले की हरड़ तथा संजीवनी की जड़ का चूर्ण बनाकर दाराशिकोह को दिया जाए, तभी इसका रोग दूर हो सकता है। शाहजहां ने बहुत कोशिश की लेकिन तीनों चीजें उसे कहीं से न मिलीं, यथा:

दोहरा
शाहि जहां का पूत था बड दारा सकोह।
आगयाकारी नेक बड अति बिमार था ओह।३।
चौपई
औरंगजेब तांहि के भाई।
मुछशेर की हुती खुलाई।
जतन अनेक हकीमन कीए।
काहूं बिध अराम ना थीए। . . .
इनका चूरन करीए जबही।
नसै रोग दारे का तब ही।
शाहि जहां बहु जतन कराए।
मिली न तीनो वथ किस थाए। (पृष्ठ १५०)

दुर्लभ जड़ी-बूटियों का गुरु जी के पास मिलना : किसी ने शाहजहां को सूचित किया कि ये तीनों औषधियां श्री गुरु हरिराय साहिब के पास मौजूद हैं। शाहजहां ने तत्काल सेवकों को गुरु जी के पास भेजा जो अनुनय-विनय कर गुरु जी से यह औषधि ले गए और जिसे लेते ही दाराशिकोह पूर्णतया स्वस्थ हो गया। काव्य रूप में ज्ञानी जी ने इसे इस प्रकार कलमबद्ध किया है :

काहू शाहि पास कहि दीनो।
गुरू हरि राइ पास है तीनो।
शाहि मातबर तबै पठाए।
बिनती कर सो गुर तै लिआए।
जिन तै शाहजादे का रोग।
दूर भइओ अति थिओ निरोग। (पृष्ठ १५०)

दाराशिकोह का गुरु जी के दर्शनार्थ आना: दाराशिकोह पूर्णतया निरोग होकर सतिगुरु जी के

दर्शन हेतु आया। भेंट अर्पित कर गुरु-चरणों में बार-बार शीश झुकाया। फारसी भाषा में गुरु जी की महिमा का गुणगान किया, उसकी श्रद्धा-भावना एवं प्रेम से गुरु जी अत्यधिक प्रसन्न हुए। गुरु जी ने उसे आत्म-ज्ञान करवाया। पांच दिन तक गुरु साहिब की संगत में रह कर आनंदपूर्वक दाराशिकोह ने लाहौर को प्रस्थान किया, यथा :

पुन दारा सतगुर ढिग आयो।
दै भेटा बहु सीस झुकायो।
गुर महिमा का रचयो कसीदा। . . .
पांच दिवस करकै सतसंग।
दारा गइओ लहौर उमंग।४। (पृष्ठ १५०-५१)

इसके उपरांत संवत् १७१६ में (अत्याचारी) औरंगजेब ने शाहजहां को कैद कर लिया और दाराशिकोह को कत्ल करवा दिया अर्थात् उसे मृत्यु के घाट उतार दिया, यथा :

सत्त रासे सोलां विखे नोरंगे फड़ जोर।
शाहि जहां को कैद कर दारा मरिओ खोर।५।

औरंगजेब का श्री गुरु हरिराय साहिब को दिल्ली बुलवाना : आगे ज्ञानी जी ने जुल्मी औरंगजेब के अत्याचारों का जिक्र करते हुए गुरु जी को दिल्ली बुलवाने का वर्णन किया है। तख्त पर बैठते ही अत्याचारी औरंगजेब ने पूरे हिंदोस्तान को मुसलमान बनाने की ठान ली। अनेकों धार्मिक पुरुषों को उसने मरवा डाला। अहंकार में आकर गुरु साहिब को भी दिल्ली बुलवाना चाहा। गुरु जी ने तो पहले दिन से ही प्रतिज्ञा कर ली थी कि ऐसे जुल्मी के दर्शन ही नहीं करने, यथा :

तखत बैठ नौरंगे पापी थापी कुमती भारी।
सरब हिंद को तुरक करन हित जुलमी अधिक बिथारी। . . .
गुर प्रतगया कर राखी थी या बिध पहिले दिनसो।
दरशन नाहिं तुरक दा करना सवा पहिर चड़े दिनसो। (पृष्ठ १५१)

रामराय को औरंगजेब के पास दिल्ली भेजना : हिंदोस्तान की रक्षा हेतु गुरु साहिब ने अपने बड़े पुत्र रामराय को दिल्ली भेजा। वहां जाकर रामराय ने करामातें (जो कि मर्यादानुसार गुरु-घर में वर्जित हैं) दिखाने में अपनी शान समझी। उसको शब्द रूप देते हुए ज्ञानी जी ने वह वृत्तांत प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार गुरु जी ने अपनी बख्शिशें देकर दिल्ली बादशाह के पास रामराय को भेजा। बादशाह ने करामात देखनी चाही तो रामराय ने उसे दिखाने में जरा भी संकोच नहीं किया। आगे ज्ञानी जी ने "सूरज प्रकाश ग्रंथ" का हवाला देते हुए स्पष्ट किया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का उदाहरण देकर औरंगजेब ने रामराय से पूछा कि आपके बुजुर्ग गुरु नानक साहिब ने कैसे वचन उच्चारण किए हैं कि *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"* यथा :

इस हित राम राइ बड सुत को दै शकती निज भारी।
भेजयो दिली बादशाहि ढिग करन हिंद रखवारी।. . .
बारतक गुर परताप सूरज परकास माहि सो देखो।
ग्रंथ बढन तै लिखी न ईहां लखिओ ना काज वसेखो।
इक दिन नौरंग राम राइ सो पूछिओ ऐस बिचारे।
बडे तुमारे गुर नानक ने इहकिम बचन उचारे।
मिटी मुसलमान की पेड़े पई घुमारे।
(पृष्ठ १५१)

रामराय से सम्बंध-विच्छेद : ज्ञानी जी ने

श्री गुरु हरिराय साहिब का पावन बाणी के प्रति अदब-सत्कार दर्शाते हुए अपने ही पुत्र रामराय को आजीवन सम्मुख न आने का आदेश देने का वृत्तांत भी बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है जिस अनुसार जब औरंगजेब को खुश करने के लिए रामराय ने *"मिटी मुसलमान की"* को *"मिटी बेईमान की"* कह कर पेश किया। इससे दुनिया का बादशाह औरंगजेब बेशक प्रसन्न हुआ लेकिन सच्चे पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब को जब यह पता चला तो वे बहुत क्रोधित हुए और हुक्म दिया कि रामराय ने जिस मुख से प्रभु का वचन (अलाही बाणी) बदली है वह मुख हमें कभी मत दिखाए। ज्ञानी जी ने इसे इस प्रकार कलमबद्ध किया है :

राम राइ कहि तुम पै काहूं बचन बनाइ सुनाइआ।
मिटी बेई मानो की नित जल है गुरू अलाइआ।
पलट बचन इहु रामराइ ने करी जमाने साजी। . . .
से मुख हमको नाहि दिखई ओ तैं बड अपजस खटिओ।
जे चहितो तूं कबरैं जलदी शहिको दिदो दिखारी।
करी बिअदबी तैं सतिगुर की कूर बोलकै भारी।
(पृष्ठ १५१-१५२)

श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी सौंपना : श्री गुरु नानक देव जी के समय से चली आई मर्यादा के अनुसार कि गुरतागद्दी योग्य पात्र को ही दी जाती है, इसका जिक्र करते हुए ज्ञानी जी लिखते हैं कि श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय को सन्मुख न आने का आदेश देकर अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब, जो कि पूर्णतया इस गद्दी के योग्य थे, उन्हें गुरुता-गद्दी बख्शिश की। यह समाचार मिलते ही रामराय ने गुरु-घर में उपद्रव मचा दिया। गुरु जी के आदेशानुसार रामराय का सिक्ख संगत ने कोई सत्कार नहीं किया। तब से लेकर अब तक गुरु के सिक्ख रामराय सम्प्रदाय के साथ रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं रखते। काव्य रूप में उपरोक्त भाव को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है :

गुर हरिराइ हुकम इहु दै के लघु सुत निज पिख लाइक।
हरी क्रिशन को तिलक गुरिआई दीनो तबै सुभाइक।
खबर पाइ इहु राम राइ गुर घर सो रार उठाई।
करे उपद्रव बहु प्रकारैं लेवन हित गुरिआई।
इसी हेत हरि राइ गुर फिर सिक्खन प्रती ररिओ।
रामराइ का मान न पूजन गुरु सिख कोइ न करिओ।
ताहीतै अबलो गुरु के सिख रमरईअन के संगैं।
वरतो बेटी रोटी की नहिं करहै कबी उमंगैं।
(पृष्ठ १५२)

श्री गुरु हरिराय साहिब का ज्योति-जोत समाना : कार्तिक वदी १७१८ को श्री गुरु हरिराय साहिब तिनके की तरह इस शरीर को त्याग कर परमेश्वर के धाम सिधार गए। "पंथ प्रकाश" में ज्ञानी जी ने अपने हृदयोद्गारो को इस प्रकार कलमबद्ध किया है :

नौमी कत्तक बदी सतारां सै दस अठ मझारे।
त्रिन जयों तन हरिराइ गुरू तज गुरु पुर माहिं सिधारे।६। (पृष्ठ १५२)

अंत में ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि सातवें गुरु की कथा का मैंने यथायोग्य गायन किया है अर्थात् जितना कहने की समर्थता उस परम पिता परमेश्वर ने बख्शी उतना बयान कर सका हूं। 

"दस गुर कथा" कृत कवि कंकण में श्री गुरु हरिराय साहिब सम्बंधी विवरण

*-बीबी रविंदर कौर**

सिक्खों के सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-इतिहास को कई ग्रंथकारों, इतिहासकारों ने अपने-अपने ढंग से चित्रित किया है। कवि कंकण ने दस गुरु साहिबान के जीवन-इतिहास को "दस गुर कथा" के माध्यम से रूपमान किया है। कवि ने काव्य रूप में श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन का वर्णन करते हुए छ: बंद लिखे हैं। इन छ: बंदों में कवि ने गुरु साहिब की शख्सियत के गुणों का गायन किया है।

श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-इतिहास का जिक्र करते हुए कवि ने बताया है कि छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने कृपा की तथा अपने पौत्र अर्थात् श्री गुरु हरिराय साहिब को बुलावा भेजकर बुलाया और गुरगद्दी बख्शिश की :

दोहरा।

हरिगोबिंद गुर क्रिपा कर नाती लीओ बुलाइ।
तां को गुरिआई दई स्री सतिगुरू राइ।१३१।

इस प्रकार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने पोते श्री गुरु हरिराय साहिब को खुशी से गुरगद्दी प्रदान की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब धन्य हैं जिन्होंने आप जी का नौबत (मांगलिक अवसरों पर बजने वाला बाजा) दीन तथा दुनिया में बजाया है। देवते तथा दैंत्य अर्थात् अच्छे तथा बुरे सब लोग सतिगुरु जी की शरण में आ गए। पातशाह में ऐसी कला-शक्ति थी कि सबके दुख दूर हो गए और लोक-परलोक सुखद हो गया :

सवैया।

तांते भए हरिराय गुरू गुर नाती को चाइ दई है गुराई।
धंन ही धंन कहो गुर को जिन नौबत दीन दुनी मैं बजाई।
देव औ दैत सो खाइकै त्रास जुउ आइ परे गुर की सरनाई।
मेट दए दुख लोक प्रलोक कला निध सात महल्ल घनाई।१३२।

कवि ने श्री गुरु हरिराय साहिब की शख्सियत सम्बंधी और वर्णन करते हुए कहा है कि गुरु जी की शख्सियत की झलक बहुप्रकारी है, जैसे कि योद्धाओं में गुरु साहिब महान योद्धा दिखाई देते हैं।

पहलवानों में अर्थात् बलवानों में सतिगुरु जी अति बलवान हैं, सिक्खों के लिए 'गुरु' हैं, राजाओं में महाराजा हो गए तथा रंक में भेद नहीं करते। इस तरह श्री गुरु हरिराय साहिब धन्य हैं जिन्होंने तीन लोकों में गुरगद्दी संभाली:

सूरन को गुरू सूर दिखावत, मल्ल को मल्ल है देत दिखाई।
सिक्खन को गुर रूप दिखावत, जुवतन को निज रूप कन्हाई।
शाहन को पातिसाहु दिखावत, याही मे भेद नहीं इकु राई।
धंन कहो हरिराय गुरू जिन तीनहूं लोक मैं कीनी गुराई।१३३।

सतिगुरु जी की सामर्थ्य के बारे में बयान

**२३, क्राऊन एन्कलेव, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००५, मो : ९७८११-६२१११*

करते हुए कवि कंकण आगे बताता है कि सतिगुरु श्री गुरु हरिराय साहिब की शख्सियत ऐसी है कि आप एक पल में दूसरे को अपने समान कर लेते हैं, जैसे भ्रिंगी (एक तरह की तितली) कई तरह के कीड़ों-मकौड़ों आदि को अपने जैसे बना लेती है, इसी तरह सतिगुरु जी निर्धनों को राजा बना देते हैं, पापियों को सतिगुरु मलाह बनकर पार लगा देते हैं। सतिगुरु जी की प्रशंसा ऐसी है कि तीन लोकों में यदि ढूंढें तो भी उनके जैसा नहीं मिलता :

सिक्खन को जैसे भ्रिंगि कहावति, आप समान करैं पल माही।
रंकन को गुरू भूप करे, जैसे पारस ते कहूं दारिद नांही।
पापन तारिबे को गुर केवट यां के समान न होइ कदाही।
नांहि गुरू हरिराय सो दूसर तीनहूं लोक मे ढूंडन जांही।।१३४।

कवि दुनिया के लोगों को पातशाह के बारे में समझाता है कि जो भी सतिगुरु का सिमरन करता है उसके घर में से गरीबी खत्म हो जाती है। यदि कोई असाध्य रोग वाला व्यक्ति सतिगुरु का जाप करता है तो उसका असाध्य रोग भाग जाता है। हे भाई! सतिगुरु जैसा सज्जन-मित्र-प्यारा तीन लोकों में ढूंढने पर भी नहीं मिलता:

दारिद ते जेऊ जाप करै तिह दारिद धाम मै नाहि रहावै।
काहू को होइ जौ रोग असाध तो जाप कीए तिह रोग नसावै।
नाहि कोऊ गुरू के सम साजन तीन हूं लोक मै ढूंडन जावै।
जापु करे कोऊ पूत बिहीन तो याही समय गुरु ते सुत पावै।।१३५।

अंतिम बंद में सतिगुरु जी की अलाही प्रतिभा के बारे में बताते हुए बयान किया है कि सतिगुरु जी का सिमरन करने से जन्म-मरण की कैद कट जाती है और आवागमन का झंझट खत्म हो जाता है। जो सतिगुरु को जपता है वो श्वास छोड़ते समय ही निरंकार के दरबार में निवास कर लेता है। सतिगुरु से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पदार्थ प्राप्त होते हैं। सतिगुरु को याद करने से अन्य कोई बड़ा जाप नहीं है। मैं बार-बार पुकार कर कह रहा हूं फिर भी मेरा मन पसीज नहीं रहा :

बंद के त्रास ते जापु करै कोऊ आवन जान मिटै तिस केरा।
देहि के छूटत ही जग ते फिर राम के धाम मै होइ बसेरा।
चार पदारथ पावत जांही ते और नहीं कोऊ जापु चंगेरा।
बाहरी बार पुकारत तौं तुहि, किउं न पतीजत रे मन मेरा।।१३६।





इस पत्रिका का निरंतर विकास हो!

'गुरमति ज्ञान' में प्रकाशित लेख ज्ञानवर्धक और मार्गदर्शक हैं। ज्ञान-प्रचार का इससे उत्तम साधन अन्य दूसरा नहीं है। विशेषांक सामग्री पठनीय एवं संग्रहणीय है। देश-देशांतरों में ज्ञान का प्रसार और प्रचार करने वाली पत्रिकाओं में अहम स्थान रखने वाली इस पत्रिका का निरंतर विकास हो, यही कामना करती हूं।

-डॉ. मधुबाला, पटियाला।

प्राचीन कवि और आधुनिक इतिहासकार की रचनाओं में श्री गुरु हरिराय साहिब का जीवन-वृत्त

-डॉ. नवरत्न कपूर*

भाई केसर सिंघ छिब्बर (सन् १६९९-१७६९ ई): भाई केसर सिंघ गुरु साहिबान के श्रद्धालु थे। उन्होंने "बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का" नामक पंजाबी काव्य-रचना अपनी वृद्धावस्था में संपन्न की। इसमें सातवें सिक्ख गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब का जीवन-वृत्त कुल १८ चौपाइयों में प्रस्तुत किया गया है।[१] उन्होंने गुरु साहिब का जीवन-परिचय इस प्रकार दिया है :

बाबे गुरदिते दा बेटा गुरू हरिराइ जी, गुरू हरिगोबिंद जी दा पोता। . . .
चारि बरस दे बालक साहिब गुरिआई पाई।
(पृष्ठ १०३)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने अन्य सपुत्रों को छोड़कर अपने बड़े सपुत्र भाई गुरदित्ता जी के छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिराय साहिब को गुरगद्दी क्यों प्रदान की, इसका उल्लेख लेखक ने इस प्रकार किया है :

'बाबा' नाम इस वासते गुरदित्ते नूं कहिंदे आहे सारे।
जो सरीर दे एहु बडे आहे भारे।१६०।
अते आहे बडे धीरजवान, गुणवान, बरकति वाले, आहे बुधवान।
इक दुइ जागा अज़मत भी दिखाई।
नाले मुई गऊ जीवाई।१६१।
पिता सुण के कलपति भए।
सो करि गुस्सा गुरदित्ता जी देह तजि गए।
लघु सुत जो तां के आहे हरि राइ।
तां को दादे दई गुराइ।१६२।
संमतु सोलां सै बानवे गए।
जो गुरिआई हरिराइ जी नूं देवत भए।
तां की माता को दीआ था माण :
"तेरा है सभ किछु तू आपणा ही जाणु।१६३।
बडिआं पुरखां के बचन अंनथा नहीं जाते।
उन की सेवा सभ कोई वरुसाते।
(पृष्ठ १०१)

अर्थात् श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बड़े सपुत्र बाबा गुरदित्ता जी स्थूल शरीर के थे, इसलिए उन्हें 'गुरदित्ता' पुकारा जाता था। वे विद्वान अवश्य थे, किंतु करामातें दिखाने में विश्वास करते थे। इसी कारण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उन्हें गुरु-पदवी से वंचित करके उनके छोटे पुत्र श्री (गुरु) हरिराय साहिब को गुरगद्दी प्रदान कर दी। इसी कारण हृदय को ठेस लगने पर बाबा गुरदित्ता जी काल-कवलित हो गए। उस समय श्री गुरु हरिराय साहिब की अवस्था चार वर्ष थी। यह सम्मान उन्हें इसलिए दिया गया, क्योंकि उनकी माता अपने ससुर महोदय छठे गुरु साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की खूब सेवा करती थी।

लेखक के अनुसार संवत् १६९७ में श्री गुरु हरिराय साहिब का विवाह अरूप नामक गांव में पंजाबो नामक कन्या के साथ हुआ। माता पंजाबो जी ने दो पुत्रों--रामराय तथा श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब और एक पुत्री को जन्म दिया था।

संवत् १७१८ (सन् १६६१) में श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने छ: वर्ष की अवस्था वाले छोटे पुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को

*९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर्स सोसायटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६

गुरु-पदवी प्रदान की और तत्पश्चात परलोक सिधार गए। इस प्रकार श्री गुरु हरिराय साहिब ने २४ वर्ष तक गुरु के पद पर आसीन होकर सिक्ख धर्म की बागडोर संभाली।[२] छिब्बर साहिब के शब्दों में :

अग्गे महीना कत्तक दा नउमी थित आवत भई।
तब साहिब गुरू हरिराइ जी तति देही सुरपुरि की सुध लई। . . . ।४।
तीस बरस की जगत मै आउ गुजारी।
चवी बरस गुरिआई धारी। . . . (पृष्ठ १०४)

डॉ. हरीराम गुप्ता का मत : डॉ. हरीराम गुप्ता ने मुस्लिमकालीन हिंदू इतिहासकार श्री कन्हैया लाल के आधार पर श्री गुरु हरिराय साहिब की कुल आयु ३२ वर्ष और उनके गुरु-काल की अवधि कुल १७ वर्ष (सन् १६४४-१६६१) मानी है। उनका जीवन-परिचय उन्होंने इस प्रकार दिया है:

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच सपुत्रों में से केवल दो ही उनके जीवन-काल में जीवित थे। उनमें बड़े बाबा सूरजमल दुनियादार थे और सबसे छोटे श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब सांसारिक कार्यों के प्रति उचाट रहते थे। गुरु साहिब के सबसे बड़े स्वर्गवासी पुत्र बाबा गुरदित्ता जी के दो सपुत्र थे--धीरमल और श्री (गुरु) हरिराय साहिब। पहला गुरु साहिब के आशय के अनुरूप न था, इसलिए दूसरे को उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में चुना। उसका जन्म ३० जनवरी, सन् १६३० को कीरतपुर साहिब में हुआ था और गुरु-पदवी प्रदान करने के समय श्री गुरु हरिराय साहिब की आयु चौदह वर्ष थी। उनको यह आदेश बड़े जोर के साथ दिया गया कि वे उस समय विद्यमान २२०० घुड़सवारों को अपने अंगरक्षक के रूप में रखें। (Retain the existant contingent of 2,200 mounted soldiers as his bodyguard.)[३]

आगे चलकर डॉ. गुप्ता ने मोहसिन फानी की पुस्तक दबिस्तान (पृष्ठ २३८) का हवाला देकर लिखा है "श्री गुरु हरिराय साहिब ने कीरतपुर में एक वर्ष व्यतीत किया। सन् १६४५ में शाहरुख मिर्जा के पुत्र नजाबत खां ने (मुगल सम्राट) शाहजहां के आदेश पर ताराचंद पर चढ़ाई करके उसके राज्य को जीत लिया और राजा को बंदी बना लिया। श्री गुरु हरिराय साहिब राजा कर्म प्रकाश के नाहन नामक स्थान में रहने लगे। यह स्थल सरहिंद से अधिक दूर नहीं था।

गुरु साहिब अपने विरोधी निकटस्थ संबंधियों के कारण १२ वर्ष तक नाहन में टिके रहे और प्राय: कीरतपुर साहिब आते-जाते रहते थे। उन्होंने अपनी सारी शक्ति सिक्ख धर्मावलंबियों को संगठित करने में लगा दी। नथाणा में उन्होंने जाट जाति के फूल नामक एक निर्धन और भूखे बालक को वरदान दिया। वही आगे चलकर प्रसिद्ध फुलकियां परिवार का संस्थापक बना, जिसके साम्राज्य में पटियाला, नाभा, जींद, फरीदकोट तथा अन्य रियासतें आती हैं।

सन् १६५७ में श्री गुरु हरिराय साहिब कीरतपुर लौट आए। इस बीच शाहजहां के बड़े पुत्र दाराशिकोह और दूसरे बेटे औरंगजेब में राज्याधिकार के लिए लड़ाई छिड़ गई, जिसमें दाराशिकोह अप्रैल-मई, सन् १६५८ में अपने छोटे भाई से पराजित हो गया। दाराशिकोह आगरा से दिल्ली होकर रोपड़ (पंजाब) पहुंच गया। दाराशिकोह हिंदू और मुस्लिम संतों को एक समान आदर देता था। वह श्री गुरु हरिराय साहिब को भी इससे पहले मिला चुका था। यद्यपि वह गुरु साहिब से अवस्था में पंद्रह वर्ष बड़ा था और सुलतान का बेटा (बड़ा राजकुमार) था, फिर भी उसे इस बात का कोई अभिमान न था। उसके इसी विनम्र स्वभाव तथा मुगल सम्राट बनने (बड़े पुत्र होने के

कारण) के जन्म-सिद्ध अधिकार के कारण श्री गुरु हरिराय साहिब अपने सिपाहियों के साथ उसकी सहायता के लिए ३ जुलाई, सन् १६५८ को लाहौर पहुंच गए। दाराशिकोह तब तक हिम्मत हार चुका था, अत: गुरु साहिब वापिस लौट आए।[४]

मुगल साम्राज्य पर गहरी पकड़ हो जाने के पश्चात् औरंगजेब ने अपने बड़े भाई दाराशिकोह के सच्चे शुभचिंतक श्री गुरु हरिराय साहिब को अपनी अदालत में बुलाया। गुरु साहिब ने अपने स्थान पर अपने चौदह वर्षीय पुत्र रामराय को सितंबर, सन् १६६१ में वहां भेज दिया। गुरु साहिब ने चलने से पूर्व उसे समझाया कि औरंगजेब जो भी प्रश्न करे उसका उत्तर धैर्य से तथा ध्यानपूर्वक देना। उसे वह बात भी बताई गई जबकि मुगल बादशाह जहांगीर ने श्री गुरु अरजन देव जी को श्री आदि ग्रंथ साहिब की बाणी के कुछ पदों में संशोधन के लिए जोर दिया था। औरंगजेब ने रामराय से श्री आदि ग्रंथ साहिब के निम्नलिखित पद को समझाने के लिए आग्रह किया :

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥[५]

रामराय ने अपने मन से 'मुसलमान' शब्द की जगह 'बेईमान' शब्द का उचित प्रयोग बताकर औरंगजेब को खुश करने की कोशिश की। जब श्री गुरु हरिराय साहिब को अपने पुत्र के इस अनुचित व्यवहार का पता चला तो उन्होंने उसे गुरगद्दी से वंचित कर दिया। डॉ हरीराम गुप्ता ने मैकालिफ के इस मत का खंडन करते हुए लिखा है :

"The stern nature of the Emperor, the awful atmosphere of the court and his own loneliness, frightened Ram Rae, a lad of 14. Out of fear he substituted the word 'Beiman' in place of 'Musalman'. Aurangzeb detained Ram Rae, as a hostage at the court for Guru Har Rae's good behaviour. It also seems probable that the Emperor wished to have the Guru as a supporter of Mughal Empire. Even after disowning Ram Rae by the Guru, Aurangzeb might have thought that the Guru would change his decision under imperial pressure. Ram Rae as the Guru would prove a pliant tool of imperial policy if he got guruship through official support. Aurangzeb knew the depth of Guru's influence on Jat peasantary of Majha and Malwa, when he was the governor of Sindh and Multan from 1648 to 1652."[६]

कुछ भी हो, बादशाह औरंगजेब श्री गुरु हरिराय साहिब से अपने भाई दाराशिकोह के प्रति झुकाव के कारण आगबबूला था। वह अपनी इसी चिढ़ के कारण अपने दबाव से हर बात मनवाना चाहता था। सत्य के पुजारी श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसकी हरेक बात अनसुनी कर दी। ३२ वर्ष की अवस्था में ६ अक्तूबर, सन् १६६१ को कीरतपुर साहिब में आप परम ज्योति में विलीन हो गए।

सत्य-प्रिय और निर्भीक स्वभाव वाले उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण बिहार राज्य के अनेक व्यापारी सिक्ख बन गए। उनमें से एक था भगतभगवान, जिसने कई सिक्ख-प्रचार केंद्र बनवाए। श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-काल में इन केंद्रों की संख्या ३६० तक पहुंच गई थी।[७]

संदर्भ-सूची :

१. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) (संपा.) : केसर सिंघ छिब्बर दा बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का, पृष्ठ 'ह' (भूमिका); 'परख' नामक पंजाबी पत्रिका; पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़, सन् १९७२.

२. डॉ. हरीराम गुप्ता ने उनका गुरु-काल सन् १६४४-१६६१ तक (कुल १७ वर्ष) माना है।

३. Dr. Hari Ram Gupta : History of Sikhs, Vol. I, page 178.

४. Ibid, page 178-179.

५. The dust of a Musalman is kneaded by a potter into a dough and he converts it into pots and bricks, which cry out as they burn. --Ibid, page 179-180.

६. Ibid, page 180-181.

७. Ibid, page 180.



कविताएं

गुरु-चरणों की धूलि

अपने सिर पर धूल धरूं जो,
गुरु-चरणों की पाऊं।
झूम-झूम गुण गाऊं गुरु के, और बहुत इतराऊं।
गूंज रहे गुरुद्वारे से जो, शबद निरंतर प्यारे।
उब शबदों से चमक रहे हैं,
सूरज चांद सितारे!
उस प्रकाश की दिव्य ज्योति से,
अंतर ज्योति जलाऊं।
अपने सिर पर . . .।
उसी शबद को सुनो भाई,
जो गुरु के मुख से आये।
उतरे हैं कानों के जरिये,
मन के बीच समाये।
नित शबदों को रखूं संजोकर,
बार-बार दोहराऊं।
अपने सिर पर . . .।
तार सभी मिल अंतर के जब,
शुद्ध सरल हो बाजें।
मेरे मन को आवास बना कर,
गुरुवर आप विराजें।
इतनी दया दिखा दो मुझ पर,
सिर बार-बार निवाऊं।
अपने सिर पर . . .।



-'भुजंग' राधेश्याम सेन, बड़े शिव मंदिर के पीछे, मंगलीपेठ, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

ऐसे तिस को पाया

सुत बनिता गृह एश्चर्य, मान जगत में पाया।
हर दम घटि में सुमिरन कर, जिसते सब किछ आया।
जिस ते आया तिस क्यूं भूले, माया माहिं लपटाया।
करन कारण सब किछ किया, मन ते काहे भुलाया।
मन भुलाये व्याप्त सब रोगा, अग्नि विकार जलाया।
पांच चोर राजा हुए तब, तू दासन दास बनाया।
ध्यान धर्म जब बातन छेड़ी, उसमें भी अहं छुपाया।
प्रभु-भक्ति व्यापार बना कर, ईश का तत्व गंवाया।
त्यागन का जो ढोंग रचाया, मन तो वहीं लपटाया।
ऐसो न भया प्रभु प्राप्त, जीवन मूढ़ गंवाया।
अंजन माहिं निरंजन बना जब, आपन रेण बनाया।
हरि-दर्शन तब अंतर होय, जब अपना आप गंवाया।
घर-बाहर 'कंवल' किछु न त्यागा, वन-वन न भटकाया।
जीवत, हसत, बसत जगत मो, ऐसे तिस को पाया।

-स. कंवलदीप सिंघ 'कंवल'



"सिक्ख रिलीजन" कृत मैकालिफ में श्री गुरु हरिराय साहिब का जीवन-ब्यौरा

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

सिक्ख इतिहास एवं परंपरा के महान विद्वान मैक्स आर्थर मैकालिफ ने छह खंडों में "सिक्ख रिलीजन" नामक ग्रंथ की रचना की है। इसके चौथे खंड में मैकालिफ ने सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-वृत्तांत को प्रस्तुत किया है।

अवतार धारण करना : मैकालिफ के अनुसार श्री गुरु हरिराय साहिब ने माघ महीने के शुक्ल पक्ष की तेरहवीं वाले दिन संवत् १६८७ वि. (अधिकतर स्रोतों में संवत् १६८६) को पिता गुरदित्ता जी एवं माता नत्थी जी के घर अवतार धारण किया। छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब आपके दादा जी थे।

श्री गुरु हरिराय साहिब का सारा जीवन कीरतपुर साहिब के प्राकृतिक वातावरण में बीता, इसलिए आपकी प्रकृति अत्यंत कोमल, भावुक और संवेदनशील होती चली गयी। आपके बचपन की एक घटना है कि आप एक बड़ा चोला पहनकर फुलवारी में चले गये। लंबे चोले में अटक कर कई फूल झर कर भूमि पर बिखर गये। फूलों को यूं झरता देखकर आपको बहुत दुख हुआ। आपके दादा जी छठम पातशाह ने समझाया कि चोला बड़ा हो तो संभल कर चलना चाहिए। आपने इस सीख को हृदय में बसा लिया।

गुरगद्दी की प्राप्ति : श्री गुरु हरिराय साहिब की गुरगद्दी की प्राप्ति की परिस्थितियों का मैकालिफ ने सुंदर अंकन किया है। मैकालिफ लिखता है कि छठम पातशाह के पांच पुत्रों में से बाबा गुरदित्ता जी एवं बाबा अटल राय जी पहले ही अकाल चलाणा कर गये थे। श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब बकाला गांव में जाकर भक्ति में लीन हो गये थे। अन्य दो पुत्र बाबा सूरज मल और बाबा अणीराय सांसारिकता में रत थे। बाबा गुरदित्ता जी के दो पुत्र धीरमल और श्री (गुरु) हरिराय साहिब थे। धीरमल गुरु-घर के लिए विश्वासघाती और अवज्ञाकारी सिद्ध हुआ। सो, श्री (गुरु) हरिराय साहिब की योग्यता एवं आध्यात्मिक उन्नति को सामने रखते हुए छठम पातशाह ने छोटी उम्र के बावजूद गुरगद्दी की महान जिम्मेदारी श्री गुरु हरिराय साहिब को सौंपी। चैत्र कृष्ण पक्ष त्रयोदशी संवत् १७०१ वि. के दिन मात्र साढ़े सत्रह वर्ष की आयु में श्री गुरु हरिराय साहिब सप्तम गुरु के रूप में गुरगद्दी पर सुशोभित हुए।

व्यक्तित्व एवं दिनचर्या : सप्तम पातशाह ने अपने दादा जी छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा स्थापित सभी नीतियों का पूरा पालन किया। गुरु सतवें पातशाह के काल में भी सिक्खों के सैनिक अभ्यास तथा मशकें निरंतर चलती रहीं। गुरु जी के पास २२०० सिक्खों की एक बड़ी सेना थी। गुरु जी स्वयं भी शस्त्र धारण करते थे।

गुरु सतवें पातशाह की दिनचर्या भी वही थी जो छठम पातशाह ने स्थापित की थी। गुरु जी सारा दिन आध्यात्मिक चर्चा में बिताते और शाम को शिकार खेलने जाते। गुरु जी अक्सर पशुओं को जंगल से साथ ले आते और अपने पशु-उद्यान में छोड़ देते। गुरु जी शाम को दरबार लगाते और सिक्खों को उपदेश देते।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

साथ ही वीर-रसात्मक वारों का गायन होता।
दवाखाने की सेवा : सातवें पातशाह बहुत अच्छे वैद्य थे। दयालु प्रवृत्ति होने के कारण गुरु जी ने एक दवाखाना खोल रखा था, जहां गरीबों और बीमारों का इलाज किया जाता था।

इस संदर्भ में मैकालिफ ने एक बहुत ही सुंदर प्रसंग का जिक्र किया है। बादशाह शाहजहां के चार पुत्र थे--दाराशिकोह, शुजा, मुराद और औरंगजेब। दारा सबसे बड़ा और तख्त का वारिस था। वह अपने पिता को भी बेहद प्यारा था। औरंगजेब चालाक, होशियार तथा महत्वाकांक्षी था और तख्त पर बैठना चाहता था। उसने स्वादिष्ट भोजन के साथ चीते की मूंछें दारा को खिला दीं, जिसके कारण वह भयानक रूप से बीमार पड़ गया। अच्छे से अच्छा हकीम भी दारा का इलाज न कर सका।

अंतत: कुछ सियाने हकीमों की सलाह पर गुरु जी को प्रार्थना की गई। गुरु जी ने त्रिफला और लौंग से बनी ऐसी औषधि दी कि दारा स्वस्थ हो गया। मुगल बादशाह शाहजहां सिक्खों से पुरानी दुश्मनी भूलकर गुरु साहिब के सम्मुख नत्मस्तक हो गया।

दाराशिकोह की मदद : उधर दिल्ली में शाहजहां के बीमार पड़ने पर औरंगजेब ने तख्त पर कब्जा कर भाइयों को कैद कर लिया। युद्ध में हारकर दारा पंजाब की ओर भाग आया। बड़े प्रयासों के बाद दारा गुरु साहिब से भेंट करने में सफल रहा। गुरु जी ने दारा के आध्यात्मिक ज्ञान की प्रशंसा की और उसकी हौंसला-अफजाई की। अंतत: औरंगजेब बादशाह बन गया और दाराशिकोह मारा गया।

औरंगजेब से शिकायत--रामराय का मुगल दरबार में जाना : औरंगजेब कट्टर मुसलमान था, इसलिए गुरु-घर के विरोधियों को अवसर मिल गया। औरंगजेब से शिकायत की गई कि गुरु जी इसलाम से अलग एक नया धर्म चला रहे हैं और यह भी कि उन्होंने दारा की सहायता भी की थी। बादशाह ने स्पष्टीकरण देने के लिए गुरु साहिब को दिल्ली बुलाया।

गुरु साहिब ने अपने बड़े पुत्र रामराय को मुगल दरबार में भेजा। रामराय कमजोर निकला। उसने औरंगजेब को खुश करने के लिए कई करामातें दिखाईं और गुरबाणी के गलत अर्थ करके सुनाये। मैकालिफ ने इस प्रसंग में ***"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर"*** के स्थान पर ***"मिटी बेईमान की पेड़ै पई कुम्हिआर"*** कहने वाली घटना का जिक्र किया है।

जब गुरु पातशाह को इसका पता चला तो उन्होंने गुरमति-विरोधी कृत्य करने वाले कमजोर व्यक्तित्व के रामराय का परित्याग कर दिया। रामराय ने धीरमल की सहायता से गुरगद्दी पर अपना हक जताने की कोशिश की, पर उसकी एक न चली और आखिरकार वह दून घाटी में चला गया।

श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी : सप्तम पातशाह ने समय आने पर अपने छोटे पुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को सभी प्रकार से योग्य जानकर सन् १६६१ ई. में गुरगद्दी की जिम्मेदारी सौंप दी।

मैकालिफ लिखता है कि सप्तम पातशाह ने बाल गुरु श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को आसन पर बिठाया। तीन बार परिक्रमा करके श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को सिक्ख पंथ की जिम्मेदारी सौंप दी। गुरु जी ने सिक्खों को उपदेश दिया कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को उनका ही रूप समझा जाये।

ज्योति-जोत समाना : मैकालिफ लिखता है कि इसके उपरांत श्री गुरु हरिराय साहिब ने प्रभु रजा में नेत्र मूंदे और कार्तिक के अंधेरे पक्ष की नवमी, दिन रविवार, संवत् १७१८ वि. (सन् १६६१ ई.) को ज्योति-जोत समा गये।



"History of the Sikhs" कृत कनिंघम में वर्णित श्री गुरु हरिराय साहिब का जीवन

*-प्रो सुरिंदर कौर**

श्री गुरु हरिराय साहिब का गुरतागद्दी पर विराजमान होना सिक्ख गुरु परंपरा में एक नए अध्याय को जोड़ता है। गुरु-घर में सदा ही गुरतागद्दी के लिए रक्त-संबंधों से अधिक महत्व योग्यता को दिया गया है, जिसके अंतर्गत श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने अनन्य शिष्यों में से परीक्षा द्वारा चुनाव कर गुरतागद्दी की जिम्मेदारी सौंपी। श्री गुरु अमरदास जी ने भी कठोर परीक्षा के बाद इस कसौटी पर खरे उतरने वाले अपने दामाद श्री (गुरु) रामदास जी का चयन किया। उनके बाद भी परीक्षा और योग्यता की कसौटी वही रही। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भी योग्यता की कसौटी का पूरा पालन किया और श्री (गुरु) हरिराय साहिब का चयन किया। श्री गुरु हरिराय साहिब बाबा गुरदित्ता जी के सपुत्र हैं और बाबा गुरदित्ता जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के सपुत्र। एक वंश आगे लांघकर उन्होंने सर्वथा उपयुक्त जानकर अपने पौत्र (पोते) को गुरतागद्दी सौंपी जो सिक्ख इतिहास में पहली बार हुआ था।

पुस्तक "History of the Sikhs" में कनिंघम ने श्री गुरु हरिराय साहिब पर बहुत ज्यादा तो नहीं लिखा है फिर भी कई महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख उन्होंने अवश्य किया है जिसमें से सर्वप्रथम उनका गुरतागद्दी के लिए चुनाव होना ही है। कनिंघम ने प्राप्त स्रोतों के आधार पर गुरु साहिब का जन्म सन् १६२८ या १६२९ का बताया है। वे तिथि के लिए आश्वस्त नहीं हैं जबकि अधिकतर स्रोतों में सन् १६३० लिखा है। जन्म-स्थान कीरतपुर साहिब ही बताया है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दो सपुत्र बाबा अटल राय जी और बाबा अणीराय जी बहुत छोटी आयु में ही कालवश हो गए और बाबा गुरदित्ता जी उदासी मत से बहुत प्रभावित थे। गुरु जी के छोटे सपुत्र तिआगमल (श्री गुरु तेग बहादर जी) अभी आध्यात्मिक साधना में रत थे। (कदाचित् उन्हें भविष्य के लिए गुरु साहिब ने अधिक उपयुक्त जाना।) अपने अंतिम समय में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने पोते श्री (गुरु) हरिराय साहिब को पूरी तरह से योग्य जानकर गुरतागद्दी सौंप दी। यह घटना सन् १६४४ की है। गुरतागद्दी संभालते समय श्री गुरु हरिराय साहिब की आयु केवल चौदह वर्ष की थी, फिर भी उन्होंने गुरु-पंथ का संपूर्ण उत्तरदायित्व बड़ी कुशलता से निभाया।

प्रचार व प्रसार : गुरु साहिब ने गुरतागद्दी संभालते ही सिक्खी सिद्धांतों का प्रचार व प्रसार आरंभ कर दिया। उनकी कार्य-स्थली मुख्यत: कीरतपुर साहिब ही रही। कनिंघम के शब्दों में- "उन्होंने अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान और अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के उपदेशों को बाखूबी समझा और प्रचार किया, जिनमें से एक ईश्वर की आराधना और मूर्ति-पूजा के खंडन पर उन्होंने बहुत बल दिया। उन्होंने गुरबाणी में वर्णित ईश्वर के सृजनात्मक रूप के समक्ष

R No. 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jija Mata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob. 8097310773

सभी को नत्मस्तक होने को कहा, साथ ही भौतिक सुखों को छोड़कर, जो कि केवल एक छलावे की तरह प्रतीत होते हैं, अपने मन को एकाग्र कर हरि-चरणों में समर्पित करने का उपदेश दिया।[१]

गुरु-घर की शिक्षा और प्रचार का ही परिणाम था कि सिक्ख ईश्वर को समझते थे और इसलिए ही इतने निडर और आश्वस्त थे। केवल इतना ही नहीं जिस समय पंजाब में अकाल पड़ा उस समय श्री गुरु हरिराय साहिब अपने सिक्खों समेत पीड़ितों की सहायता के लिए उठ खड़े हुए। आपने गांव-गांव घूमकर मदद पहुंचाई और दुखियों को प्रभु-नाम का मरहम लगाया। वास्तव में सरकारी अधिकारी अपना कर्त्तव्य निभाने में विफल रहे। श्री गुरु नानक देव जी का दर ही एक मात्र ऐसा दर है जहां न केवल पुकारने वाले की ही पुकार सुनी जाती है, वरन् अनसुनी पुकारों और दबी आवाजों को भी गुरु साहिब समझ लेते हैं तथा बिन मांगे ही उन तक मदद भी पहुंच जाती है। ठीक इसी प्रकार तब भी हुआ जब शाहजहां ने धार्मिक कठोरता वाले नियम आम जनता पर लागू किए जिनमें से नए बने मंदिरों को तुड़ाया गया, पुराने मंदिरों की मरम्मत रोक दी गई।

हिंदुओं पर विशेष धार्मिक कर (जजिया) लगा दिया गया। वैसे सिक्खों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, परंतु सारी हिंदू जनता सहमी हुई थी। सिक्ख धर्म धार्मिक स्वतंत्रता में विश्वास रखता है। न तो किसी को यह अधिकार है कि जबरन अपना धर्म दूसरे पर थोपे और न ही किसी के डर के कारण दूसरे का धर्म स्वीकारने की आवश्यकता है। श्री गुरु हरिराय साहिब हालात को समझ रहे थे। इस समय जनता को नैतिक आधार की आवश्यकता थी और सतिगुरु के अतिरिक्त यह आधार और कौन दे सकता था? एक बार फिर गुरु साहिब बेसहारों का सहारा बनने के लिए उठ खड़े हुए और गांव-गांव जाकर लोगों को नाम का आधार देने लगे। सन् १६५४ से १६५८ तक चार वर्ष गुरु साहिब माझा, मालवा और दोआबा के क्षेत्रों में भ्रमण करते रहे।

दाराशिकोह से संबंध : दाराशिकोह, शुजाह, औरंगजेब और मुराद, चारों शाहजहां के पुत्र थे। शाहजहां ने भारत के चार प्रमुख हिस्सों की बागडोर इन्हीं के हाथों में सौंप रखी थी, जिसमें से पंजाब व उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र दाराशिकोह की सरपरस्ती में थे। वह अपने अन्य भाइयों से अधिक समझदार व आध्यात्मिक व्यक्ति था। वह भारत में प्रचलित धर्म-मतों, संप्रदायों और विचारधाराओं के प्रति सहिष्णु था। जिस समय पंजाब और अन्य उत्तर भारतीय क्षेत्रों पर अकाल की मार पड़ी तब भी उसने शाही कर्मचारियों का ढीलाढाला बर्ताव और गुरु साहिब समेत सिक्खों की नि:स्वार्थ और अनथक सेवा को देखा था, इसलिए वह न केवल गुरु साहिब के व्यक्तित्व से ही बल्कि गुरमति सिद्धांतों से भी बहुत प्रभावित था। इतिहास में दाराशिकोह और गुरु साहिब के बीच कीरतपुर साहिब में कुछेक बार मुलाकातों का भी उल्लेख मिलता है जो शुद्ध रूप से आध्यात्मिक व व्यक्तिगत थीं। इनका किसी भी राजनीतिक गतिविधि से कोई संबंध नहीं था। सन् १६५८ तक सब कुछ ठीक ठाक था। उसी काल में शाहजहां की बीमारी की हालत में चारों भाइयों में सत्ता को लेकर संघर्ष शुरू हो गया। औरंगजेब सभी में चतुर था। उसने बारी-बारी बाकी भाइयों से युद्ध कर उन्हें हरा दिया। दाराशिकोह तो अच्छे दिल का व्यक्ति था, परंतु उसमें न तो सत्ता चलाने के

लिए कूटनीति थी और न ही वह युद्ध लड़ने में एक समर्थ योद्धा था। कई मुहिमों पर औरंगजेब से मात खाकर वह उत्तरी भारत में कई नगरों में भागता फिरा। सन् १६५९ में औरंगजेब ने आखिर अपने आप को देश का अगला बादशाह स्थापित कर ही दिया। हालांकि सिक्खों के पास न तो बहुत बड़ी फौजी ताकत थी और न ही बहुत प्रशिक्षित सैनिक, फिर भी उसे यह शक था कि बगावत के लिए दाराशिकोह को गुरु-घर से सहायता मिली है, जबकि वह स्वयं भी जानता था कि दाराशिकोह के पास इससे कई गुना बड़ी अपनी फौज मौजूद है। उसके इस शक का फायदा गुरमति विरोधी शक्तियों ने उठाया और औरंगजेब को गुरु साहिब के विरुद्ध और उकसाया। वास्तविक कारण तो यह था कि गुरु पंथ की दिनोदिन बढ़ती ख्याति को देखकर उसकी सहनशीलता जवाब दे गई थी। अत: उसने शाही फरमान द्वारा गुरु साहिब से मिलकर स्पष्टीकरण देने की बात सामने रखी। गुरु साहिब ने अपने स्थान पर अपने सपुत्र रामराय को वहां भेज दिया। ऐसा करने का भी एक कारण था। एक तो स्वयं गुरु साहिब इससे ज्यादा महत्वपूर्ण काम में व्यस्त थे और संगत से विमुख होकर चला जाना सही नीति नहीं होती, किसी प्रतिनिधि को भेजना अधिक उपयुक्त था और रामराय इस लिहाज से सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति था।

रामराय की औरंगजेब से भेंट : रामराय के बारे में ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि वह बहुत ही कुशाग्र बुद्धि वाला और हाजिर-जवाब था। उससे यह आशा थी कि वह गुरमति सिद्धांतों की पैरवी करेगा। कीरतपुर साहिब से चलते समय गुरु साहिब ने उसके साथ कुछ प्रमुख सिक्खों को भी भेजा, साथ ही यह हिदायत भी दी कि हर काम गुरु-मर्यादानुसार ही करना।

मुगल दरबार में रामराय का विशेष स्वागत हुआ, यहां तक कि धार्मिक रूप से असहिष्णु औरंगजेब पर भी उनका बहुत प्रभाव पड़ा, साथ ही वह गुरमति सिद्धांतों से भी अवगत हुआ। कनिंघम ने इस सारे वृत्तांत का उल्लेख किया है।[२] उन्होंने जिन स्रोतों से इस घटना के सूत्र प्राप्त किए उनके अनुसार रामराय की गिरफ्तारी और रिहाई की बात कही गई है जो अन्य स्रोतों में नहीं मिलती। हां, एक बात अवश्य है कि औरंगजेब एक कट्टरपंथी राजनीतिक था। वह कोई भी काम ऐसा नहीं करेगा जिसमें उसका हित न हो। उसने रामराय से प्रभावित होकर उन्हें अपनी ओर करने का प्रयास किया।

दूसरी ओर मुगल दरबार में मौजूद सिक्ख विरोधी शक्तियां भी लंबे समय से किसी मौके की ताक में थीं। गुरु-घर द्वारा दारा को बगावत में शह देने वाली बात भी निराधार साबित हुई। औरंगजेब का रामराय की ओर झुकाव देखकर इन लोगों ने इससे भी फायदा उठाने की सोची। वे लोग नित्यप्रति रामराय से सिक्ख धर्म-संबंधी प्रश्न पूछते रहते और रामराय आयु छोटी होने पर भी बड़ी ही समझदारी भरे उत्तर देता, परंतु पंथ-विरोधियों के गलत इरादे को वो समझ न सका।

एक बार ऐसे ही कुछ सज्जनों ने औरंगजेब की उपस्थिति में रामराय से प्रश्न किया कि श्री गुरु नानक देव जी ने कहा है: *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"* इसका क्या अर्थ है? रामराय सही अर्थ समझता था परंतु शाही दरबार के साथ बने अपने संबंध के बिगड़ जाने के डर से उसने कहा कि गुरु साहिब ने तो वास्तव में "मिटी बेईमान की"

कहा था, लिखने वाले से भूल हो गई है। जब गुरबाणी की बेअदबी की सूचना गुरु साहिब तक पहुंची तो उन्होंने वहीं से रामराय को संदेश भिजवा दिया कि आज से तुम कभी मेरे माथे मत लगना। पंथ-विरोधियों की गुरु-घर में फूट डलवाने की चाल कामयाब हो गई। इस बात को और विवादास्पद बनाने हेतु और रामराय को यह दृढ़ करवाने हेतु कि हम तुम्हारे शुभचिंतक हैं, औरंगजेब ने उन्हें जागीर देकर अलग रहने की व्यवस्था कर दी।

ज्योति-जोत समाना : इस घटना से गुरु साहिब बहुत व्यथित हुए। दुख इस बात का नहीं था कि उन्हें अपने पुत्र से दूर होना पड़ा, दुख इस बात का था कि रामराय ने गुरबाणी का निरादर केवल किसी व्यक्ति को सांसारिक संबंधों हेतु खुश करने के लिए किया था। अपना अंतिम समय निकट आया जानकर और हर प्रकार से उपयुक्त समझकर उन्होंने अपने छोटे साहिबजादे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को पांच वर्ष की अल्प आयु में गुरतागद्दी सौंप दी और सन् १६६१ में कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए। कनिंघम ने इस तिथि का सही उल्लेख करते हुए संक्षेप में गुरु साहिब के महान व्यक्तित्व की कुछ विशेष बातों को अंकित किया है।

श्री गुरु हरिराय साहिब का व्यक्तित्व : कनिंघम ने लिखा है कि गुरु साहिब का स्वभाव बहुत ही सौम्य और कोमल था। उनके दिल में सभी के लिए आदर था और वे सभी से बड़े प्रेम से बोलते थे, जिसके कारण लोग उनसे बहुत स्नेह रखते थे और उनका सत्कार करते थे। उनके काल के कुछ अनुयायियों, जिन्हें वे 'भाई' कहते थे, के वंशज आज (कनिंघम के समय में) भी गुरु-घर की सेवा में दिखाई देते हैं।[३] वैसे वर्तमान काल में भी गुरु-घर में सेवा निभाने वाले को 'भाई' ही कहकर संबोधित किया जाता है जिसका आरंभ स्वयं गुरु नानक साहिब ने किया था। फिर चाहे वह व्यक्ति कभी गुरु साहिब का साथी रहा हो या नहीं।[४]

गुरु साहिब को औषधियों की भी बहुत अच्छी जानकारी थी। इतिहास में इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि उन्होंने कीरतपुर साहिब में एक बहुत बड़ी औषधिशाला भी बनवाई थी और आम दवाइयों के साथ-साथ कई दुर्लभ दवाइयों का भी संग्रह किया था। दीन-दुखियों और निर्धनों का वहां नि:शुल्क इलाज किया जाता था। गुरु साहिब के स्वभाव की विशालता, निरवैरता और कोमलता का पता इसी बात से चल जाता है कि मुगलों द्वारा गुरु-घर पर ढाये जुल्मों के बावजूद वे दाराशिकोह के प्राणों की रक्षा हेतु दवाइयां भेजते हैं। यह गुरु साहिब का महान योगदान है कि उन्होंने सेवा में चिकित्सा को सम्मिलित कर दिया और गुरु-घर द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं को और अधिक बहुआयामी बनाया। श्री गुरु हरिराय साहिब ने चिकित्सा की सेवा को गुरमति-धारा से जोड़कर एक अद्वितीय सोच व समर्पण का प्रमाण दिया। उनके समय के सिक्खों का नाम इतिहास में आदर के साथ लिया जाता है, जैसे भाई फेरू जी, भाई जिउणा जी, भाई गउरा जी आदि।

श्री गुरु हरिराय साहिब के संपूर्ण व्यक्तित्व को कुछ सीमित शब्दों में बयान करना संभव नहीं है। एक सिक्ख होने के नाते उन्हें समझने के लिए हमें उनके बताए रास्ते पर चलकर नाम जपते हुए नि:स्वार्थ सेवा करना ही श्रेयस्कर होगा।

संदर्भ सूची :

1. Har Rai succeeds as Guru in 1645, moded each of

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

"सिक्ख इतिहास" कृत प्रिं. सतिबीर सिंघ में श्री गुरु हरिराय साहिब सम्बंधी विवरण

*-प्रिं. अमरजीत कौर**

प्रिं. सतिबीर सिंघ ने "सिक्ख इतिहास" शृंखला की सातवीं पुस्तक 'निरभउ निरवैरु' में श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन पर रौशनी डाली है। पुस्तक के पहले और दूसरे अध्याय में लेखक ने श्री गुरु हरिराय साहिब के दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जीवन, परिवार और जंगों का जिक्र किया है। दूसरे अध्याय में जंगों के साथ लेखक ने श्री गुरु हरिराय साहिब के जन्म के बारे में भी वर्णन किया है। श्री गुरु हरिराय साहिब के जन्म के बारे में लेखक लिखता है : 'श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अमृतसर में ही थे कि कीरतपुर साहिब से खबर पहुंची कि बाबा गुरदित्ता जी के घर और माता राज कौर जी की कोख से बालक ने जन्म लिया है। आप जी ने उसी समय वचन किए : 'बड़ी चीज (वस्तु) का ग्राहक आया है।' बालक का तेज बहुत था। उस दिन ३० जनवरी, सन् १६३० दिन रविवार था। गुरु साहिब खबर सुनते ही कीरतपुर साहिब की ओर चल पड़े। रास्ते में खुशियां बिखेरते आए। बालक को गोद में लेकर कितने ही वर दिए और नाम 'हरिराय' रखा और फरमाया कि यह 'धरती का भार कम करने के लिए संसार में आया है।'

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री (गुरु) हरिराय साहिब का पालन-पोषण अपनी निगरानी में करवाया। दादा-गुरु की नम्रता, दिलेरी, सिक्खों से प्यार, संयम की छाप नित्य उन पर पड़ रही थी। लेखक लिखता है : 'श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जो भी वचन करते श्री (गुरु) हरिराय साहिब न सिर्फ उन पर चलते बल्कि डटकर पहरा भी देते। एक बार ऐसा हुआ कि गुरु साहिब और श्री (गुरु) हरिराय साहिब बाग में सैर को जा रहे थे। फूल खिला देख आप जी ने फूल और माली की सराहना की। जब सैर से वापिस मुड़े तो फूल को पौधे के साथ न देख आश्चर्यचकित हुए और पूछ बैठे कि फूल कहां गया? अंगरक्षकों ने कहा कि आपके पौत्र के कलियों वाले चोले के साथ टकराकर टूट गया था। गुरु जी ने पास बुलाया और केवल इतना फरमाया : 'दामन संकोच कर चलो। जामा बड़ा पहना हो तो संभाल कर चलो। कुछ प्राप्त हो जाए तो दूसरों को ठेस न पहुंचाओ। पाकर संतोष करना ही गुरु-घर की श्रेष्ठता है।' इन वचनों को श्री (गुरु) हरिराय साहिब ने सारी उम्र अपने पल्लू के साथ बांधे रखा।

लेखक ने तीसरे अध्याय में श्री (गुरु) हरिराय साहिब को गुरगद्दी देने का जिक्र 'पोतरा परवाणु' शीर्षक में किया है। लेखक लिखता है कि होली के दिन थे। सभी ओर बसंत खिली थी। संगत को इस बार गुरु साहिब ने विशेष बुलाया था। तीन दिन संगत आनंद लेती रही। ढाढी वारें गाकर सब में अद्भुत साहस भर रहे थे। चौथे दिन सबको दरबार में बुलाया। श्री (गुरु) हरिराय साहिब की छवि किसी से भी संभाली नहीं जाती थी। आयु बेशक कम थी, लेकिन चेहरे की शांति और नूर

**३५२, गुरु नानक नगर, नजदीक गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५, मो : ९७८१६०६९२२*

से निराली छवि छा रही थी। 'आसा की वार' के कीर्तन के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने सिंघासन से उठे और तख्त पर श्री गुरु हरिराय साहिब को बिठाया, परिक्रमा की। बाबा भाना जी ने गुरगद्दी सम्बंधी रस्मों को निभाया। सभी ने श्री गुरु हरिराय साहिब को माथा टेका। इसके सात दिन बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ३ मार्च, १६४४ को ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपना नित्य-कर्म ऐसा बनाया जिससे कौम रौशनी लेकर जीवन-पथ आसान कर सके। लेखक लिखता है, 'पहिर रात रहती आप जी जागते, स्नान करते, फिर वस्त्र पहन समाधि लगाते। जब प्रभात होती सतसंग में आते, श्री गुरु ग्रंथ साहिब का वाक लेते, पाठ सुनते और फिर रबाबियों से 'आसा की वार' का कीर्तन करवाते। समाप्ति के बाद लंगर में से प्रसाद छकते। कुछ समय आराम करने के बाद शिकार पर जाते, शिकार जिंदा ही पकड़ते। शाम को फिर कथा होती जो गुरु साहिब स्वयं करते। दवाखाना देखते, रोगियों को निरोग करते। फिर 'सो दरु' की चौकी में संगत में जाते और दीवान सजाते। लंगर छककर 'सोहिला' का पाठ करके विराज जाते। कीरतपुर साहिब में जब भी होते यही जुगत (युक्ति) बरताते।'

श्री गुरु हरिराय साहिब की शादी अनूप शहर निवासी भाई दयाराम की सपुत्री बीबी सुलक्खणी जी के साथ जून १६४७ ई में हुई। बीबी सुलक्खणी जी का नाम शादी के बाद 'किशन कौर' रखा गया।

गुरु साहिब का यश दूर-दूर तक फैल गया। गुरु साहिब की कीर्ति के गुण गाए जाते थे। लेखक लिखता है कि गुरु जी का यश चारों ओर सूर्य की किरणों की तरह फैल रहा था। उनके दरबार की सज्जा भी निराली और अद्‌भुत थी। आप जी के चेहरे की नूरानी झलक सब हाजिर संगत में जीवन-रस भर देती। ऊंच-नीच, अमीर-गरीब का भेद गुरु जी के दरबार में नहीं था। गुरु साहिब सबको नाम-बाणी का उपदेश देते जिसे प्राप्त कर संगत गदगद हो जाती और अपना जीवन सुखी बनाती। गुरु साहिब अपने दरबार में आए शरणागती के सब आशंके दूर करते। गुरु साहिब उपदेश देते कि आगे किसी की सिफारिश नहीं चलती, अपना अच्छा स्वभाव और शुभ कर्म ही काम आते हैं। जीवन इसी लिए मिला है कि उसका नाम कमाया और पकाया जाए।

अध्याय ६ में लेखक ने गुरु साहिब द्वारा संगत को दिए उपदेशों को साखियों सहित निरूपित किया है।

अध्याय ७ में लेखक ने गुरु साहिब द्वारा सिक्खी के निरोल प्रचार के लिए दी गई बख्शिशों का जिक्र किया है। लेखक के अनुसार गुरु साहिब ने उन शुद्ध हृदय वाले जीवों को ही बख्शिशें दीं जिन्हें उन्होंने चुन-संवार कर, योग्य बना सिक्खी के निरोल प्रचार में लगाया और गुरु साहिब की इन बख्शिशों के कारण ही पंजाब तथा दूसरे राज्यों में कोई ऐसा स्थान न रहा जहां धर्मशाला न हो, लंगर न लगे हों और विद्या तथा सेवा का केंद्र न बना हो। गुरु साहिब द्वारा बख्शिशें पाने वाले सिक्ख थे--१) बखश संगत साहिब, २) भगतभगवान, ३) बखश सुथरे शाह, ४) भाई मीहां साहिब, ५) बखश बखतमलीए, ६) बखश जीतमलीए।

मालवा की संगत गुरु साहिब के दर्शन को तरस रही थी। उनके मुखी सिक्ख आकर गुरु साहिब को विनती करते और अपने इलाके में

चरण पाने को कहते। संगत की पुकार पर गुरु साहिब सन् १६५५ को कीरतपुर साहिब से रोपड़ की ओर रवाना हुए।

लेखक लिखता है कि गुरु साहिब सबसे पहले रोपड़ पहुंचे। वहां तीन दिन रुकने के बाद हुशियारपुर के गांव वड्डी लाहली से होते हुए हरीआं वेलां, भुंगाणी साहिब, चौंतरा साहिब, करतारपुर (जलंधर), नूरमहिल, पुआंदड़ा साहिब, डरोली, जीरा, रांगड़, लक्खी जंगल, बहिबल से मेहराज, तखतूपुरा गहिल से भदौड़, पिहोवा, थानेसर से होते हुए कुरुक्षेत्र में भाई काकरू के आम के बाग में ठहराव किया। वहां से वापिस कीरतपुर साहिब ठिकाना किया। यह यात्रा लगभग एक साल तीन महीने की थी।

इसके बाद गुरु साहिब माझा इलाके के प्रचार दौरे पर निकले। आप कीरतपुर साहिब से चलकर फगवाड़ा, करतारपुर, बाबा बकाला गए (यहां पर उन्हें श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब मिले), वहां से खडूर साहिब होते हुए गोइंदवाल पहुंचे। आगे लेखक लिखता है कि उधर बादशाह शाहजहां के बीमार पड़ने पर दिल्ली के तख्त के लिए बादशाह के पुत्रों में लड़ाई छिड़ गई। शाहजहां दाराशिकोह को बादशाह बनाना चाहता था लेकिन औरंगजेब चालाक था। उसने बाकी भाइयों को चालाकी से अपनी तरफ कर लिया और दारा तथा औरंगजेब के बीच लड़ाई छिड़ गई। दारा को हराकर औरंगजेब बादशाह बना। दारा अपनी जान की सलामती के लिए लाहौर की तरफ भागा। रास्ते में वो कीरतपुर साहिब रुका। गुरु साहिब के गोइंदवाल होने की सूचना मिलने पर वो वहां गया और गुरु साहिब से विनती की कि मेरे लाहौर पहुंचने तक औरंगजेब की फौज को सतलुज पार न करने दीजिए। गुरु साहिब ने अपनी फौज को सतलुज के किनारे भेज दिया। रात भर औरंगजेब की सेना को रोके रखा। इस तरह गुरु साहिब ने दारा की मदद की। गोइंदवाल से गुरु साहिब श्री अमृतसर पहुंचे और श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंध को सुचारू किया। श्री अमृतसर से लाहौर, डेहरा साहिब, चूनामंडी से होते हुए ननकाणा साहिब पहुंचे। वहां पहले सतिगुरु श्री गुरु नानक देव जी के जन्म-स्थान के दर्शन किए। वहां से करतारपुर (रावी) होते हुए सियालकोट पहुंचे। वहां संगत को उपदेश देकर कशमीर से वापिस कीरतपुर साहिब आ गए।

अध्याय ११ में लेखक ने औरंगजेब और गुरु साहिब की आपस में हुई चिट्ठी-पत्रों द्वारा वार्तालाप, औरंगजेब द्वारा गुरु साहिब को दिल्ली बुलाना, गुरु साहिब का दिल्ली न जाना, लेकिन औरंगजेब द्वारा बार-बार पत्र लिखकर दिल्ली बुलाना, गुरु साहिब द्वारा मुखी सिक्खों से सलाह कर अपने बड़े बेटे रामराय को दिल्ली भेजने का जिक्र किया है। लेखक गुरु साहिब द्वारा रामराय को दिल्ली भेजने से पहले दी गई हिदायतों का वर्णन करते हुए लिखता है कि "बेटा! मन में शंका नहीं लाना, भय नहीं रखना, करामात नहीं दिखानी, बादशाह को खुश करने के लिए खुशामद का सहारा नहीं लेना, बादशाह जो भी पूछे उसका जवाब निडर होकर देना, श्री गुरु नानक देव जी के घर के उलट नहीं चलना। रामराय पहले तो औरंगजेब को सच्चाई से जवाब देता रहा, लेकिन बादशाह द्वारा की मेहमाननिवाजी से उसका मन फिसल गया और वो करामात दिखाने लगा। यहां तक कि गुरबाणी पर पूछे गए औरंगजेब के प्रश्न पर उसने गुरबाणी की पंक्ति ही बदल दी और बादशाह को उसका गलत पाठ पढ़ कर सुनाया।

जब इस बात का पता गुरु साहिब को लगा तो गुरु साहिब ने कहा कि 'तुर्कों की खुशामद के लिए श्री गुरु नानक देव जी के वचन बदले हैं। नालायक अपना सारा विरसा ही भूल गया है। वो अब मेरे माथे न लगे। जिधर मुख है उधर ही चला जाए।'

लेखक आगे लिखता है कि गुरु साहिब को पंथ पर आने वाले खतरों की चिंता होने लगी कि अगर रामराय जैसा डगमगा सकता है तो पंथ के जहाज को खतरों से बचाने के लिए कोई सदीवी इलाज की जरूरत है। इस पर गुरु साहिब ने संगत को इकट्ठा किया और सावधान करते हुए कहने लगे : 'एक पंथक रहिणी और एक वाहिगुरु के प्रेम वाली भक्ति दृढ़ करने से यह बेड़ा जुड़ सकता है। पंथ-दोखियों को उचित दंड मिलने से वे दोबरा सिर नहीं उठा सकेंगे।'

गुरु साहिब के दो पुत्र थे--बड़ा पुत्र रामराय और सपुत्र छोटे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब। गुरु साहिब रामराय तथा श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब दोनों की ही परीक्षाएं ले चुके थे कि कौन आगे जाकर गुरु नानक साहिब की गुरगद्दी का वारिस बन सकता है। श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब गुरु साहिब की प्रत्येक परीक्षा में सफल हुए। गुरु साहिब अपना अंतिम समय नजदीक जान ६ अक्तूबर, १६६१ को अपने छोटे साहिबजादे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी सौंप कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

लेखक पुस्तक के आखिरी अध्याय में श्री गुरु हरिराय साहिब की जीवनी का सारांश लिखता कहता है कि गुरु साहिब 'निरभउ निरवैरु' की प्रत्यक्ष मूरत थे। सारी उम्र उन्होंने किसी से भय नहीं खाया और न ही किसी से वैर कमाया, बल्कि श्री गुरु नानक साहिब के नक्शे-कदम पर चलते आए शरणागत की रक्षा करना अपना प्रथम फर्ज समझा। उन्होंने दुश्मन को भी अपनी दवा से निरोग किया, लंगर की मर्यादा को पक्का किया और अनेकों गुरधामों की स्थापना की।



"History of the Sikhs" कृत कनिंघम में वर्णित . . . *(पृष्ठ ३७ का शेष)*

his successors so far as Hargobind knew or thought of philosphy as a science, he fell into prevailing views of the period, God he said, is one and the world is an illusion on appeerence without a realty, or he would adopt the more pantheistic notion and regard the universe as composing the one being--*History of the Sikhs, Cunningham, page 54.*

2. Harrai has to surrender his elder son as a hostage. The youth was treated with distinction and soon released and the favour of political Aurangzeb is believed to have roused the jealousy of the father. *History of the Sikhs, Cunningham, page 55*

3. His ministry was mild, yet such as won for him general respect and many of the 'Bhais' or brethren, the descendants of the chosen companions of a Guru, trace their descent to one desciple or other distinguished by Harrai--*History of The Sikhs, Cunningham, page 55*

4. Nowadays the title of 'Bhai' is in practice frequently given to any Sikh of eminent sandity, whether his ancestor were the companion of a Guru or not--*History of the Sikhs, Cunningham, page 55*



"सिक्ख इतिहास" कृत प्रिं तेजा सिंघ-डॉ गंडा सिंघ में श्री गुरु हरिराय साहिब

*-बीबी रजवंत कौर**

श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म ३० जनवरी, १६३० ई को कीरतपुर साहिब में हुआ। आप जी के पिता बाबा गुरदित्ता जी थे। बाबा गुरदित्ता जी के दो सपुत्र थे। बड़े पुत्र का नाम धीरमल था और छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिराय साहिब थे। धीरमल गुरु-घर का वफादार नहीं था। वो गुरु जी के दुश्मनों के साथ मिलकर कई प्रकार की साजिशें रचा करता था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की चौथी लड़ाई जो पैंदे खां के साथ हुई थी, उसमें धीरमल ने पैंदे खां का साथ दिया था, इसलिए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री (गुरु) हरिराय साहिब को पंथ की अगवाई के लिए योग्य समझते हुए गुरगद्दी उन्हें सौंपी। उस वक्त आपकी उम्र १४ वर्ष की थी। बचपन से ही आपके स्वभाव में कोमलता थी। आपके कोमल हृदय का पता एक साखी से चलता है।

आप बचपन में एक दिन बगीचे में घूम रहे थे। हवा चल रही थी। जब हवा का एक झोंका जोर से आया तो आपने जो चोला पहन रखा था उसमें हवा भर गई और वो एक फूलों की डाली से जा टकराया। डाली में जो खूबसूरत फूल लगे थे चोले के साथ टकराने से टूट कर जमीन पर गिर गए। फूलों को जमीन पर गिरे देखकर आपका कोमल हृदय दुख से भर गया। इस दृश्य से आपकी आंखों में आंसू आ गए। आप सोचने लगे कि ये फूल मिट्टी में मिल गए हैं। गुरु जी बाबा फरीद जी की बाणी की ये पंक्तियां अक्सर ही गाते रहते थे:

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ *(पन्ना १३८४)*

इसका भाव है कि सभी के दिल अनमोल हैं। जब दिल में परमात्मा के मिलने की इच्छा हो तो किसी का भी दिल नहीं दुखाना चाहिए। गुरु जी कहा करते थे कि मंदिर और मस्जिद की तो मरम्मत हो सकती है पर किसी के टूटे दिल की मरम्मत नहीं हो सकती। आपको बचपन से ही शिकार करने का शौक था। आपके दिल में इतनी दया थी कि आप जानवरों का पीछा करके उन्हें पकड़ तो लेते थे पर उन्हें मारते नहीं थे, बल्कि पकड़कर उन्हें चिड़ियाघर में रखते और उन्हें अच्छी खुराक देते तथा उनका अच्छे तरीके से पालन-पोषण करते थे।

श्री गुरु हरिराय साहिब का स्वभाव नर्म और शांत था। आप अमनपसंद थे। इस सब के होते हुए गुरु जी एक सिपाही भी थे। आपके पास २२०० घुड़सवारों की एक सैनिक टुकड़ी थी, जिसको आप कहीं भी जरूरत पड़ने पर उनसे सहायता ले सकते थे। डॉ गंडा सिंघ के अनुसार जब शाहजहां के पुत्र राजगद्दी के लिए आपस में झगड़ रहे थे तो दाराशिकोह औरंगजेब की फौज से बचकर गोइंदवाल पहुंचा और गुरु जी को कहा कि औरंगजेब की फौज से बचने के लिए उसकी मदद की जाए। गुरु जी ने अपने सैनिक भेजकर औरंगजेब की फौज को

452, Block-B, Sandhu Colony, Chheharta, Sri Amritsar. Mob. : 81466-50449

ब्यास दरिया के किनारे ही रुकने पर मजबूर कर दिया ताकि दाराशिकोह बच कर आगे निकल जाए। इस तरह गुरु जी ने शरण में आए दाराशिकोह की मदद की। जब औरंगजेब को पता चला कि गुरु जी ने दाराशिकोह की मदद की है तो यह बात उसके लिए बहुत दुख देने वाली थी कि उसके दुश्मन की सहायता की गई है, इसलिए यह बात उसके दिल में ही थी। जब औरंगजेब तख्त पर बैठा तो उसने गुरु जी को दिल्ली में हाजिर होने के लिए बुलावा भेजा। श्री गुरु हरिराय साहिब खुद तो नहीं गए मगर उन्होंने अपने पुत्र रामराय को भेज दिया और कहा कि वहां जो भी करना गुरु-घर के अनुसार ही करना, कोई करामात नहीं दिखानी और गुरु-घर के उलट कोई भी बात नहीं करनी।

सिक्ख इतिहास के अनुसार बादशाह औरंगजेब ने रामराय की परख के लिए बहुत-से सवाल पूछे और रामराय बहुत ही सोच-समझ से जवाब देता रहा। बादशाह औरंगजेब रामराय से बहुत प्रभावित हुआ और उसका बहुत ही आदर-सत्कार करने लगा। औरंगजेब के जो काजी और मौलवी थे वे इस बात को सहन नहीं करते थे। वे बादशाह से कोई न कोई ऐसा सवाल करवाते थे कि रामराय गुरु-घर की ऊंची परंपरा के विपरीत कोई जवाब दे। वो दोनों में मतभेद देखना चाहते थे।

एक दिन काजी के कहने पर बादशाह ने रामराय से पूछा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने लिखा है: *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"* इसका क्या भाव है? इसमें मुसलमानों की निंदा क्यों की गई है? रामराय ने इस पंक्ति के एक शब्द को बदलकर कहा कि यह लिखारी की गलती से लिखा गया है। यह शब्द 'मुसलमान' नहीं 'बेईमान' है। रामराय को बादशाह की तरफ से जो इतना आदर-सत्कार मिल रहा था उसको बचाने के लिए उसने गुरु-घर के उलट बात कर दी। बादशाह उसकी इस बात से बहुत खुश हुआ और काजी भी, जो बहुत दिनों से यही मौका देखने के लिए चिंता में था। उसके मन की बात पूरी हो गई। उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। बादशाह ने खुश होकर रामराय को दूर के इलाके में जागीर बख्शिश की।

इस बात का पता जब श्री गुरु हरिराय साहिब को चला तो उनको बहुत दुख हुआ। उन्हें पता चल गया कि रामराय श्री गुरु नानक देव जी के घर के प्रचार की जिम्मेदारी नहीं संभाल सकता, इसलिए उन्होंने सोच लिया कि गुरगद्दी की जिम्मेदारी श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को दी जाए। गुरु जी ने अपने इन विचारों की खबर रामराय को भेज दी कि जीते-जी हमारे माथे मत लगना। रामराय औरंगजेब से दून के इलाके की जागीर लेकर वहां चला गया।

गुरु जी गुरबाणी का बहुत ही सत्कार करते थे। सिक्ख इतिहास के अनुसार कहा जाता है कि एक बार आप कीरतपुर साहिब में चारपाई पर लेटे हुए थे। एक सिक्ख जत्था गुरु जी के दर्शन के लिए शबद-कीर्तन करता हुआ आ रहा था। जब गुरु जी के कानों में शबद-कीर्तन की आवाज पड़ी तो आप जल्दी से चारपाई से नीचे उतर आए। जल्दी में उनको चोट भी लग गई। आपने आगे से दिन के वक्त चारपाई पर लेटना बंद कर दिया कि ऐसा करने से शबद की निरादरी होती है। आपने गुरबाणी के सत्कार की खातिर अपने पुत्र से हमेशा के लिए संबंध तोड़ लिया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने सिक्खी के प्रचार के लिए पहाड़ी इलाके, दोआबा, मालवा और माझा के इलाके में बहुत-से लोगों को सिक्ख बनाया और गुरु-घर से जोड़ा। आप कीरतपुर साहिब से चलकर हरीआं वेलां, बबेली, भुगरनी गांवों से होते हुए करतारपुर में पहुंचे। वहां आपकी याद में गुरुद्वारा मंजी साहिब सुशोभित है। आप करतारपुर लगभग पंद्रह दिन प्रचार करते रहे और वहां से आप श्री अमृतसर आ गए। वहां आप ६ महीने ठहरे और फिर वापिस करतारपुर में चले गए। करतारपुर में लगभग १० महीने सिक्खी का प्रचार किया और वहां से आप मालवा इलाके को चले गए। नूरमहल, डरोली, भाई रूपा, कांगड़ होते हुए आप महिराज गांव में पहुंचे। यहां आप कई दिन रह कर लोगों को उपदेश करते रहे। वहां के एक चौधरी काले ने आपकी बहुत सेवा की। इतिहास के अनुसार चौधरी काला एक दिन अपने दो भतीजों, जिनके मां-बाप मर चुके थे, को लेकर गुरु जी के दरबार में आया। दोनों लड़कों ने गुरु जी को प्रणाम किया और वे दोनों हाथों से अपने पेट को थपथपाने लगे। यह देखकर गुरु जी हंस पड़े और पूछने लगे कि ये ऐसा क्यों कर रहे हैं? भाई काले ने उत्तर दिया कि इनके मां-बाप नहीं हैं। ये खाने के लिए कुछ मांग रहे हैं। श्री गुरु हरिराय साहिब ने वचन किया कि इनकी संतान सतलुज और यमुना नदी के बीच के इलाके की मालिक होगी।

जब चौधरी काला अपने भतीजों को लेकर घर गया तो उसकी घरवाली ने कहा कि अपने बच्चों को भी लेकर जाओ। दूसरे दिन काला अपने बच्चों को लेकर गुरु जी के दरबार में आया। उन बच्चों ने भी वैसा ही किया। काले ने गुरु जी को असल बात बता दी कि इनको भी आप आशीष दो। गुरु जी ने उनको भी आशीर्वाद दिया कि इनकी संतान भी कई इलाकों की मालिक होगी। गुरु जी मालवा से कीरतपुर साहिब आ गए और वहां तीन महीने ठहरे। फिर आप माझा क्षेत्र में गोइंदवाल गए। वहां से करतारपुर होते हुए कीरतपुर साहिब आ गए। यह समय लगभग चार साल का था जब आप जगह-जगह जाकर सिक्ख धर्म का प्रचार करते रहे।

कीरतपुर साहिब में एक सन्यासी भगतभगवान आपके दर्शन के लिए आया। दर्शन करके वो आपका सिक्ख बन गया। भगतभगवान को आपने सिक्खी में परिपक्व करके उसको पंजाब से बाहर पूरब में सिक्ख धर्म का प्रचारक बनाकर भेजा। आपने पटना इलाके में सिक्खी का प्रचार किया। भगतभगवान की गद्दी पटना के पास दानापुर में है। गुरु जी ने कैंथल और बागड़ीया के भाई परिवारों को यमुना और सतलुज नदियों के बीच के इलाके में प्रचार करने का काम सौंपा।

भाई फेरू, जो कीरतपुर साहिब का रहने वाला था, वो गुरु जी का सिक्ख बना और गुरु जी के लंगर में बहुत श्रद्धा से सेवा करता था। उसकी योग्यता को देखते हुए उसको सिक्ख धर्म का प्रचारक बना दिया। भाई फेरू जी ब्यास और रावी नदी के बीच के इलाके के प्रचारक बने और पूरे मन से लोगों को गुरु-घर के साथ जोड़ा।

सिक्ख धर्म के प्रचार के साथ-साथ गुरु जी ने एक दवाखाना भी बनाया। आप जरूरतमंदों को मुफ्त में दवाई दिया करते थे। आपके दवाखाने में बहुत ही कीमती दवाइयां मौजूद थीं, जिससे कई रोगियों के असाध्य रोग दूर हो जाते थे। शाहजहां के बड़े पुत्र दाराशिकोह को खाने

में शेर की मूंछ का बाल खिला दिया गया था। इसकी दवाई श्री गुरु हरिराय साहिब के दवाखाने से ही मिली थी। दवाखाने से दाराशिकोह बिलकुल स्वस्थ हो गया। शारीरिक रोग दूर होने से दारा गुरु जी का पहले से भी अधिक आदर करने लगा और पक्का श्रद्धालु बन गया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने लगभग सत्रह साल गुरगद्दी की जिम्मेदारी बड़ी योग्यता से निभायी। आपने अपना अंतिम समय नजदीक आता देखकर अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी पर बिठा दिया। आप ६ अक्तूबर, १६६१ को कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

उपर्युक्त विचारों से हमें यह पता चलता है कि श्री गुरु हरिराय साहिब एक विलक्षण व्यक्तित्व के मालिक थे। आप जी एक विनम्र स्वभाव के मालिक, सिपाही, गरीब लोगों और जानवरों के प्रति सेवा-भावना रखने वाले, शरण में आए की मदद करने वाले तथा सच्चे ज्ञान के भंडार थे। प्रिं. तेजा सिंघ और डॉ. गंडा सिंघ ने श्री गुरु हरिराय साहिब की शख्सियत को सही सच्चे रूप में सर्वगुण-संपंन पेश किया है। सिक्ख पंथ हमेशा इन लेखकों का आभारी रहेगा। इन विद्वानों ने सिक्ख इतिहास पुस्तक लिखकर लोगों के ज्ञान में वृद्धि की है। इनकी इस पुस्तक से पाठक हमेशा लाभ उठाते रहेंगे।

ख़बरनामा

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रचलित तस्वीर के साथ छेड़छाड़ किए जाने वाली पुस्तक के प्रकाशक को सख्त सजा हो

श्री अमृतसर : शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने 'मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली' द्वारा प्रकाशित हिंदी पुस्तक 'गुरू गोबिंद सिंघ' में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की तस्वीर प्रचलित तस्वीर से गलत पहनावे में प्रकाशित किए जाने सम्बंधी तीखा प्रतिक्रम करते हुए सरकार को यह पुस्तक तुरंत जब्त करके लेखक तथा प्रकाशक को सख्त सजा दिए जाने की मांग की है। यहां से जारी प्रेस विज्ञप्ति में उन्होंने कहा कि गुरु साहिब की महान कुर्बानी, विलक्षण शख्सियत तथा उच्च जीवन से समूह संसार भली-भांति परिचित है। उन्होंने कहा कि लेखक तथा प्रकाशक द्वारा किसी साजिश अधीन की गई गुरु साहिब की तस्वीर के साथ छेड़छाड़ से सिक्ख भाईचारे की धार्मिक भावनाओं को भारी ठेस पहुंची है। लेखक तथा प्रकाशक की यह कार्यवाही असहनीय है, इसलिए लेखक पंडित साधू सूदन शर्मा तथा प्रकाशक मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली के विरुद्ध श्री अमृतसर के अलग-अलग थानों में रिपोर्ट दर्ज कराई जा रही है। उन्होंने सरकार से मांग की कि देश की एकता व अखडंता को बनाए रखने के लिए सांप्रदायिक जहर घोलने वाले ऐसे तत्वों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाए।

"सिक्ख इतिहास" कृत प्रो. करतार सिंघ के आधार पर श्री गुरु हरिराय साहिब का जीवन-परिचय

*-स. ऊधम सिंघ**

संत-स्वभाव, उच्च आध्यात्मिक दृष्टि और दया-प्रेम से भरपूर कोमल हृदय के मालिक श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म बाबा गुरदित्ता जी के घर, माता निहाल कौर जी की कोख से १९ माघ, सं. १६८६ को कीरतपुर साहिब में हुआ। आप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पौत्र थे। लेखक प्रो. करतार सिंघ ने खंड एक में श्री गुरु हरिराय साहिब के गुरिआई से पहले के जीवन को बयान किया है जिसमें गुरु साहिब का जन्म, बचपन और शादी का जिक्र है।

श्री गुरु हरिराय साहिब का बचपन दादा गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की निगरानी में बीता। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री (गुरु) हरिराय साहिब के लिए धार्मिक विद्या व गुरबाणी विचार के साथ-साथ शस्त्र-विद्या का प्रबंध भी स्वयं किया। लेखक ने श्री गुरु हरिराय साहिब के कोमल हृदय की बाबत गुरगद्दी पर विराजमान होने से पहले की एक साखी का भी जिक्र किया है, जिसमें श्री गुरु हरिराय साहिब एक समय बगीचे में टहल रहे थे कि अचानक उनके चोले से टकराकर कुछ फूल टूटकर नीचे गिर गए। श्री गुरु हरिराय साहिब मन में सोचने लगे कि पौधे के साथ लगे फूल सुंदर लग रहे थे, अब टूटकर मिट्टी में मिल गए हैं। ऐसा सोचते ही थे कि उधर से दादा-गुरु जी आ गए। श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने मन की सारी बात उनको बताई तो दादा गुरु जी ने समझाया कि बेटा! जब बड़ा चोला पहना हो तो जरा संभाल कर चलना चाहिए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समझाने का तात्पर्य यह था कि आदमी को अपनी ताकत का इस्तेमाल सोच-समझ कर करना चाहिए, किसी को दुख नहीं देना चाहिए। इस बात को श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने जीवन में अपनाया और सारी आयु इसका पालन किया।

श्री (गुरु) हरिराय साहिब की शादी उत्तर प्रदेश के अनूप शहर निवासी श्री दयाराम की सपुत्री क्रिशन कौर जी के साथ आषाढ़ सुदी ३, संवत् १६९७ को हुई। आपके घर दो पुत्र रामराय (संवत् १७०३) और श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब (संवत् १७१३) पैदा हुए।

खंड दो और तीन में लेखक ने श्री गुरु हरिराय साहिब के गुरिआई-काल को दो हिस्सों में बांटा है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने पौत्र श्री (गुरु) हरिराय साहिब को गुरगद्दी की जिम्मेवारी के लिए चुना। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ३ मार्च, १६४४ ई. को ज्योति-जोत समाये और इसके पांच दिन बाद ८ मार्च, १६४४ को श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी पर बैठाने की रस्म बाबा बुड्ढा जी के पुत्र भाई भाना जी ने अदा की। सारी संगत ने आपके आगे सिर झुकाया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने नाम, दान, स्नान को अपने जीवन में अपनाया और सारी संगत को भी इसमें परिपक्व रहने का उपदेश दिया। आपने लंगर-व्यवस्था में बहुत सुधार किया। लंगर की बाबत आप अलग-अलग लोगों के विचार लेते रहते और अंत में अपना विचार रखते कि जब भी कोई जरूरतमंद आपके दर पर आए या लंगर में आए तो उसे परशादा

***VPO : चविंडा देवी, श्री अमृतसर। मो. : ९८५५५-९६९२२*

छकाए बिना नहीं भेजना। जो इस तरह करेगा वो गुरु-घर की खुशियां प्राप्त करेगा और उसे दोनों जहानों में सुख मिलेगा। आपने सभी लंगरों में इस मर्यादा को लागू करने का आदेश दिया।

आपने अपने दादा-गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए कोई जंग न की और शांतिपूर्वक सिक्खी का प्रचार करके जनता का उद्धार किया, मगर अपने पास २२०० घुड़सवार सदैव तैयार रखे। आप शूरवीर सवारों और उनके घोड़ों की खुराक एवं संभाल का भी ख्याल रखते। आपको शिकार खेलने का भी शौक था लेकिन आप शिकार को मारते नहीं उसको जिंदा पकड़ते और अपने चिड़ियाघर का हिस्सा बनाते।

श्री गुरु हरिराय साहिब रोगी और दुखी दिलों को नाम-दान देकर आरोग्य तथा सुखी करते। आपने रोगी तनों के रोग मिटाने और उनको आरोग्य व सुखी बनाने के लिए एक दवाखाना भी खोल रखा था, जिसमें आप रोगी को मुफ्त दवा देते और प्रेम सहित उसकी सेवा-संभाल की व्यवस्था करते।

आपका दवाखाना इतना प्रसिद्ध हुआ कि दूर-दूर से लोग दवा लेने आते। एक बार शाहजहां का पुत्र दाराशिकोह बीमार पड़ गया। हकीमों ने उसके लिए खास किस्म के वजन की हरड़ और लौंग दवा रूप में तजवीज किए। बादशाह ने सब जगह से पता किया लेकिन वे कहीं से नहीं मिले। किसी ने उन्हें गुरु साहिब के दवाखाने के बारे में बताया तो बादशाह ने चिट्ठी लिखकर एक आदमी भेजा। बुरे का और दुश्मन का भी भला करना गुरु-घर की शुरू से ही रीति रही है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने हरड़ और लौंग के साथ एक जगमोती भी दिया जिसे दवा के साथ देने से दवा और भी गुणकारी हो जाती थी। दाराशिकोह ठीक हो गया और उसने कीरतपुर साहिब पहुंचकर गुरु जी का शुक्राना किया। गुरु जी का उपदेश सुना और उनके सिक्खों की नित्य-क्रिया को देखा तो उसके मन पर बहुत असर हुआ।

दिल्ली के तख्त के लिए जब शाहजहां के पुत्रों के बीच लड़ाई छिड़ी तो दाराशिकोह औरंगजेब से हार खाकर लाहौर की तरफ भागा। दाराशिकोह को पता चला कि गुरु साहिब गोइंदवाल में हैं तो वो गुरु-दरबार में हाजिर हुआ और विनती करने लगा कि मेरे पीछे फौज लगी हुई है। उसे दरिया पार करने से रोको ताकि मैं लाहौर पहुंच जाऊं। शरण आए की रक्षा करनी गुरु नानक साहिब के घर का पहला नियम है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने दाराशिकोह को दिलासा दिया और अपने २२०० घुड़सवार लेकर वे ब्यास दरिया पर भेज दिये। वहां पर खड़े सभी बेड़े गुरु जी की सिक्ख सेना ने अपने कब्जे में कर लिए। इस तरह गुरु साहिब ने एक दिन औरंगजेब की फौज को दरिया पार करने से रोक दिया और दाराशिकोह को दिया अपना वचन पूरा किया। अमन भी भंग नहीं हुआ और किसी का खून भी नहीं बहा।

तीसरे खंड में लेखक ने श्री गुरु हरिराय साहिब के द्वारा अपने गुरगद्दी काल में किए सिक्खी प्रचार और नाम-दान देने का भी जिक्र किया है। लेखक ने औरंगजेब और रामराय के बीच हुए वार्तालाप का भी जिक्र किया है।

भाइयों को खत्म कर और अपने पिता शाहजहां को कैद कर औरंगजेब बादशाह बना। वो कट्टर शरई मुसलमान था। वो पूरे भारत को मुसलमान बनाना चाहता था। वो यह भी जानता था कि श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसके भाई दाराशिकोह की मदद की थी। बादशाह ने गुरु साहिब को दिल्ली आने को बुलावा भेजा। गुरु साहिब ने खुद जाने से इंकार किया, लेकिन मुखी सिक्खों से सलाह कर अपने बड़े साहिबजादे रामराय को भेजा। जाने से पहले आपने रामराय को समझाया कि बादशाह जो भी पूछे सच-सच कहना, दबाव में न आना, करामात

नहीं दिखानी, कोई भी बात गुरु नानक साहिब के आशय के उलट नहीं कहनी। साथ ही आपने यकीन के साथ कहा कि जब तक गुरु नानक साहिब के आशय के अनुसार बात करोगे सब ठीक रहेगा।

रामराय दिल्ली पहुंचा। औरंगजेब ने उसका आदर-सम्मान किया। औरंगजेब जो भी सवाल पूछता रामराय गुरु नानक साहिब के आशय के अनुसार जवाब देता। बादशाह ने बाणी के बारे में सवाल किया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ऐसा क्यों लिखा है : *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"* रामराय दबाव में आ गया। वो गुरु नानक साहिब के आशय से भटक गया। उसने सोचा कि कैसे भी हो बादशाह को खुश किया जाए। उसने उत्तर दिया : "बादशाह सलामत! किसी ने आपको गलत बताया है। बाणी में "मिटी मुसलमान की" नहीं बल्कि "मिटी बेईमान की" लिखा है। और भी बातचीत हुई जिसका रामराय ने बड़ी चतुराई से जवाब दिया। बादशाह ने खुश होकर उसे खूब सारी जागीर दी।

इस बात का पता जब गुरु साहिब को लगा कि उसने बादशाह को खुश करने के लिए गुरबाणी की पंक्ति को बदला है और गुरु नानक साहिब के आशय के उलट बात कही है तो गुरु जी को बहुत दुख हुआ। गुरु जी ने हुक्म दिया कि रामराय हमारे माथे न लगे और सिक्ख संगत उसके साथ किसी किस्म का संबंध न रखे।

गुरु साहिब ने अपना ज्यादा समय सिक्खी प्रचार में ही लगाया। आप दूर-दूर से आई संगत में सिक्खी के आदर्शों और सिद्धांतों की व्याख्या करते, सिक्खों की आशंकाएं निवृत्त करते। आपने सिक्खी प्रचार का पक्का और जत्थेबंद प्रबंध किया। आपके पिता बाबा गुरदित्ता जी ने सिक्खी प्रचार के चार केंद्र स्थापित किए जिन्हें 'चार धूणे' कहा जाता था। आपने इस उद्देश्य के लिए तीन और केंद्र स्थापित किए जिन्हें 'बख्शिशें' कहा जाता था और जो सिक्खी प्रचार को समर्पित थे, वे थे : (१) सुथरेशाही (२) भगत भगवानीए (३) संगत साहिबीए। इन बख्शिशों के अलावा मालवे में सिक्खी प्रचार के लिए गुरु साहिब ने चार मसंद भी नीयत किये: (१) भाई बहलो (२) भाई भूंदड़ (३) भाई पंजाब (४) भाई भगतू।

गुरु साहिब का प्रताप दूर-दूर तक फैल गया। पड़ोसी पहाड़ी राजे गुरु साहिब की कीर्ति देख-सुन कर ईर्ष्या से भरने लगे। दो पहाड़ी राजे अपनी सेना लेकर कीरतपुर साहिब के बाहर एक ताल के किनारे बैठ गए। वे गुरु साहिब से 'कर' वसूल करने के लिए गुरु-दरबार में हाजिर हुए। उनके बोलने से पहले ही गुरु साहिब उनके मन की बात जानकर कहने लगे, "फकीरों से 'कर' नहीं लेना चाहिए। फकीर तो नाम-धन ही दे सकते हैं, जो 'सच्चा धन' है तथा दोनों जहान में काम आता है।" यह बात सुनकर दोनों पहाड़ी राजा आश्चर्यचकित हुए। वे गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े। गुरु साहिब ने उन्हें उपदेश दिया कि अहंकार का त्याग करें, प्रजा को दुखी न करें, लोगों के भले के लिए ताल, कुएं, पाठशालाएं और धर्मशालाएं खोलें एवं धर्म का प्रचार करें।

अपनी सचखंड वापसी निकट जान गुरु साहिब ने अपने छोटे साहिबजादे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी पर बिठाया। आप श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी पर बिठा ५ कार्तिक, संवत् १७१८ को कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

प्रो. करतार सिंघ के ये शब्द उल्लेखनीय हैं कि श्री गुरु हरिराय साहिब फौलाद जैसे सख्त और फूल की तरह नरम गुणों के मालिक थे।



श्री गुरु हरिराय साहिब : जीवन एवं कार्य तथा स्रोत-सूचना

*-डॉ. गुरमेल सिंघ**

दस गुरु शख्सियतों में से सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब एवं आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बारे में शेष गुरु साहिबान की तुलना में काफी कम कार्य (लिखा-पढ़ी अथवा अध्ययन) हुए हैं। इस समस्या के अनेकों कारणों में से एक-दो मुख्य कारण ये हैं कि इन दोनों गुरु साहिबान का गुरिआई काल बहुत थोड़ा है[१], दोनों गुरु साहिबान की आयु काफी थोड़ी है।[२] दोनों गुरु साहिबान के समय इतिहास की कोई घटना नहीं घटित हुई, जिससे सिक्ख धर्म के संस्थागत स्वरूप के बारे में कोई सरोकार जुड़ा हुआ हो, परंतु इन बातों से यह अनुमान लगाना तर्कसंगत नहीं कि गुरु साहिबान की देन में कोई अभाव है। वस्तुत: इन दोनों गुरु शख्सियतों की देन पर संस्थागत स्तर पर ध्यान ही नहीं गया। यह विचाराधीन हाथ में लिया कार्य सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन, व्यक्तित्व, कार्यों, यात्राओं, स्मृति-चिन्हों, गुरु जी के प्रमुख सिक्खों और उनकी संस्थागत पक्ष से देन आदि के बारे में कुछ मुख्य पक्षों पर विचार करेगा। गुरु साहिब के बारे में विभिन्न पक्षों/दृष्टिकोणों से कार्य करने वाले नये खोज-छात्रों की सुविधा के लिए इस पेपर में संभव सूचनायें एकत्र की गई हैं। पाद-टिप्पणियों की अधिकता को भी इसी संदर्भ में देखा जाए।

जीवन : जैसे कि पहले भी संकेत किया गया है कि गुरु साहिब की कुल जीवन-अवधि मात्र ३१ वर्ष की है। आप जी का जन्म छठे पातशाह के बेटे बाबा गुरदित्ता जी के घर माता निहाल कौर की कोख से कीरतपुर साहिब में हुआ। लगभग १० वर्ष की आयु में आप जी का विवाह माता सुलक्खणी जी के साथ हुआ।[३] श्री गुरु हरिराय साहिब के घर समय के साथ दो बेटे रामराय और श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब पैदा हुए। आपके घर एक बेटी रूप कुइर होने के भी संकेत मिलते हैं[४], परंतु इतिहास इस संबंध में अभी तक स्पष्ट निर्णय नहीं कर सका।

गुरिआई : छठे पातशाह ६ चेत संवत् १७०१ वि. (३ मार्च, १६४४ ई) को ज्योति-जोत समाये थे तथा उन्होंने अपने गुरिआई की पातशाही श्री (गुरु) हरिराय साहिब को सौंप दी थी। इस समय आपकी आयु लगभग १६ वर्ष की थी।

कार्य : गुरु साहिब द्वारा किये विभिन्न-प्रकारी कार्य, चाहे काफी विस्तार की मांग करते हैं, परंतु यहां इतना जान लेना ही अनिवार्य है कि छठे पातशाह के बाद सिक्ख धर्म का समय की बादशाहत के साथ खूनी टकराव आरंभ हो गया था, जिसको पूर्णत: संगठित सिक्ख संगत ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय चेतन्य होकर संभाला था। श्री गुरु हरिराय साहिब के समय परिस्थितियां अनुकूल नहीं थीं कि संगठित हो रही सिक्खी को समय की शक्तिशाली सलतनत के साथ टकरा दिया जाए, अत: श्री गुरु हरिराय साहिब ने सदैव बचाव पक्ष की नीति को अपनाया। उन्होंने देश में राजनैतिक उतराव-चढ़ाव में अपने आप को निरपेक्ष रखा। सिक्खी को मुगलों और कहिलूर आदि रियासतों में

श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो. : ९०४१०४६३७२

उलझने नहीं दिया। सन् १६४५ ई में जब मुगलों ने कहिलूर रियासत पर हमला करके वहां के राजा को बंदी बना लिया तो गुरु साहिब लगभग निरपेक्ष ही रहे थे तथा कुछ समय के लिए कहिलूर से बाहर चले गए थे।

श्री गुरु हरिराय साहिब की सियानप से हकूमत सिक्ख धर्म को उचित रूप में समझने के करीब आई। जब दाराशिकोह भयानक बीमारी का शिकार हो गया तो उसके लिए एक विशेष प्रकार की हरड़, गजमोती तथा लौंग का मिश्रण गुरु साहिब से ही प्राप्त हुआ था।[५]

फूलकीआ वंश के पूर्वज फल और संदली, जो पटियाला, नाभा और जींद के राजा थे, को राज्य का आशीर्वाद गुरु साहिब से ही प्राप्त हुआ था।[६] श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इनको खुशहाली का आशीर्वाद दिया था।[७]

गुरु नानक साहिब द्वारा प्रारंभ की सिक्खी ने समय-समय पर कई संस्थाओं को जन्म दिया, जिनके आधार पर सिक्ख धर्म एक जत्थेबंदक रूप ले रहा था। श्री गुरु हरिराय साहिब तक पहुंचते-पहुंचते लंगर, संगत, मंजी, मसंद, दसवंध, गुरुद्वारा (जिसका प्रथम रूप धर्मशाला था[८] भाव प्रचार-केंद्र) आदि संस्थायें पूर्णत: प्रफुल्लित होकर जगत में प्रकट हो चुकी थीं। श्री गुरु हरिराय साहिब ने न केवल इन संस्थाओं को संभाला अथवा विकसित किया बल्कि सिक्खी के प्रचार को पक्के पांवों पर करने के लिए 'चार धूणे' तथा 'छ: बख्शिशें' भी स्थापित कीं।[९] दक्षिणी भारत में समय के साथ इन धूणों/बख्शिशों का जाल बिछ गया।[१०]

श्री गुरु हरिराय साहिब और दाराशिकोह : लगभग सभी गुरमुखी स्रोत इस विचार को प्रस्तुत करते हैं कि शाहजहां का बड़ा पुत्र दाराशिकोह जब औरंगजेब से पराजित होकर (वस्तुत: डर कर) लाहौर पहुंचने के लिए गोइंदवाल के समीप दरिया ब्यास पार करके गुजरा तो इसने गुरु साहिब के आगे विनती की कि शाही सेना उसका पीछा कर रही है, कृप्या उसकी सहायता की जाए। विनती मानकर गुरु साहिब ने अपने सैनिकों को शाही सेना को रोकने के लिए खड़ा कर दिया और दारा ठीक-ठाक लाहौर पहुंच गया।

वस्तुत: उपर्युक्त विचार पूर्णत: सही नहीं हैं, इसका कारण गुरमुखी स्रोतों की जानकारी का अधिक आधार मौखिक होना है और मौखिक जानकारी में ऐसी गलती होना कोई गैरस्वाभाविक नहीं।

शाहजहां के चार पुत्रों (दाराशिकोह, मुहम्मद सुजाअ, औरंगजेब और मुराद) में से दारा बड़ा होने के कारण राजपाट का कार्य-भार संभालता था चूंकि शाहजहां अंतिम आयु के चरण में दुर्बल हो गया था। चाहे दाराशिकोह युवराज था और राज के प्रफुल्लन अथवा कमीपेशी का जिम्मेदार था, परंतु वह औरंगजेब से बहुत डरता था।[११] औरंगजेब ने शाहजहां को कैद कर लिया और दारा की सारी शक्ति समाप्त कर दी। औरंगजेब के हाथों पराजित होकर दारा अफगानिस्तान की ओर जाने के लिए पंजाब में से गोइंदवाल के पास से गुजरा, जहां वह अपने दार्शनिक तथा साधु-स्वभाव के अनुरूप श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में उपस्थित हुआ। गुरु साहिब ने गुरु-घर की प्रकृति के अनुरूप स्वाभाविक ही उसकी लंगर-पानी से तथा अन्य यथायोग्य सहायता की और दरिया ब्यास को पार करने के लिए कश्तियों आदि द्वारा मदद की, क्योंकि दारा के साथ 'बीस हजार'[१२] सेना भी थी। दारा को गुरु साहिब ने कोई सैनिक सहायता नहीं दी थी, चूंकि समय की हकूमत के साथ उलझ कर गुरु साहिब सिक्खी के उत्थान को रोकना नहीं चाहते थे। दूसरा, यदि गुरु साहिब बागी दारा

की सैनिक सहायता करते तो औरंगजेब के साथ सैनिक टकराव अनिवार्य था, परंतु ऐसा गुरु साहिब की सियानप के कारण नहीं हुआ। औरंगजेब दारा की गुरु साहिब द्वारा की नैतिक सहायता भी नहीं भूला था, इसलिए राज-पाट संभालते ही उसने गुरु जी को अपने दरबार में उपस्थित होने के लिए बुलावा भेजा था।[१३]

श्री गुरु हरिराय साहिब और रामराय : रामराय, श्री गुरु हरिराय साहिब का बड़ा पुत्र था, जो कि प्राय: प्रिथीचंद वाली लाईन पर चल रहा था। पहले किये संकेत के अनुसार औरंगजेब ने राज-पाट संभालते ही गुरु जी को दिल्ली बुलाया था, परंतु सिक्ख संगत के साथ परामर्श के अनुसार गुरु साहिब स्वयं दिल्ली नहीं गये, बल्कि आप जी ने अपने पुत्र रामराय को भेज दिया। यह बात १६६० ई के लगभग अंतिम चरण की है। जैसे कि इतिहास से सामान्य विदित है कि रामराय और बादशाह के बीच जो बातचीत हुई उसका तत्व-सार गुरबाणी-केंद्रित ही था, चूंकि स्थापित पक्षों को अधिक भय गुरबाणी से ही आता था। रामराय तथा औरंगजेब की विचार-गोष्ठि में से औरंगजेब विजयी हुआ, जब उसने लालच द्वारा रामराय से बाणी-व्याख्या गलत करा दी। गुरु साहिब ने रामराय को इस घटना के उपरांत सदैव के लिए त्याग दिया था। अन्य सिक्ख संगत को भी रामराइयों से दूर रहने के हुक्मनामे भेजे गए। औरंगजेब ने रामराय को खुश करने के लिए जागीर दी थी, जो कि कहते हैं कि 'दून' (देहरादून) में अब भी रामराइयों के नाम बोलती है।

यात्राएं : अपने गुरिआई-काल (१६४४-६१ ई) के मध्य गुरु साहिब ने कीरतपुर से बाहर जाकर भी सिक्खी का प्रचार किया। इन प्रचार-दौरों अथवा रास्ते वाले स्थानों के बारे में चाहे विद्वानों और सिक्ख स्रोतों में भिन्नता वाले विचार विद्यमान हैं, परंतु गुरु साहिब के निम्नलिखित स्थानों पर जाने के बारे में हमें विभिन्न स्रोतों/विद्वानों से जानकारी मिल जाती है।[१४]

(१) अमृतसर, गोइंदवाल, खडूर, वड्डी लहिल, हरीआं वेलां, भुंगरनी, बंबेली, करतारपुर, नूर महिल, पुआधड़े, गहलां, भाई की डरोली, माड़ी पिंड, मराझ, मीझें की मौड़ी, पलाही नगर, फराल संधवां, दुसांझ मसंदा के, हकीमपुर, चंदपुर, दौलेवाल।

(२) बुंगा, रोपड़, पिहोवा, थानेसर, सिआलकोट, श्रीनगर आदि।

गुरु जी के प्रमुख सिक्ख : गुरिआई-काल के अपने अल्पकालीन समय में गुरु साहिब के संपर्क में लगभग कितने जिज्ञासु आये यह अनुमान लगाना न केवल मुश्किल है, बल्कि असंभव भी है, चूंकि एक तो इस तथ्य के हमारे पास प्रमाण कोई नहीं, दूसरा, सिक्ख संगत का प्रवाह तो गुरु नानक साहिब से चलता आया है तथा हरेक गुरु साहिब के साथ-साथ बहता चला आया है, इसलिए किसी सिक्ख अथवा संगत को किसी विशेष गुरु के साथ संबंधित करना भी मुश्किल है, परंतु फिर भी जो मुखी सिक्ख गुरु साहिब की संगत में विशेष प्रसिद्ध थे, उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार लिये जा सकते हैं:[१५]

१. भाई पुंगर जी, २. भाई गोंदा जी, ३. भाई जिऊणा जी, ४. भाई बिधीचंद शोशन जी, ५. भाई काला दुलट जी, ६. भाई नंदलाल पुरी जी, ७. भाई भगतू जी, ८. भाई गउरा जी, ९. भाई फेरू जी आदि।

स्मृति-चिन्ह : श्री गुरु हरिराय साहिब ने मुख्यत: दो प्रचारक दौरे किये। इन दौरों के समय आप जी जहां-जहां भी रुके या जिस-जिस रास्ते से गुजरे, वहां-वहां ही लगभग स्मृति-

चिन्हों के रूप में आप जी से संबंधित गुरुद्वारा साहिबान भी बने हुए हैं या कई स्थानों पर स्मृति-चिन्ह, जैसे वस्त्र (चोला), कोई वृक्ष, गुरु-दरबार की हस्तलिखित बीड़ आदि संभाले हुए हैं, बहुत-से स्मृति-चिन्ह समकालीन या उत्तरकालीन विभिन्न प्रकारी परिस्थितियों (विशेषत: राजसी तथा युग-गर्दियों) के कारण समय की धूल में मिट गए हैं। नीचे कुछेक स्थानों का उल्लेख किया जा रहा है:[१६]

कीरतपुर, बुंगा, रोपड़, वड्डी बहिली/लाहली, हरीआं वेलां, भुंगरनी, बंबेली, नूर महिल, पुआंदड़ा, डरोली, मेहराज, महिल, अंब साहिब, जसपाल भाई के, दुसांझ मसंदा, पलाही, मुकंदपुर, गलोटियां खुर्द, ननकाणा, अमरगढ़ (गोनिआणा मंडी), चणौली, हकीमपुर, हरिराए पुर आदि।

प्रमुख तिथावली (ईसवी सन् में)

जन्म/प्रकाश	:	१६३०
विवाह	:	१६४०
गौना	:	१६४२
गुरगद्दी	:	१६४४
नाहन जाना	:	१६४५
रामराय का जन्म	:	१६४७
बीबी रूप कुइर का जन्म	:	१६४९
दारा का संपर्क	:	१६५०
दुआबे की फेरी/यात्रा	:	१६५२
मालवे की फेरी	:	१६५३
(गुरु) हरिक्रिशन साहिब का जन्म	:	१६५६
दारा-संपर्क (दोबारा)	:	१६५८
कशमीर-फेरी	:	१६६०
रामराय-दिल्ली दरबार	:	१६६१
ज्योति-जोत	:	१६६१

स्रोत-सूचना (१-गुरमुखी, २-फारसी, ३-फुटकल): श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-समाचारों को संभालने अथवा बताने में सर्वाधिक योगदान गुरमुखी स्रोतों का है। विभिन्न स्रोतों में एकरूपता भी नहीं और कई गैर-ऐतिहासिक तथ्य भी हैं। ऐसा होना मध्यकालीन युग-गर्दियों तथा असुरक्षित वातावरण में कोई अस्वाभाविक नहीं। दूसरे नंबर पर एक-दो फारसी कृतियां हैं। यहां हम इन स्रोतों की मात्रा तथा प्राप्ति-स्थानों के बारे में ही बता सकते हैं। इनका मूल-पाठ, टिप्पणी या विश्लेषण करना तो 'श्री गुरु हरिराय साहिब: स्रोत पुस्तक' की मांग करता है :

१-गुरमुखी

(काल-क्रमानुसार)

(१) *भाई नंद लाल ग्रंथावली* (१६८२-१७०५ ई), (संपादक) डॉ. गंडा सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८९, पृष्ठ १७७-७८

(२) *गुरु गोबिंद सिंघ-बाणी* (१६९८), शबदारथ दसम-ग्रंथ साहिब (पोथी पहिली), भाई रणधीर सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१९९५ (तीसरा संस्करण), पृष्ठ ७०, १५४

(३) कंकण, *दस गुर कथा*[१७] (१७१०-१५), (संपा.), डॉ. गुरमुख सिंघ, रघबीर रचना प्रकाशन, चंडीगढ़, १९९१, पृष्ठ ५०-५१

(४) सेवादास, *परचीआं*[१८] (१७११-३४) (संपा.) प्रो. हरी सिंघ, (शोधक) डॉ. गंडा सिंघ, भाषा विभाग, पटियाला १९६१, पृष्ठ ६३-७८

(५) भाई भगत सिंघ *गुरबिलास पातशाही* ६[१९] (१७१८), (संपा.) ज्ञानी जोगिंदर सिंघ एवं डॉ. अमरजीत सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी, (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, जून १९९८, पृष्ठ ७७२-८०, ७९४, ७९७ इत्यादि।

(६) भाई केसर सिंघ छिब्बर, *बंसावलीनामा* दसां पातशाहीआं का[२०] (१७६९), (संपा.) डॉ. रायजसबीर सिंघ, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, २००१, पृष्ठ ६०-६१.

(७) भाई जैता जी, *स्री गुर कथा* (?) (प्रतिलिपिकर्त्ता) ज्ञानी गरजा सिंघ, (संपा.) डॉ.

गुरमुख सिंघ, लिट्रेचर हाऊस, अमृतसर, २००३, पद्य-१९, पृष्ठ ५५.

(८) *गुररतनावली* (१७७३), (संपा.) डॉ. मनविंदर सिंघ, प्रकाशक संपादक स्वयं, अमृतसर १९९५, पृष्ठ १०८-१५.

(९) *महिमा प्रकाश (गद्य)* (१७७३), (संपा.) डॉ. कुलविंदर सिंघ (बाजवा), सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, जनवरी २००४, साखियां १०२-१९, पृष्ठ १४७-६७.

(१०) बावा सरूप दास भल्ला, *महिमा प्रकाश (पद्य),* (१७७६), (संपा.) डॉ. उत्तम सिंघ (भाटिया), भाषा विभाग, पटियाला, १९९९ (दूसरी बार), भाग दूसरा (खंड २), पृष्ठ ५१३-६०१.

(११) *गुरू कीआं साखीआं*[२१] (?), (संपा.) ज्ञानी गरजा सिंघ, सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, मई १९९५ (तीसरी बार), साखियां १-१५, पृष्ठ ४२-५९.

(१२) सेवा सिंघ भट, *शहीद बिलास* (?), (संपा.) ज्ञानी गरजा सिंघ, पंजाबी साहित अकादमी, लुधियाना, दिसंबर १९६१, पृष्ठ ४४, ४७.

(१३) *गुर-प्रणालीआं* (१८वीं-१९वीं सदी), (संपा.) भाई रणधीर सिंघ, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड (शि: गु: प्र: कमेटी), अमृतसर, अप्रैल १९७७, पृष्ठ ९३, ११२, १२८, १५६, १९१, २२१, २३४, २४२, २४९, २५७, २६७, २८५.

(१४) वीर सिंघ (बल्ल), *गुर कीरत प्रकाश* (१८३४), (संपा.) डॉ. गुरबचन कौर, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८६, हुलास ७, पृष्ठ २१९-३४.

(१५) भाई संतोख सिंघ, *स्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ* (१८४३), (संपा.) भाई वीर सिंघ, खालसा समाचार, श्री अमृतसर १९२९, जिल्द ८.

(१६) ज्ञानी गिआन सिंघ, *श्री गुरू पंथ प्रकाश* (१८७८), (संपा.) ज्ञानी किरपाल सिंघ, शहीद बुंगा, श्री अमृतसर, अक्तूबर १९७०, भाग २.

(१७) ज्ञानी गिआन सिंघ, *तवारीख गुरू खालसा* (१८९९), (संपा.) डॉ. करम सिंघ राजू, भाषा विभाग, पटियाला, १९९९ (चौथी बार), पृष्ठ ६१५-५३.

२-फारसी स्रोत

(१) *दाबिस्तान-ए-मजाहिब* (१६४४), (संपा.) नाजर अशरिफ, कलकत्ता १८०९ (फारसी)

(१.१) *सिक्ख इतिहास दे कुझ इतिहासिक पत्तरे*[२२] (संपा./अनु.) डॉ. गंडा सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर १९९९ (दोबारा), पृष्ठ २०.

(२) कन्हैया लाल, तारीख-ए-पंजाब, (१८७२) (पंजाबी अनु.) डॉ. जीत सिंघ सीतल, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९६८.

(३) सुजान राय, खुलासातुत-तवारीख[२३] (१६९५), (पंजाबी अनु.) पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१९७२.

३-फुटकल स्रोत

निम्नलिखित ग्रंथ भी स्रोत/संदर्भ के लिए महत्वपूर्ण हैं :

(१) भाई कान्ह सिंघ नाभा, *महान कोश,* भाषा विभाग, पटियाला १९९९ (छठी बार)

(२) ज्ञानी ठाकुर सिंघ, *श्री गुरदुआरा दरशन,* अमृतसर, १९२३.

(३) पंडित तारा सिंघ नरोतम, *श्री गुर तीरथ संग्रहि,* अंबाला, १८८४ (पत्थर-छाप)

(४) विसाखा सिंघ संत, *मालवा इतिहास* (तीन भाग), जगराउं, १९४८-५३.

नोट: १८वीं-१९वीं सदी के अनेकों कवियों ने गुरु-स्तुति में बेअंत हिंदी/ब्रज/पंजाबी काव्य उच्चारण किया है। यहां इन कवियों के समूचे विवरण तो संभव ही नहीं, परंतु नीचे दी जा रही पुस्तकों में से १५० ऐसे कवियों की टोह/निशानदेही अवश्य मिल जाएगी, जिन शेष (सभी) गुरु साहिबान की स्तुति के साथ श्री गुरु

हरिराय साहिब की स्तुति भी की। इन कवियों की कृतियों संग्रह/टोह 'गुरु हरिराय साहिब-अभिनंदन' तैयार करने में सहायता देगा :
(१) *गुरू महिमा रतनावली,* (संग्रहित) भाई कान्ह सिंघ नाभा, (संपा.) प्रो. प्रीतम सिंघ, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९८४ (लगभग १० कवि)
(२) *श्री गुरू नानक अभिनंदन,* (संपा.) डॉ. देविंदर सिंघ विद्यार्थी, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर १९७८ (लगभग १०० कवि)
(३) *श्री गुरु अमरदास अभिनंदन,* (संपा.) डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों), गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९८५ (लगभग ५१ कवि)
(४) *श्री गुरु गोबिंद सिंघ अभिनंदन,* (संपा.) डॉ. देविंदर सिंघ विद्यार्थी, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९८३ (लगभग १०० कवि)।

संदर्भ-सूचना :

यहां मात्र वही कार्य शामिल हैं जो श्री गुरु हरिराय साहिब के साथ सीधे रूप से संबंधित हैं। पेपर, अप्रकाशित आदि कार्य इस सूची में शामिल नहीं, दस गुरु साहिबान के प्रसंग में लिखे इतिहासों में आया सातवें पातशाह का उल्लेख भी शामिल नहीं, यह सूची संपूर्ण नहीं।

(गुरमुखी अक्षर-क्रमानुसार)

अरूप सिंघ, सतवीं *पातशाही की जनमसाखी,* नवल किशोर प्रेस, लाहौर १९०४ (उर्दू)।

एम. जी. गुप्ता, (संपा.) *स्री गुरू हरिराइ जी : जीवन दरशन और यातरावां,* लोकगीत प्रकाशन, चंडीगढ़ २००१ (विभिन्न विद्वानों के लगभग १६ पेपरों का संग्रह)

सतिबीर सिंघ प्रिं., *निरभउ निरवैर,* न्यू बुक कंपनी, जलंधर १९८१.

साहिब सिंघ, प्रो., जीवन ब्रितांत स्री गुरू हरिराइ साहिब जी, सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, अगस्त २००३ (बारहवीं बार)।

सुखदिआल सिंघ व सतिनाम कौर, *सिरी गुरू हरिराइ जी : जीवन, यातरावां ते सरोत,* निशांत प्रकाशन, बी-१/७९५, प्रेम नगर, सिविल लाईंस, लुधियाना, १९८८.

सुरिंदर कौर फुल्ल, डॉ., *स्री गुरु हरि राइ जी,* आधुनिक किताब घर, माई हीरां गेट, जलंधर, १९९२.

शेर सिंघ, ज्ञानी, जीवन सतवीं पातशाही: गुरू हरि राइ

स्री गुरू हरि राइ जी दा जीवन-बिरतांत, खासला ट्रैक्ट सोसायटी, श्री अमृतसर, १८९७.

स्री गुरू हरि राइ जी का संखेप जीवन चरितर, खालसा नैशनल एजेंसी, अमृतसर, १९१० (उर्दू में)।

हजारा सिंघ, पंडित, जनमसाखी गुरू हरि राइ जी, खालसा कॉलेज कौंसिल, श्री अमृतसर (१९३३)

हरचंद सिंघ (बेदी), डॉ., *सिमरहु गुरू हरि राइ* (जीवन समाचार), खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर, २०००.

हरनाम दास सहिराई, *सतलुज अजे जेरा कर,* श्री अमृतसर, १९८८.

गुरचरन सिंघ (औलख), डॉ., *सिमरो स्री हरि राइ,* लाहौर बुक शाप, लुधियाना, २००४.

गुरमुख सिंघ 'गुरमुख', *स्री गुरू हरि राइ जी* (गुरदरशन), नं. ७, लाहौर बुक शाप, लुधियाना, १९५५.

जसबीर सिंघ (सरना), डॉ., *गुरू हरि राइ साहिब,* गुरु नानक सिक्ख मिशन, अमेरिका २००२.

धरमपाल सिंघल, *गुरू हरि राइ साहिब जी,* लोकगीत प्रकाशन, चंडीगढ़, २००६.

संदर्भ-सूचना का विवरणात्मिक विवरण : उपर्युक्त संदर्भ-सूचना में अधिकतर कार्य प्रचारात्मक दृष्टिकोण से साधारण जिज्ञासु-पूर्ति के लिए हैं।

खोज अथवा अकादमिक दृष्टि से प्रो. सुखदिआल सिंघ, डॉ. हरचंद सिंघ, स. गुरचरण सिंघ (औलख) आदि के कार्य महत्वपूर्ण हैं। इनमें गुरु साहिब के साथ संबंधि मूल स्रोतों का सहारा लिया गया है तथा उनका आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रो. सुखदिआल सिंघ तथा डॉ. हरचंद सिंघ (बेदी) की पुस्तक में ८ गुरमुखी स्रोतों के मूल पाठ भी दिये गए हैं। इन पुस्तकों में गुरु साहिब की यात्राएं, स्मृति-चिन्हों तथा विवादी-मसलों को भी विचार में लाया गया है।

एम. जी. गुप्ता, प्रिं. सतिबीर सिंघ, प्रो. साहिब सिंघ, डॉ. जसबीर सिंघ (सरना), श्री धरमपाल सिंघल आदि के कार्य लगभग एक ही श्रेणी-स्तर के हैं। इनके कार्यों में वैज्ञानिक विचार-दृष्टि से ऐतिहासिक विश्लेषण शामिल है।

बीबी सुरिंदर कौर फुल्ल का कार्य बच्चों के लिए है तथा श्री हरनाम दास सहिराई का कार्य गुरु-चरित्र को नावल में पेश करने का यत्न है। ज्ञानी शेर सिंघ के कार्य की मात्र सूचना ही प्राप्त है, देखा नहीं जा सका। शेष कार्य भी समय तथा आवश्यकता के प्रसंग में मूल्यवान हैं।

पाद-टिप्पणियां तथा हवाले :

१. श्री गुरु हरिराय साहिब लगभग १५ वर्ष तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब मात्र ३ वर्ष गुरिआई पर रहे।

२. सातवें पातशाह की कुल आयु ३१ वर्ष तथा आठवें पातशाह की कुल आयु ९ वर्ष है।

३. गुरु साहिब के विवाह के बारे में गुरमुखी-कृतियों ने काफी गैर-स्वाभाविक तथ्य दिये हैं। भाई केसर सिंघ छिब्बर दो विवाहों की बात करता है तथा असल पत्नी का नाम कोट कलिआणी जी बताता है। *गुरबिलास पातशाही* ६ ने ७ पत्नियों की बात कही है। (देखो: अध्याय २९, बंद ३९६-९८, पृष्ठ ७७४), कर्ता के अनुसार श्री गुरु हरिराय साहिब के ससुर श्री दयाराम जी की तीन सुपत्नियां थीं जिनकी कोख से तीन-तीन पुत्रियां थीं, एक लड़की दासी के तौर पर साथ भेजी गई। (पृष्ठ वही) स. वीर सिंघ बल्ल (गुर कीतर प्रकाश, हुलास ७, पृष्ठ २२३) ८ शादियां तथा ज्ञानी गिआन सिंघ (तवारीख गुरू खालसा, पृष्ठ ६१८) ४ शादियों की बात करता है। वस्तुतः इन सभी गुरमुखी-लेखकों को भ्रम हुए हैं। सही वस्तुस्थिति *गुरू कीआं साखीआं* (संपा. ज्ञानी गरजा सिंघ, पृष्ठ ३८-३९) ने दर्शायी है। इस रचयिता के अनुसार "एक दिहुं दैआ राम सिली खतरी अरूप नगरी से कीरतपुर आइआ। इसे आपणी बेटी सुलखणी की मंगणी हरिराइ जी के साथ की . . . स्री हरिराइ जी ने शुभ विवाह दिवस संमत सोलां सौ सतानमे सतरां हाड़ (१७ आषाढ़, १६९७ वि./१६४० ई.) का है। . . . दूजे बरख साल सोलां सै नड़िनमे असाड़ सुदी तीज के दिहुं, तीज सुदी, आषाड़, १६९९ वि. (१६४२ ई.) बेटी सुलखणी का मुकलावा (गौना) तोरा। संमत सतरां सै तीन चेत बदी पंचमी सोमवार के दिहुं (१५ मार्च, १६४७) रामराइ (पैदा हुए)। . . . संमत सतरां सै छे विसाख सुदी सात के दिहुं (९ अप्रैल, १६४९) . . . एक बालकी (रूप कुइर) पैदा हुई। . . . संमत सतरां सै नावां सावन वदी दसमी (२० जुलाई, १६५२) हरि क्रिशण पैदा हुए . . . माता बसी (माता गुरु हरिराइ जी) सुलखणी को तिरबैणी, कभी कोट कलिआणी कहि के बुलाती थी।"

नोट : आज भी बहुओं को पैतृक गांव के नाम अधीन बुलाने का रिवाज है तथा ससुराल-पैतृक नामों में अंतर तो आम बात है। पुष्टि के लिए और देखो : Principal Teja Singh Dr. Ganda Singh, A Short History of the Sikhs (1469-1765), Punjabi University, Patiala,

2006, p. 47.

४. देखो : *गुरू कीआं साखीआं,* पृष्ठ ३८, पाद-टिप्पणी ३ भी देखो।

५. इस विस्तृत कहानी के लिए देखो, *महिमा प्रकाश* (भाग २, खंड २) पृष्ठ ५४७, ज्ञानी गिआन सिंघ, *तवारीख गुरू खालसा,* पृष्ठ ६२३).

६. Principal Teja Singh Dr. Ganda Singh, A Short History of the Sikhs, (1469-1765), p. 47.

७. Ibid, p. 47.

८. इस संबंध में भाई गुरदास जी लिखते हैं : *"घरि घरि अंदरि धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ।"* (वार १:२७).

९. 'धूणों' तथा 'बखशिशों' का संबंध छठे और सातवें पातशाहों के साथ जोड़ा जाता है। इस संबंध में विस्तार सहित देखो : भाई रणधीर सिंघ, *उदासी सिक्खां दी विथिआ,* सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड (शिरोमणि गु: प्र:कमेटी), श्री अमृतसर १९७२, प्रो. पिआरा सिंघ पदम, *सिक्ख संप्रदावली,* पटियाला १९९०.

१०. इस संबंध में देखो : प्रो. प्रीतम सिंघ, 'उदासी संप्रदाइ दा भूत ते भविक्ख' *दसवां गुरू नानक ते होर लेख,* सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, मई १९९९, पृष्ठ ४३५-४९.

११. मुंशी सुजान राए भंडारी, *खुलासतुत-तवारीख,* (पंजाबी अनु.), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७२, पृष्ठ ५०२.

१२. वही, पृष्ठ ५०३.

१३. इस मसले की विस्तृत चर्चा के लिए देखो डॉ. हरचंद सिंघ (बेदी), *सिमरहु गुरू हरि राइ,* खालसा कॉलेज, अमृतसर, २०००.

१४. यात्राओं के बारे में पूरा विस्तार देखो : सुखदिआल सिंघ-सतिनाम कौर, *सिरी गुरू हरि राइ जी : जीवन, यातरावां ते सरोत,* निशांत प्रकाशन, लुधियाना, १९८८, पृष्ठ २०-३४.

१५. गुरु जी के सिक्खों के बारे में विस्तार देखो: डॉ. गुरबचन सिंघ (औलख), *सिमरो स्री हरि राइ,* लाहौर बुक शाप, लुधियाना २००४, पृष्ठ ६७, डॉ. जसबीर सिंघ (सरना), *गुरू हरि राइ साहिब,* अमेरिका २००२.

१६. विस्तार देखो : उपर्युक्त पाद-टिप्पणी १५ की पुस्तकें।

१७. अन्य संपादन देखो। *दस गुर कथा,* (संपा.) डॉ. किरपाल सिंघ, भाई वीर सिंघ साहित सदन, नई दिल्ली तथा संखेप *दस गुर कथा,* (संपा.) सयदा फरहा अदील, सुचेत किताब घर, लाहौर, मई २००१.

१८. और देखो : *परची पातशाही दसवीं की,* (संपा.) प्रो. पिआरा सिंघ पदम, लोअर माल, पटियाला, १९८८. इसका अंग्रेजी अनुवाद भी है: Parchian Sewadas (Episodes From Lives of The Gurus), (Dr.) Kharak Singh-S. Gurtej Singh, Insititute of Sikh Studies, Chandigarh, 1995.

१९. और देखो : गुरबिलास पातशाही छेवीं, (संपा.) ज्ञानी इंदर सिंघ, अमृतसर १९६८; गुरबिलास पातशाही ६, संपा. डॉ. गुरमुख सिंघ, पटियाला, १९९७.

२०. इस रचना का संपादन प्रो. पिआरा सिंघ पदम (अमृतसर, १९९७) और डॉ. रतन सिंघ (परख, १९७२) ने भी किया है।

२१. इस रचना का अंग्रेजी अनुवाद भी है, देखो: Guru Kian Saakhian : Tales of the Sikh Gurus, (Eng. Tr.) S. Prithipal Singh (Bindra), Singh Brothers, Amritsar, 2005.

२२. इसमें मात्र सिक्खों से संबंधित सामग्री ही अनुवाद की गई है।

२३. फारसी में इसको जफर हसन ने संपादित करके १९१८ ई. में दिल्ली से प्रकाशित किया था।



सतिगुर गुणी निधानु है . . .

*-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ**

छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी-पीरी का सिद्धांत प्रतिपादित करके और उसे अमल में लाकर धर्म-क्षेत्र को जहां विस्मित किया वहीं आशान्वित भी किया कि धार्मिक मूल्यों के सक्षम संरक्षण की आयोजना हो सकती है। उन्होंने इस बात को निश्चित रूप से तय किया कि धर्म अभय और अजय है, साथ ही सर्वोपरि भी है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी सौंपी तो उनके सामने कई सवाल रहे होंगे। वे मीरी-पीरी के विचार को भी आगे बढ़ाना चाहते होंगे और सिक्खों के आत्मिक परिष्कार की निरंतरता भी बनाये रखने के इच्छुक रहे होंगे। उनके सामने सामाजिक सवाल और तत्कालीन परिस्थितियां भी रही होंगी। इन संदर्भों में श्री गुरु हरिराय साहिब का चयन सबसे उपयुक्त चयन था। श्री गुरु हरिराय साहिब के पिता और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सबसे बड़े सपुत्र बाबा गुरदित्ता जी धर्म-शास्त्र और युद्ध-कौशल दोनों में ही पारंगत थे। वे एक ओर जहां धर्म का प्रचार करते थे दूसरी ओर उन्होंने पिता के साथ युद्धों में भी पराक्रम का प्रदर्शन किया। धर्म-शास्त्र और युद्ध-शास्त्र इन दोनों के बीच श्री गुरु हरिराय साहिब की परवरिश हुई जिसका गहरा प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ा। वे शारीरिक रूप से गढ़े हुए बलशाली तथा साहसी बने और साथ ही उनके हृदय में धर्म आधारित कोमल मूल्यों और विचारों ने अपना स्थान बना लिया। उनके पास सशस्त्र जवानों की फौज थी किंतु उन्होंने कोई युद्ध नहीं लड़ा। वे लंगर की सुव्यवस्था भी चाहते थे। उन्होंने शारीरिक रोगों के इलाज के लिये एक बड़ा औषधालय भी चलाया। धन्य थी वह गुरु नानक साहिब की ज्योति जिसने दस शरीरों में एक के बाद एक कितने ही रंग दिखाकर मानव-सभ्यता के परिदृश्य को ही बदल कर रख दिया।

सतिगुरु का कोई एक रंग नहीं है। उसके रंग देखने के लिये दृष्टि चाहिये और यह सतिगुरु की मर्जी है कि वह कब किस रंग में दिखे। कभी वह मोदीखाने में सौदा तोलकर, कभी सैंकड़ों मील दूर से करतारपुर के खेतों को पानी देकर खुश है, कभी सेवा की पराकाष्ठा दिखा रहा है, कभी शहर बसा रहा है और गुरबाणी रच रहा है; कभी उसके हाथों में अस्त्र-शस्त्र हैं तो कभी उन्हीं हाथों से औषधियां बांट रहा है। सतिगुरु पूरा है और पूरी सृष्टि, पूरे गुण, कौशल और पूरा ज्ञान उसमें समाहित है। उसका कोई एक ढंग नहीं है, कोई एक रंग नहीं है, लेकिन हरेक रंग और ढंग में अपनी शरण में आने वाले की चिंता है, संरक्षण है और कल्याण, उद्धार की भावना है। भाई गुरदास जी ने सतिगुरु की पूर्णता को परिभाषित करते हुए कहा कि उस पर बलिहार जाने को मन करता है।

सतिगुर गुणी निधानु है गुण करि बखसै अवगुणिआरे।

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३*

सतिगुरु पूरा वैदु है पंजे रोग असाध निवारे।
सुख सागरु गुरुदेउ है सुख दे मेलि लए दुखिआरे।
गुर पूरा निरवैरु है निंदक दोखी बेमुख तारे।
गुरु पूरा निरभउ सदा जनम मरण जम डरै उतारे।
सतिगुरु पुरखु सुजाणु है वडे अजाण मुगध निसतारे।
सतिगुरु आगू जाणीऐ बाह पकड़ि अंधले उधारे।
माणु निमाणे सद बलिहारे ॥१९॥ (वार २६)

भाई गुरदास जी ने सतिगुरु को पांच विकारों--काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के जिस असाध्य रोग का निवारण करने वाले सम्पूर्ण वैद्य के रूप में देखा वह तो गुरु परंपरा का आधार ही था और इसी आधार को आगे बढ़ाने के लिये ही श्री गुरु हरिराय साहिब ने दवाखाना स्थापित किया था, जिसमें दूर-दूर से औषधियां मंगाकर रखी गयी थीं। इस दवाखाने में रोगियों का मुफ्त इलाज ही नहीं होता था बल्कि प्रेमपूर्वक उनकी सेवा भी की जाती थी। सतिगुरु पूर्ण समर्थ थे, इसलिये लोगों को लाभ मिलता था। इस दवाखाने की प्रसिद्धि फैलने लगी:

बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥
अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥
(पन्ना ८१५)

जो गुरु आत्मा की व्याधियों को दूर करने में सक्षम था तो शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिये उससे आशा रखना सहज ही था। सतिगुरु काल और परिस्थितियों के अनुरूप उनकी यह कामना भी पूरी कर रहे थे। एक बार मुगल शासक शाहजहां का पुत्र दाराशिकोह गंभीर रूप से बीमार हो गया। उसके उपचार के लिये एक विशेष प्रकार की हरड़ और लौंग की आवश्यकता थी। ये दोनों चीजें कहीं न मिलीं। किसी ने बताया कि ऐसी हरड़ और लौंग श्री गुरु हरिराय साहिब के दवाखाने में ही मिल सकती है। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से किये गये युद्धों के बाद गुरु-दरबार से मुगल शासन के कैसे सम्बंध रहे होंगे, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। पुत्र की मृत्यु के भय से भयभीत शाहजहां ने श्री गुरु हरिराय साहिब से हरड़ और लौंग के लिये याचना की तो विवशता में, किंतु उसे गुरु-दरबार की महानता का तनिक भी आभास नहीं रहा होगा। उसे नहीं पता था कि सतिगुरु पूरा वैद्य ही नहीं है वह तो सुखों का सागर भी है और लोगों के दुख हर कर उन्हें सुखों की सौगात देने वाला है। उसे यह भी नहीं ज्ञान था कि सतिगुरु पूर्ण रूप से निरवैर भी है जो वैर-विरोध से पूरी तरह मुक्त है और अपने निंदकों, दुष्टों तथा विरोधियों को भी अपनी कृपा प्रदान करके उनका कल्याण करने वाला है। यही गुरु जी के नाना रंग थे जिसे स्वयं गुरु जी ही जानते थे या भाई गुरदास जी जैसे ब्रह्मज्ञानी। श्री गुरु हरिराय साहिब ने शाहजहां के आदमी को न सिर्फ हरड़ और लौंग दिये वरन् जगमोती भी दिया जिसे साथ में पीस कर खिलाने की सलाह दी। गुरु साहिब की सलाह मानकर दाराशिकोह ने दवा खाई और रोग-मुक्त हो गया। दाराशिकोह स्वस्थ होने के बाद गुरु साहिब का दर्शन करने और आभार प्रकट करने के लिये उनके दरबार में कीरतपुर साहिब पहुंचा। वहां पहुंच कर उसे प्रसन्नता और शांति प्राप्त हुई। गुरु साहिब ने इस तरह उसका शारीरिक ही नहीं आत्मिक उपचार भी किया। सतिगुरु पूर्ण निरवैर भी थे, इसलिये मुगलों द्वारा किये गये निंदकीय व्यवहार भी उनकी सोच और कृपा के आड़े नहीं आये :

मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥
प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥

कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥
(पन्ना ७२)

श्री गुरु हरिराय साहिब ने शक्ति धारण करने और शक्ति को मर्यादित करने का भी सर्वश्रेष्ठ उदाहरण संसार के सामने रखा। उनकी शिक्षा-दीक्षा, क्योंकि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की देखरेख में हुई थी, इसलिये श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के व्यक्तित्व का पूरा प्रभाव श्री गुरु हरिराय साहिब पर पड़ा। वे शारीरिक रूप से बलवान और वीरता से भरपूर थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उन्हें फौजी दसता बरकरार रखने किंतु शस्त्रों का प्रयोग न करने का आदेश दिया था। जब शक्ति हो तो उसके प्रयोग से स्वयं को रोक पाना कठिन हो जाता है, किंतु श्री गुरु हरिराय साहिब ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को दिये गये अपने इस वचन का जीवन भर पालन किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु हरिराय साहिब का यह कार्य अत्यंत दूरदर्शितापूर्ण था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों में वीरता की भावना भरी और सारे युद्ध जीत कर उन्हें उनकी क्षमता का अहसास करा दिया। कदाचित् आने वाली परिस्थितियों का सामना करने के लिये वे सिक्खों को भली-भांति तैयार करना चाहते थे और अनावश्यक बल-प्रयोग उनकी सोच में भी नहीं था। सेना सशस्त्र हो किंतु अपने शस्त्रों का अनावश्यक प्रयोग न करे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की आज्ञा को मीठा करके माना :

करे सु चंगा मानि दुयी गणत लाहि ॥
अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥
जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥
जो धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥
सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥
नानक सुख अनद भए प्रेम की मंनि रजाइ ॥
(पन्ना १४२५)

श्री गुरु हरिराय साहिब ने कभी भी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के वचन पर सवाल नहीं खड़ा किया कि फौज भी रखी जाये और शांति को भी बनाये रखा जाये। जब दाराशिकोह ने राजसिंहासन अपनाने के लिये विद्रोह कर दिया तो शाहजहां ने उसे दबाने का काम औरंगजेब को सौंपा। औरंगजेब की ताकत के आगे दाराशिकोह के पैर उखड़ गये और वह लाहौर की तरफ भागा। मुगल सेना उसका पीछा करती हुई आ रही थी। श्री गुरु हरिराय साहिब उस समय गोइंदवाल में थे। दाराशिकोह उनसे मिला और प्रार्थना की कि किसी तरह एक दिन के लिये पीछे आती हुई मुगल सेना को रोक लें ताकि वो दूर जा सके।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसे मदद का आश्वासन दिया और ब्यास नदी के तट पर अपने सैनिकों के साथ जा डटे। उन्होंने नदी के तट की सारी किश्तियां अपने कब्जे में कर लीं। इससे औरंगजेब की सेना एक दिन तक नदी पार नहीं कर सकी और दाराशिकोह उसकी पहुंच से दूर चला गया। श्री गुरु हरिराय साहिब का यह अनूठा ढंग था बिना शस्त्र उठाये शत्रु-सेना को रोकने का। उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को दिये गये शस्त्र न उठाने के वचन को भी निभाया और शरणागत दाराशिकोह की सहायता भी की। अस्त्र-शस्त्र सिक्ख गुरु साहिबान के बात कहने के माध्यम नहीं थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी उसी अंतिम अवस्था में तेग उठायी जब कोई विकल्प नहीं रह गया। अस्त्र-शस्त्र उनकी शोभा की वस्तु भी नहीं थे। उनकी शोभा तो उनके वचन थे, जिन्हें "शबद-गुरु" कहकर सत्कार दिया

जाता है। गुरु साहिबान की सत्ता तो उनके उन सत्वचनों से स्थापित हुई थी जो मनुष्य को सहज और सरल रूप से परमात्मा से जोड़ने की ताकत रखते थे। गुरु साहिबान ने शस्त्रों को पांच विकारों पर विजय प्राप्य करने में सहायक के तौर पर इस्तेमाल किया ताकि सांसारिक समझ को स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर ले जाया जा सके। मुगल शासन और हिंदू राजाओं के अन्याय का रण-क्षेत्र में सामना स्थूल प्रमाण था कि सच सदैव शक्तिशाली होता है। उस शक्ति का साम्राज्य की स्थापना अथवा विरोधियों पर अन्याय हेतु प्रयोग न करना इस बात का सूक्ष्म प्रमाण था कि सच की ताकत का उद्देश्य इहलोक की सत्ता नहीं परमात्मा की सत्ता के अधीन रहना है और उसके अनुकूल चलना है। शक्ति का अर्थ किसी को दबा देना नहीं उभार लेना है :

भुज बल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥१॥रहाउ॥
स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥
दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मति पिता महतरीआ ॥
चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥ *(पन्ना २०३)*

सच की शक्ति गहरी खाई में गिरे हुए को भी उंगली पकड़ कर बाहर खींच लेने वाली है; मनुष्य कितना भी लाचार हो उसका कल्याण करने वाली है और जो भी उसकी शरण में आशा लेकर गया उसकी आशा पूरी करने वाली है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने जीवन-पर्यंत अपनी सत्शक्ति का इसी तरह सदुपयोग कर मानवता का कल्याण किया। उन्होंने धर्म प्रचार के लिये यात्राएं भी कीं, केंद्र भी स्थापित किये और अनुकरणीय दिनचर्या का पालन भी करते रहे। अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान के वचन उनके लिये अनमोल थे जिनका तिरस्कार उनके लिए असहनीय था। औरंगजेब ने जब दिल्ली के तख्त पर बैठकर अपनी धार्मिक कट्टरता का प्रसार करना आरंभ किया तो उसके सलाहकारों ने उसका ध्यान गुरु-दरबार की ओर दिलाया और उसके कान भरे। श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा दाराशिकोह की सहायता करने से वह पहले से ही रुष्ट था। उसके बुलावे पर श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने बड़े पुत्र रामराय को इस ताकीद के साथ भेजा कि सदा सच के साथ खड़े रहना, कोई चमत्कार नहीं दिखाना, किसी के रौब में नहीं आना और गुरु नानक साहिब के दरबार का सम्मान बनाये रखना। रामराय ने कई दिनों तक औरंगजेब की सिक्ख धर्म के बारे में भ्रांतियां दूर कीं किंतु एक दिन औरंगजेब के यह पूछने पर कि गुरबाणी में *"मिटी मुसलमान की . . ."* कह कर मुसलमानों का अपमान किया गया है, रामराय घबरा गया और झूठ बोल बैठा कि *"मुसलमान" नहीं "बेईमान"* शब्द का प्रयोग किया गया है। यह बात पता लगने पर श्री गुरु हरिराय साहिब को गहरा शोक हुआ और उस दिन से उन्होंने रामराय को अपना पुत्र मानने से इंकार कर दिया तथा जीवन भर उसे मुंह नहीं लगाया। गुरु जी के वचनों के प्रति इतनी निष्ठा, इतना सम्मान बेमिसाल है जिसने न केवल श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरु की गद्दी का सही वारिस ही सिद्ध किया बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिये एक ऐसा मानदंड भी स्थापित कर दिया जिसे पाना श्री गुरु हरिराय साहिब के ही वश में था।



कविता

शब्द-चित्र गुरु हरिराय साहिब

*-मास्टर सेवा सिंघ**

बाबे गुरदित्ते घर बालक हुआ, नाम रखा हरिराय।
अधिक रूप अनूप बालक का, तेज सहा न जाए।
चेहरे से प्रतिबिंबत होता, सचमुच रूप खुदाय।
'सेवा' धरती-बोझ हलका करने को, गुरु जी जग पर आए।
तख्त बैठ उपदेश किया, दृढ़ करो रीति गुरु वाली।
भक्ति, शक्ति, ज्ञान, पवित्रता, सब गुरु-दादे वाली।
मुख पे नूर अलाही चमके, दिन चढ़ते की लाली।
'सेवा' गुरु बोलें हृदय बेंधें, करते जाएं कमाली।
'गगन महि थाल' पढ़ भोग डालते, अरदास खड़े हो करते।
संगत को प्रथम छकाकर लंगर, स्वयं बाद में छकते।
शिकार जाते जीवित जानवर लाते, रक्ख में रख सेवा करते।
'सेवा' फिर गुरु विश्राम-गृह में, आराम देर कुछ करते।
संध्या समय जाते शफाखाने में, कुश्तियां करवाते।
कर्त्तव्य योद्धाओं के देखें, तीर स्वयं चलाते।
अमृत-ज्ञान सायंकाल बांटते, आत्माएं उचियाते।
'सेवा' दीवान लगा फिर छक कर, सोहिला पढ़ सो जाते।
स्वयं सिंघासन से उठ श्री हरिक्रिशन बैठाये, कीं तीन परिक्रमा।
चंवर करो गुरु हरिक्रिशन पर, यह मुखी हैं सिक्ख धरमा।
ये हैं लोक परलोक के मालिक, वाली मुक्ति करमां।
'सेवा' इनके पास जगत की गुरता, जगत दुखों कीआं मरहमां।
गुरु हरिराय आयु निडर हो काटी, न रत्ती डरे न थिड़के।
बेशक शाहजहां से धीरमल बना ली, वेपरवाह हो विचरे।
सेना रख कर दुर्ग बनाये, झंडे झुलाए सिखरे।
'सेवा' बांह दारे की कभी न छोड़ी, जरूरत पड़ने पर नित्तरे।
जब रामराय खुशामद में आकर, गुरबाणी शब्द बदलाये।
नालायक थोड़ी मत वाले को क्या हक है, वाक्य गुरु उलटाये?
त्याग दिया लगे न माथे, जीते-जी परे हटाये।
'सेवा' रामराय को पीठ कर ली, भूल की दी सजाए।
गुरु जी कोमल शांतचित्त संतोखी, दाते दातार कदीमी।
गुरु जी निरवैर बहुत मिष्टभाषी, बहुत उदार अजीमी।
इतनी शक्तियों के मालिक, पर रखी धार हलीमी।
'सेवा' रहे सदैव प्यार बांटते, बात पूरी सुर धीमी।



**गांव तथा डाक सोहियां खुर्द, जिला अमृतसर। मो : ९२१७४२५२३३*

श्री गुरु हरिराय साहिब का गुरबाणी के प्रति सत्कार

*-स. बिक्रमजीत सिंघ**

सिक्ख धर्म में गुरबाणी को 'शबद-गुरु' का दर्जा दिया गया है। सिक्ख चाहे कहीं भी, कैसे भी हालात में हो, वो केवल 'शबद-गुरु' (गुरबाणी) का सहारा लेकर ही अपने जीवन को आगे ले जाता है। वह गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित 'बाणी' पर विश्वास रखता हुआ अपने जीवन का सही मार्ग ढूंढता है और गुरबाणी उसका पथ-प्रदर्शक होती है। दसम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने परलोक गमन के समय सिक्खों द्वारा 'गुरबाणी' को ही 'गुरु' मानने का हुक्म दिया था। इस तरह सिक्खों के लिये 'गुरबाणी' का महत्व अथवा सत्कार और भी बढ़ जाता है।

यहां यह बात भी विचारयोग्य है कि गुरु साहिबान ने गुरबाणी के प्रति आदर-सत्कार का हुक्म केवल सिक्खों को ही नहीं दिया बल्कि खुद गुरु साहिबान ने भी गुरबाणी को सत्कार प्रकट किया है और गुरबाणी की महानता को स्वीकार किया है, जिसकी उदाहरणें गुरु साहिबान के साथ घटित कई ऐसी घटनाएं हैं जिनसे यह पता चलता है कि गुरु साहिबान गुरबाणी का खुद कितना आदर-सत्कार करते थे।

ऐसी ही एक घटना तब घटित हुई जब सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब जी गुरगद्दी पर विराजमान थे। दूसरी तरफ यह बात उस समय की है जब औरंगजेब ने अपने पिता और भाई को कत्ल करवाकर खुद दिल्ली के सिंघासन पर कब्जा कर लिया था। वो इतना ज्यादा कट्टर मुसलिम शासक था कि हर तरफ इस्लाम का प्रचलन ही कायम करना चाहता था। इस कार्य के लिए उसने कई कट्टर मुसलिम धार्मिक आगू अपने सलाहकार नियुक्त किये। इन सबके साथ उसने हिंदुओं और उनके धार्मिक स्थानों को खत्म करने के हुक्म जारी करवा दिये। इसी कड़ी के बीच उसकी नजर श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी भाव गुरु-घर पर भी पड़ी, क्योंकि गुरु-घर की प्रसिद्धि और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना कर श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश करना उसे अच्छा नहीं लगता था। इसी बीच उस समय गुरु-घर के साथ दुश्मनी और ईर्ष्या रखने वाले लोगों ने भी औरंगजेब के कान भर दिये और यह भी बताया कि बादशाह के खिलाफ श्री गुरु हरिराय साहिब ने बादशाह के भाई दाराशिकोह की मदद भी की थी। यह बात जानकर औरंगजेब गुस्से से भड़क गया और उसने श्री गुरु हरिराय साहिब को दिल्ली हाजिर होने का संदेश भेज दिया। दूसरी तरफ श्री गुरु हरिराय साहिब ने ऐसे जालिम बादशाह के मुंह न लगने का प्रण किया हुआ था, इसलिए श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने दो बेटों--रामराय और श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब में से बड़े बेटे रामराय को समझा-बुझाकर बादशाह के बुलावे पर अपनी जगह दिल्ली भेज दिया और साथ ही रामराय को आदेश दिया कि औरंगजेब द्वारा उससे जो भी बात पूछी जाये उसका उत्तर निर्भय होकर

*S/o S. Ranjeet Singh, H.No. 2946/7, Bazar Loharan, Chowk Lashmansar, Sri Amritsar. Mob: 94788-96372

दे, कोई बात गुरु नानक साहिब की शिक्षाओं के उलट अथवा गुरमति के विरोध में न करे। जब पिता श्री गुरु हरिराय साहिब की आज्ञा मानकर रामराय दिल्ली पहुंचा तो औरंगजेब ने रामराय से कई प्रश्न किये। इतिहासकारों के मुताबिक रामराय ने औरंगजेब को ७२ करामातें दिखाईं जिससे औरंगजेब ने रामराय से यह पूछा, "मैंने सुना है कि आपके पांचवें गुरु ने एक ग्रंथ तैयार किया है, जिसमें कई बातें मुसलमानों के खिलाफ हैं।" औरंगजेब ने अपनी बात जारी रखते हुए यह बात भी पूछी कि उस ग्रंथ में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'आसा की वार' नामक बाणी में जो पंक्ति *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥"* दर्ज है, इसके क्या अर्थ हैं? यहां पर जब रामराय ने बादशाह को खुश करने के उद्देश्य से गुरमति के उलट जाते हुए कहा कि इस पंक्ति में 'मुसलमान' नहीं बल्कि 'बेईमान' लिखा हुआ है।

उपरोक्त घटना का पता जब श्री गुरु हरिराय साहिब को चला तो उन्हें इस बात से रामराय पर बहुत क्रोध आया और कहा "रामराय! तूने बादशाह की खुशामद की है, अपने पूर्वजों के वचनों को बदला है, गुरु नानक साहिब की बाणी में मिलावट की है।" उसी समय श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय के बारे में गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख संगत के नाम हुकमनामा जारी कर दिया कि रामराय गुरबाणी की पंक्ति बदल कर गुरु नानक साहिब की बाणी का अपमान किया है जो कि शोभनीय कार्य नहीं है, इसलिए रामराय अब हमें अपना चेहरा न दिखाए। सिक्ख संगत गुरबाणी की महानता, आदर और सत्कार में विघ्न डालने वाले रामराय से कोई मेल-जोल न रखे।

यह घटना श्री गुरु हरिराय साहिब के गुरबाणी के प्रति स्नेह, आदर, सत्कार को प्रतिबिंबत करती है। इस घटना पर गुरु साहिब द्वारा रामराय के विरुद्ध कारवाई करना दर्शाता है कि गुरबाणी में दखल देने के लिए किसी को भी माफ नहीं किया जा सकता, चाहे वो गुरु-पुत्र ही क्यों न हो। इस बात को सामने रखते हुए श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने जीवन के अंतिम समय गुरगद्दी प्रदान करने के लिए अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को चुना और उन्हें गुरिआई प्रदान कर पंच-तत्व में विलीन हो गये। 

Quantity की जगह Quality पर ज्यादा ध्यान दिया जाए!

'गुरमति ज्ञान' की लोकप्रियता का निरंतर बढ़ रहा ग्राफ 'गुरमति ज्ञान' के लेखक भाइयों-बहिनों के परिश्रम का ही फल है। हम अपने कुछ लेखक भाइयों-बहिनों से एक छोटी-सी विनती करते हैं कि वे अपनी रचनाओं में नवीनता का तत्व न गायब होने दें। तथ्यों पर आधारित, मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएं पत्रिका के विकास का 'आधार' हुआ करती हैं तथा समाज में नई चेतना पैदा करती हैं। पूर्व प्रकाशित किसी रचना को ही सामने रखकर नई रचना लिख देना केवल पाठकों को ही निराश नहीं करता बल्कि ऐसा करने से तो पाठक वर्ग के मन-मस्तिष्क में उस लेखक के प्रति सम्मान की न्यूनता भी होने लगती है। कृप्या मात्रा (Quantity) की जगह गुणों (Quality) पर ज्यादा ध्यान दिया जाए। *-संपादक।*

सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-कार्य

*-बीबी अमृत कौर**

शांतिप्रिय, परोपकारी, प्रेम की मूरत, धार्मिक प्रवृत्ति के मालिक सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ज्येष्ठ पुत्र बाबा गुरदित्ता जी व माता निहाल कौर के सपुत्र थे। आपका जन्म १६३० ई में कीरतपुर साहिब में हुआ। आपका बचपन दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की देखरेख में गुजरा। गुरबाणी-शिक्षा, शस्त्र-विद्या, घुड़सवारी, कीर्तन आदि सब कुछ दादा जी से सीखा। आप हर समय अपने दादा जी के साथ रहते तथा उनकी हर आज्ञा का पालन खुशी से करते। आप बड़े विनम्र और कोमल स्वभाव के थे।

एक बार जब आप बाग में टहल रहे थे तो आपके चोले से टकराकर एक फूल पौधे से टूट कर नीचे गिर गया। आप उदास होकर उसे निहार रहे थे तभी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब आपके पास आए और प्यार से समझाया कि "बेटा! दामन संकोच कर चलो।" आप जी ने दादा जी का यह वचन जीवन भर याद रखा।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने अंतिम समय अपने पोते की सेवा-सिमरन को देखते हुए गुरु नानक पातशाह की गद्दी का सातवां वारिस बनाया। अपने बच्चों और सिक्ख संगत को श्री गुरु हरिराय साहिब की हर आज्ञा का पालन करने का आदेश दिया।

गुरगद्दी पर बैठकर आप संगत को अपनी मीठी वाणी से गुरबाणी के शबद सुनाते और कथा भी करते। संगत आपके प्रवचनों को सुनकर प्रसन्न हो जाती। समय का अधिकतम संभव उपयोग करते हुए आपने लोक-भलाई के लिये अमूल्य कार्य किये जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

* श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के हुक्म अनुसार श्री गुरु हरिराय साहिब ने २२०० घुड़सवार हर समय तैयार रखे। वे सैनिकों को युद्ध-अभ्यास कराते, घुड़सवारों और पैदल सैनिकों को प्यार से रखते तथा उनके स्वास्थ्य और खुराक का पूरा ध्यान रखते।
* पतालपुरी के स्थान पर एक किला बनवाया जिसमें गोला-बारूद रखा। माखोवाल में किले के साथ एक अस्तबल और तालाब भी बनवाया।
* श्री गुरु अमरदास जी के समय से चल रही लंगर-प्रथा को जारी रखा।
* लंगर के समय नगारा बजाने की परंपरा जारी की, ताकि नगारे की आवाज सुनकर सभी जरूरतमंद लंगर छक लें, कोई रह न जाए।
* पानी की कमी को दूर करने के लिये कुएं, सरोवर और तालाब बनवाये।
* कीरतपुर साहिब में एक बहुत बड़ा शफाखाना (दवाखाना) खोला जिसमें प्रसिद्ध वैद्य और हकीम रखे और कीमती दवाइयां भी उपलब्ध कराईं। शाहजहां के बेटे दाराशिकोह की बीमारी का इलाज भी यहीं से मिली दवाई से हुआ।
* कई और भी शहरों तथा गांवों में दवाखाने खोले। गुरु जी खुद भी मरीजों को देखने जाते।

*६५८/१०, पंजाब माता नगर, लुधियाना (पंजाब)-१४१०१३, फोन : ०१६१-२५६४४९८

* शिकार के शौकीन गुरु जी ने एक रख (चिड़ियाघर) बनवाई जिसमें पशु-पक्षी आजादी से रहते, एक ही घाट से पानी पीते। उनका हुक्म था कि शिकार को जिंदा पकड़ा जाए, अगर जख्मी हो तो उसका इलाज किया जाए।

* प्रकृति-प्रेमी श्री गुरु हरिराय साहिब ने विभिन्न स्थानों पर बावन से अधिक बाग लगवाये। मालियों को उनके अच्छे काम के लिए इनाम भी दिये जाते। सिक्ख संगत आपकी याद में अब भी पौधे लगवाती है ताकि शुद्ध हवा मिलती रहे।

* गुरु जी ने मालवा-दोआबा-माझा क्षेत्र में हर उस स्थान की यात्रा की जहां पूर्व गुरु साहिबान गये। लोगों को बताया कि यात्रा में नाम जपो, कीर्तन करो, नम्र-भाव से सेवा करो, निंदा-चुगली न करो।

* गुरु जी ने खड़े होकर अरदास करने को कहा।

* गुरबाणी का पूरा सम्मान और सत्कार करने पर जोर दिया। वे कहते, "यह अमृत बाणी है। इससे मनुष्य को सहारा मिलता है और विकार दूर होते हैं।" खुद भी बाणी का इतना सत्कार करते कि एक बार बाणी की आवाज सुनते ही जल्दी में पलंघ से नीचे उतरते समय आपजी को चोट भी लग गई।

* गुरु जी ने बाणी का अपमान न सहन करते हुए अपने बेटे रामराय का त्याग कर दिया।

* जब औरंगजेब ने पत्र लिखकर गुरु जी के दर्शन करने चाहे तो गुरु जी ने निडर होकर उसे जवाब दिया कि जो अपने भाइयों, पिता, संत-महात्माओं और फकीरों का सत्कार नहीं करता, उन्हें कष्ट देता है, ऐसे इंसान को हम कभी दर्शन नहीं देंगे।

* गुरु जी ने पाखंडी और दंभी लोगों का पर्दाफाश किया।

* प्रसिद्ध सिक्ख सेवकों को प्रचार के लिए कई शहरों में नियुक्त किया ताकि गुरु नानक पातशाह के आदेशों का प्रचार हो सके।

* भाई त्रिलोका जी के भतीजे फूल पर बख्शिश करके 'फूलकीआं की रियासत' की स्थापना का वरदान दिया।

* गुरु जी सबको बहुत प्रेम करते और कहते कि राजा की जड़ प्रजा है, प्रजा को दुखी करना, जड़ पर कुल्हाड़ी मारने के तुल्य है।

* गुरु जी के अनुसार पापों का मूल लोभ है, लोभ का मूल है झूठ। 

लेखक साहिबान से अनुरोध है कि वे अपना जीवन-ब्यौरा (Bio-Data) अवश्य भेजें, जिसमें उनकी उच्च शिक्षा, साहित्यक गतिविधियों, साहित्यक प्राप्तियों का पूर्ण विवरण शामिल हो। इससे हमें लेखक साहिबान के अध्ययन-क्षेत्र तथा उनकी लेखन-रुचि आदि के बारे में जानकारी मिल सकेगी तथा हमें भविष्य में लेखक साहिबान की रुचि या अध्ययन-क्षेत्र से संबंधित रचनाएं लिखवाकर प्रकाशित करने में सुविधा रहेगी। -संपादक

कविताएं

गाथा सातवें पातशाह की

यह हकीकत है, दुनिया मानती है, बात बिलकुल न वाद-विवाद की है।
सारी जिंदगी सातवें पातशाह की, एक कथा, इक गाथा विस्माद की है।
अकाल पुरख के हुक्म फरमान अंदर, ऊंची आत्मा जाम-ए-इंसान आई।
रूह विचरी कीरतपुर जूहों भीतर, प्यार सभस लोकाई बरतान आई।
जीव-जंतु सब प्यार ही चाहते हैं, बताने लोगों को बीच जहान आई।
फूलों-पौधों को प्यार स्पर्श करके, अनुभूति देने कि ये मूल्यवान भाई!
टूटे फूल जब अटक कर साथ जामे, तार तड़पती हृदय नाद की है।
सारी जिंदगी . . .
सोच सतिगुरु अति स्वच्छ निर्मल, यह तो सभी का भला लोचती है।
यह न अपने बेगाने में करे अंतर, यह तो वैरी का भी भला सोचती है।
दवाखाना जो कीरतपुर साहिब का है, जो न और कहीं, यहां वो औषधि है।
*मारा लज्जा का शाह** पुकारता है, उसके बेटे बीमार को पहुंचती है।*
गुरु-घर है सरबत्त का भला करे, इसमें लेश न तंग मुफाद की है।
सारी जिंदगी . . .
सिक्ख सिक्खी उसूलों में हों पक्के, सतिगुरों ने पूरा ख्याल रखा।
'गुरु-घर में हरदम लंगर बरतता है, क्या यह काफी है?' सम्मुख सवाल रखा।
निर्मल बख्शा जब निर्देश सतिगुरु, लंगर सिक्खों ने घर में भी संभाल रखा।
इसलिए कि जाए निराश कोई न, यह प्रबंध हर सूरत-ए-हाल रखा।
लंगर-रीति अथाह प्रसार हुआ, हरेक बुरकी अब दात प्रसाद की है।
सारी जिंदगी सातवें पातशाह की, एक कथा, इक गाथा विस्माद की है।

-सुरिंदर सिंघ निमाणा, सहायक संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश। मोः ८८७२७-३५१११

***शाहजहां जिसने छठे पातशाह के साथ युद्ध किये।*

सच्चे पातशाह श्री गुरु नानक देव जी

धरती पर जब-जब बढ़ता है,
पाप-न्याय का भार।
तब-तब दुष्ट विनाश हित, प्रभु लेते हैं अवतार।
इसी लिए प्रभु-अंश रूप, गुरु नानक धरती पे आये।
आडंबर के दोष उन्होंने, सब ही को बतलाये।
एक नया सिक्ख पंथ चलाया, धरा सरल-सा वेश।
जाति-धर्म में बंटे देश को, दिया प्रेम-संदेश।

-श्री राज किशोर पांडेय, गांधी वि. इंटर कालेज, लखीमपुर खीरी (उ. प्र.)-२६२७०१

पहले पातशाह से पंचम पातशाह तक सिक्ख चिंतन का आलोक

*-प्रो. हरमहेंद्र सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी की परंपरा का दस गुरु साहिबान ने महान गरिमा और चिंतन के साथ केवल उसका प्रचार-प्रसार ही नहीं किया बल्कि उसे लोक-जीवन का अटूट हिस्सा भी बना दिया। सेवा के पुंज और मानव-कल्याण में सदा ही दत्तचित रहने वाले श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी अद्वितीय सेवा और साधना से सिक्ख धर्म को वह मार्ग दिया जिसकी अनूठी शान ने श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा प्रचलित लंगर-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया। उनका यह प्रयत्न जातीय भेदभाव और ऊंच-नीच की भावना को समाप्त करने में अग्रगण्य स्वीकार किया गया। पहली बार भारतीय इतिहास में खान-पान की सांझ सभी वर्गों में समानता की सूचक बनी। अमीर और गरीब का भी भेदभाव सामाजिक बराबरी के सामने गौण हो गया। गुरमति दर्शन के महान उद्देश्य को श्री गुरु अमरदास जी ने अमली जामा पहनाया। गुरु जी का यह संदेश दूरवर्ती क्षेत्रों में भी अपना प्रभाव दिखाने लगा।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से उन अंतरालों को भी समेटने की कोशिश की जो सामाजिक विकास के आढ़े आ रहे थे। सती-प्रथा की उन्होंने कड़ी निंदा की। सती-प्रथा का प्रथम सामाजिक बहिष्कार श्री गुरु अरमदास जी द्वारा ही सम्पन्न होता है। स्त्री जाति की आजादी के लिए गुरु जी द्वारा किये गए प्रयत्नों में पर्दे की रस्म का विरोध भी मिलता है। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा जिस भक्ति-मार्ग की प्रौढ़ता की गई वह निष्काम और प्रेमाभक्ति से सम्बद्ध है। गुरु जी ने सेवा-भाव पर भी बहुत बल दिया। उनकी बाणी में प्रभु-सेवा और गुरु-सेवा प्रमुखता से प्रकट हुई। गुरु जी की समस्त बाणी रागबद्ध है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनकी बाणी १८ रागों में संकलित है। गुरु जी की बाणी में पुरानी हिंदी एवं सधुक्कड़ी भाषा के अंश विद्यमान हैं, लेकिन उनकी भाषा का मूल स्वर पंजाबी वाला है।

गुरु जी का व्यक्तित्व एक सहज साधक वाला है। श्री गुरु अमरदास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गहरा प्रभाव श्री गुरु रामदास जी पर पड़ा, जिसका सफल अनुकरण श्री गुरु रामदास जी के व्यक्तित्व में विलक्षण प्रतिभा के साथ प्रलक्षित होता है।

श्री गुरु रामदास जी ने जो आध्यात्मिक विचार अपनी बाणी के माध्यम से प्रस्तुत किए उनके मुख्य सरोकार पूर्व गुरु-परंपरा के दर्शन से जुड़े हुए हैं। श्री गुरु रामदास जी की बाणी में गुरमुख एवं मनमुख की अद्भुत व्याख्या की गई है। वे भी श्री गुरु अमरदास जी की तरह प्रेमाभक्ति को प्रमुखता देने वाले गुरु हैं। सतसंगत को भी श्री गुरु रामदास जी मानव-जीवन का महान उद्देश्य मानते हैं। सेवा और त्याग जैसे नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा भी उनकी बाणी की प्रमुख चेतना है। श्री गुरु रामदास जी ने तीस रागों में अपनी बाणी की रचना की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में केवल एक राग (जैजावंती) को छोड़कर बाकी सभी रागों में गुरु जी की बाणी उपलब्ध होती है। श्री गुरु रामदास जी ने ईश्वर की भक्ति को दृढ़ करवाने के लिए लोकमानस के अनेक संदर्भों को बाणी के माध्यम से प्रस्तुत किया। आपकी सेवा एवं धर्म-साधना से श्री गुरु अमरदास जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह गुरु रामदास जी से

**१२५, कबीर पार्क, पोस्ट खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर-१४३००२*

किया। श्री गुरु अमरदास जी के आदेश का पालन करते हुए आपने जो नगर स्थापित किया उसे 'गुरु का चक्क' नाम दिया जो बाद में 'रामदासपुर' तथा फिर अमृत सरोवर के नाम पर 'अमृतसर' प्रचलित हुआ। श्री गुरु रामदास जी निपुण प्रबंधक भी थे। श्री अमृतसर शहर का प्रारंभिक निर्माण गुरु जी की देख-रेख में ही हुआ। गुरु जी की पूरी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। आपने पंजाबी भाषा के विकास में भी अनूठा योगदान डाला। श्री गुरु रामदास जी की परंपरा का आलौकिक शिखर श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन में लक्षित होता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने १६०४ ई में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन किया।

गुरु साहिबान में से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सबसे अधिक बाणी श्री गुरु अरजन देव जी की है। गुरु जी ने अपनी बाणी के लिए ३० रागों का उपयोग किया। सिक्ख-विचारधारा का अनूठा प्रचार-प्रसार आपके समय में हुआ। श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण में भी आपका अद्वितीय योगदान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का श्री हरिमंदर साहिब में प्रथम प्रकाश आपके द्वारा बाबा बुड्ढा जी को प्रथम ग्रंथी बनाकर करवाया गया। भारतीय समाज एवं संस्कृति में आपका अमूल्य योगदान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कल्याणकारी विचारधारा का प्रचार-प्रसार भी आपके प्रत्यनों से ही साकार हुआ। तरनतारन नगर भी आपके आशीर्वाद से ही अस्तित्व में आया। पंजाबी भाषा, साहित्य और संस्कृति को भी आपने नई दिशा दी। 'सुखमनी साहिब' आपकी अमूल्य निधि है। गुरु अरजन साहिब उच्च कोटि के आध्यात्मिक गुरु थे। सिक्ख चिंतन के विकास की विभिन्न दिशाओं को श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी एवं श्री गुरु अरजन देव जी ने जो गरिमा प्रदान की उसके मूल में आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी की वैचारिक क्रांति विद्यमान थी। सिक्ख चिंतन और विचारधारा की मूल संवेदना के अनेकों संदर्भ गुरु साहिबान की बाणी में अंतर्निहित हैं।



कविता

बेटियां

मम्मी-पापा की आंखों का, पानी होती हैं बेटियां।
सहमी-सहमी लेकिन, देश-कौम की रानी होती हैं बेटियां।
मीठी-मीठी बातें जब वो करती हैं,
मानो सबकी नानी होती हैं बेटियां।
पापा के दिल की धड़कन, आंखें नम कराकर
एक दिन घर छोड़कर, सुसराल चली जाती हैं बेटियां।
घर को स्वर्ग बनाने के लिए, सब कुछ सहती हैं,
बेटों से भी बढ़ कर, वफादार होती हैं बेटियां।
नजरों को समझती हैं, दिल को भी पहचानती हैं,
नाजुक सी हैं लेकिन, बड़ी सियानी होती हैं बेटियां।
माता तृप्ता-सी पावन
और बेबे नानकी-सी जानी-मानी होती हैं बेटियां।
माता सुलक्खणी-सी योग्य
और माता खींवी-सी सेवा की प्रतिमा होती हैं बेटियां।
माता भाग कौर-सी, मुकाबला करने में सक्षम,
गुरु-समर्पण में लासानी होती हैं बेटियां।



-बीबी जसपाल कौर, २३५, गुरु नानक पुरा, आदर्श नगर, जयपुर-३०२००४, मो : ९४१३४१८००४

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संगीत का महत्व

-बीबा गगनदीप कौर*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्खों का धार्मिक ग्रंथ होने के साथ-साथ यह सारी मानवता का सर्वसांझा रूहानी ग्रंथ भी है जिसमें सिक्ख गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान तथा गुरसिक्खों की बाणी दर्ज है। इस सारी बाणी का आधार रागात्मक है। विश्व के किसी भी ग्रंथ की रचना का आधार शुद्ध रागात्मक नहीं मिलता, इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भारतीय संगीत में महत्व और अधिक बढ़ जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन सिक्खों के पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने १६०४ ई में किया। गुरु जी ने गुरमति के अनुकूल बाणी को कई वर्षों की मेहनत से इकट्ठा करवाया और भाई गुरदास जी से इस बाणी को ग्रंथ रूप में लिखवाया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज गुरु साहिबान और भक्त साहिबान की बाणी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर जी और पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी दर्ज है। ये भक्त साहिबान अलग-अलग धर्मों और जातियों से सम्बंध रखते थे। इसके अलावा बाबा सुंदर जी, भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी नामक गुरसिक्खों की बाणी भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। श्री गुरु नानक देव जी ने दो शबद भाई मरदाना जी के नाम पर लिखे। ये भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किए गए हैं।

रागों के आधार पर बाणी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना रागों के आधार पर की गई है। एक राग में क्रमश: गुरु साहिबान की बाणी के बाद भक्त साहिबान की बाणी दर्ज है। भट्ट साहिबान की बाणी पावन ग्रंथ के बाद वाले भाग में दर्ज है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयुक्त रागों की गिनती मुख्यत: ३१ है, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अध्ययन से पता चलता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुछ और राग भी हैं जो इन रागों के अंतर्गत दर्ज किये गये हैं।

१) गउड़ी गुआरेरी, २) गउड़ी दखणी, ३) गउड़ी चेती, ४) गउड़ी बैरागणि, ५) गउड़ी दीपकी, ६) गउड़ी पूरबी दीपकी, ७) गउड़ी पूरबी, ८) गउड़ी माझ, ९) गउड़ी माला, १०) गउड़ी-सोरठि, ११) आसा काफी, १२) आसावरी, १३) देवगंधारी, १४) वडहंस दखणी, १५) तिलंग काफी, १६) सूही काफी, १७) सूही ललित, १८) बिलावल दखणी, १९) बिलावलु गोंड, २०) रामकली दखणी, २१) नट, २२) मारू काफी, २३) मारू दखणी, २४) बसंतु हिंडोल, २५) कलिआनु भोपाली, २६) प्रभाती दखणी, २७) प्रभाती बिभास, २८) बिभास प्रभाती।

इन रागों में से कुछ ऐसे राग हैं जो केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ही मिलते हैं। इन रागों का उल्लेख भारतीय संगीत ग्रंथों में स्पष्ट रूप में नहीं मिलता, जैसे माझ, गउड़ी गुआरेरी, गउड़ी बैरागणि, गउड़ी पूरबी दीपकी, गउड़ी माझ, गउड़ी सूही, गउड़ी माला, गउड़ी-सोरठि, आसा काफी, वडहंस इत्यादि।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उपासना का महत्व: संगीत साधना सभी गुरु साहिबान के जीवन का

**लेक्चरर, डी ए वी कालेज फार वुमेन, लारेंस रोड, श्री अमृतसर।*

अभिन्न अंग था। हम यह कह सकते हैं कि राग-विद्या और संगीत-शिक्षा के माध्यम से ही सिक्ख धर्म की उपासना पूर्ण होती है। राग के आधार बिना कीर्तन सम्पन्न नहीं होता। संगीत स्वयं एक साधना है और आत्मा का भोजन है। संगीत को अश्लीलता की दलदल से निकाल कर सिक्ख गुरु साहिबान ने समाज के प्रति जो उपकार किया, उसके लिए भारतीय संगीत सदैव उनका ऋणी रहेगा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : सिक्खों का भक्ति संगीत: सिक्खों का भक्ति संगीत भारतीय शस्त्रीय संगीत की परंपराओं पर आधारित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही सिक्ख धर्म का मुख्य ग्रंथ है। इसमें सिक्ख धर्म के गुरु साहिबान और भक्त साहिबान की पावन बाणियां संकलित हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी ३१ रागों में अंकित है। राग-रागनी पद्धति के अनुसार राग १४ हैं, रागनियां १७ हैं।

इससे सिद्ध होता है कि सिक्ख गुरु साहिबान और अन्य बाणीकारों का मात्र गायन-वादन में ही झुकाव नहीं बल्कि वे संगीत शास्त्र के अध्ययन में भी रुचि रखते थे।

सारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब श्लोकों में निबद्ध है : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित शबद रागबद्ध हैं। शबद को गुरु-रूप माना गया है। शबदों को पूर्णत: रागों में गायन करना ही उचित माना जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने आम लोगों की बोली में गूढ़ रहस्य भर दिये और शुद्ध रागों में बांध दिया। गुरु जी का उद्देश्य केवल हरि-स्मरण था। यह हरि-स्मरण अनुशासित रूप में संगीत के द्वारा किया गया। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गुरु जी का उद्देश्य अपने सिक्ख कीर्तनकारों को शत-प्रतिशत शास्त्रीय गायक बना देना नहीं था क्योंकि इस प्रकार तो सिक्खों का समस्त ध्यान संगीत कला पर ही केंद्रित हो जाता।

गुरु जी का अपना प्रिय राग : रागों में 'आसा' राग गुरु जी को अत्यंत प्रिय था, इसी लिए उन्होंने 'आसा की वार' का कीर्तन गायन किया, जिसकी कीर्तन-मर्यादा श्री गुरु अरजन देव जी ने स्थापित की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का महत्वपूर्ण योगदान है। दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी पावन बाणी सलोकों में रची। ये आठ रागों में अंकित गुरु साहिबान द्वारा उचारी गई वारों में मिलते हैं। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी की सुप्रसिद्ध बाणी 'अनंदु साहिब' है जो राग 'रामकली' में निबद्ध है। यह बाणी आज भी उसी तरह गाई जाती है जैसे उनके समय में गाई जाती थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित शबदों की संख्या ८९१ है। श्री गुरु अरजन देव जी का कहना था कि कीर्तन करने से मन को शांति मिलती है और जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। गुरु जी गउड़ी गुआरेरी राग में कथन करते हैं :

करि कीरतनु मन सीतल भए ॥
जनम जनम के किलविख गए ॥ (पन्ना १७८)

चौकियों का महत्व : इन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रागों को समयानुसार पांच कोटियों में विभाजित करते हुए उन्हें कीर्तन की पांच चौकियों का नाम दिया। इनमें से २ चौकियां 'आसा की वार' सूर्योदय से पहले की, दूसरी 'सो दरु' सूर्यास्य के बाद, करतारपुर में श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही परंपरागत रूप में चली आ रही थी। 'अनंदु' की चौकी आसा की वार के कीर्तन के पश्चात् एक लंबा शबद रामकली राग में गाया जाता है। चरण कमल की चौकी को बिलावल के नाम से भी जाना जाता है। 'सो दरु' की चौकी का समय सूर्यास्त का है जिसे हिंदोस्तानी संगीत में संधि प्रकाश कहा जाता है। सुख आसन या कलिआण की

चौकी, सूर्यास्त के बाद संध्या से आरंभ होती है।

गुरबाणी में 'रहाउ' शब्द स्थाई के स्थान पर : गुरबाणी में 'रहाउ' शब्द स्थाई के स्थान पर आया है, क्योंकि केंद्रीय भाव 'रहाउ' की पंक्ति में होता है। इसके अतिरिक्त पदे, उसके अंकों की संख्या का भी गुरबाणी में बहुत महत्व है, क्योंकि गायक को अंकों की सीमा में रहना पड़ता है। जब एक अंक में पूर्ण अंतरा गाया गया हो तो पुन: स्थाई ही कहना पड़ता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त साहिबान की बाणी के ऊपर 'घरु' शीर्षक अंकित किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखे गये संगीतात्मक शबदों का उद्देश्य साहित्य संगीत से मानव मन को इस लौकिक संसार से ऊपर उठा अलौकिक संसार की अनुभूति करवाना है और प्रभु-सिमरन से अपने मन को परमात्मा के प्रति समर्पित करना है।

श्री गुरु गुरु ग्रंथ साहिब में संगीतमय कीर्तन का बहुत महत्व है। बिना कीर्तन और संगीत के मानव का मन परमात्मा की ओर नहीं मुड़ सकता।

गुरमति संगीत की प्रस्तुति का लक्ष्य बाणी द्वारा परम सत्य का अनुभव है और बोध करवाना है। यह प्रस्तुति अपने विभिन्न संगीतक उपकरणों, अंगों और सौंदर्यात्मक कला-युक्तियों द्वारा केवल मानवी मन की भावुक एकता की रचना तक सीमित नहीं बल्कि बाणी के बोध गायन तथा श्रवण का अंतिम लक्ष्य प्रभु-भक्ति तथा चिंतन में रत होना है। ये स्मरण हो कि गुरमति संगीत की प्रस्तुति शबद है, परंतु साधारण संगीत की मुख्य प्रस्तुति संगीत और भाव है। इसके लिए यह प्रस्तुति किसी कला प्रस्तुति से भिन्न 'हउं' या 'मैं' से रहित है। गुरबाणी का कथन है :

इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥
हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥ (पन्ना १५८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संगीत सम्पूर्ण परमात्मा को पुकारता है। गुरमति संगीत शास्त्र अधीन, शबद अधीन, गायन प्रस्तुति साधारण संगीतक हिलोर की अनुभूति तक सीमित नहीं बल्कि बाणी के अंतर्निहित परम सत्य का अनुभव और बोध इसका लक्ष्य है। गुरु साहिबान प्रस्तुतकार के लिए जहां विशिष्ट, निश्चित और निर्धारक संगीत प्रबंध की सरंचना कर रहे हैं वहीं इन पर आधारित शबद कीर्तन प्रस्तुति की विधि और लक्ष्यों का वर्णन भी करते हैं। प्रस्तुति के संदर्भ में गुरबाणी के कुछ कथन यहां हमारे लिए महत्वपूर्ण है :

--आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ (पन्ना २७०)
--गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ (पन्ना १७२)
--सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै जीवणु बादि ॥ (पन्ना ६८)

इस तरह स्पष्ट है कि इस पवित्र लासानी ग्रंथ की रचना संगीत का उपयोग करते हुए की गई है। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई गई संगीत परंपरा भारतीय संगीत की मौलिक विशेषता है। आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब संगीत-प्रेमियों का भी मुख्य ग्रंथ बन गया है। कई महान विद्वान जैसे कि प्रो. तारा सिंघ, प्रो. करतार सिंघ, बाबा सरवन सिंघ, स. अमरजीत सिंघ (ग्रेवाल), स. गुरनाम सिंघ, स. बलवंत सिंघ, डॉ. बलबीर सिंघ, डॉ. बचित्तर सिंघ आदि ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संगीत संबंध के रहस्यों को समझ कर उन पर कई तरह से शोध किया है। संगीत से सम्बंधित होने के कारण श्री गुरु ग्रंथ साहिब गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों का धर्म ग्रंथ होने के साथ-साथ आज जनमानस का पूज्य ग्रंथ भीबन गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब और संगीत एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।



दशम गुरु जी द्वारा जगाने से जब हिंदोस्तान की आत्मा जाग उठी

*-स. जसबीर सिंघ**

बाल्यकाल में ही जिसने अपने पिता को प्रेरित किया हो कि वे देश-धर्म की रक्षा के लिए आत्म-बलिदान करें वह असाधारण बालक तो अवश्य रहा होगा। अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद भी जिसे मालूम हो कि इतिहास को किस तरह मोड़ना है और अपने उद्देश्य को जिसने तमाम अड़चनों के बावजूद हासिल किया हो, उसे युगपुरुष और अवतार न कहें तो क्या कहें? जिसने समाज की सबसे बड़ी कमजोरी वर्ण-विभाजन को समझा और तथाकथित शूद्रों, नीच जाति वालों को आत्मिक बल प्रदान कर समाज में प्रतिष्ठित किया, ताकि वे अन्यायकारी शक्तियों का मुंहतोड़ जवाब दे सकें, समाज की शोषक शक्तियों से दृढ़तापूर्वक लड़ सकें, समय के ऐसे प्रहरी को दूरदर्शी न कहें तो क्या कहें? जिसने तत्कालीन मुगल शासक औरंगजेब की विशाल राजनीतिक सत्ता को सिर्फ एक छोटी-सी खालसा टुकड़ी के बल पर ललकारा, उसे वीर मर्द अगंमड़ा न कहें तो क्या कहें? जिसने युद्ध में अपने दो जवान बेटों की शहीदी दी हो, जिसके दो मासूम बच्चे दीवार में चिन दिये गये हों, उस व्यक्ति के धैर्य को कौन-सी संज्ञा दें, जिसने कहा हो:

इन पुत्रन के सीस पर वार दिये सुत चार।
चार मूए तो किआ हूआ जीवत कई हजार।

दुनिया में तमाम अवतार, पैंगबर, महापुरुष हुए, भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन करने का दावा करने वाले हुए, कइयों ने स्वयं को 'भगवान' तक घोषित कर दिया, परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक ऐसी शख्सियत हुए हैं जिन्होंने अपनी बाणी में कह दिया:

जो हमको परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥३२॥ . . .
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखन आयो जगत तमासा ॥ . . .३३॥६॥
(बचित्र नाटक)

अर्थात् जो मुझे भगवान मानेगा वह घोर नरक में पड़ेगा। मैं तो परम पुरख (अकाल पुरख) का दास हूं।

ऐसे व्यक्तित्व को कहें तो क्या कहें? गुरु जी ने क्या चीज बनाई--खालसा, जिसे रचकर वे स्वयं इतने अभिभूत हो गये कि पुकार उठे:

खालसा मेरो पिंड प्रान।
खालसा मेरी जान की जान।५। (सरबलोह ग्रंथ)

पांच स्थूल तत्वों से रचे इस शरीर में, जो मानव-मात्र को मिला है, उन्होंने ऐसा कौन-सा 'अमृत' पिला दिया कि भारतवर्ष के वे लोग जो सदियों से प्रताड़ित, जुल्म की चक्की में पिस रहे थे, इतने निर्भीक हो गये कि मौत तक को गले लगाने लगे। जिस तरह निरीह गौरेया बाज पक्षी को ललकार कर उस पर टूट पड़े और उसके पंख तोड़ डाले; जैसे गीदड़ शेर को चुनौती देकर उसे पछाड़ डाले, ऐसा करिश्मा कर दिखाने वाले विस्मादी व्यक्तित्व दशम गुरु जी ने खालसा में कौन-सी शक्ति भर दी? १६९९ वाली वैसाखी के दिन गुरु जी ने ऐसा कौन-सा मंत्र फूंका कि भारतवर्ष की सोई हुई आत्मा जाग उठी और गुरु नानक साहिब के

**१२३/१, सेक्टर-५५, चंडीगढ़-१६००५५, मो : ९४१७२-३७५९३*

पावन कथन को गुनगुनाने लगी :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥

(पन्ना १४१२)

इस गूंज में ऐसी क्या हुंकार थी कि इतने विशाल भारतवर्ष में से हजारों-हजार जातियों में से पांच ऐसे नौजवान उठे, जो प्रांत-जाति, वर्ण-भेद की सीमायें तोड़ कर गुरु जी के चरणों में अपना सिर न्यौछावर करने को तैयार हो गये? ललकार तो साफ थी :

इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ *(वही)*

(इस मार्ग पर तभी पैर रखना यदि सिर देने में टाल-मटोल न करना हो।)

क्या था गुरु जी के नेतृत्व में कि पंजाब की धरती पर अपना सर्वस्व बलिदान कर जब गुरु जी महाराष्ट्र की धरती पर पहुंचे तो वहां की जनजातियां खालसा बन गईं? कई दशकों से तपस्या कर रहा सिद्धियों का मालिक माधोदास वैरागी गुरु का 'खालसा' बन पूरी मुगल सलतनत की जड़ें उखाड़ने लगा, आखिर क्यों? तब क्या खालसा के दाढ़ी-मूंछें नहीं थीं? तब क्या सिर पर दसतार नहीं सजानी पड़ती थी? तब क्या केश नहीं रखने पड़ते थे? क्या कृपाण आवश्यक नहीं थी? सब कुछ था। १६९९ की तथा २०११ की वैसाखी में यही परिवर्तन है कि हम खालसा की मूल भावना व गुरु जी की महान विचारधारा *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"* से परे हटे हैं, नहीं तो जो सत्य तब जनता को इतना आंदोलित कर गया, आज क्यों नहीं कर रहा है? धूम्रपान-विरोध क्या केवल खालसा कर रहा है? आज सारी दुनिया उस दशम पातशाह के हुक्म का पालन करने को विज्ञापन दे रही है! क्या आज दुनिया की कोई भी कौम खालसा को दी गयी हिदायत "पर-स्त्री/पर-पुरुष का गमन वर्जित है" की अवमानना करती है?

मनुष्य गुणों के आधार पर ही श्रेष्ठ बन सकता है। उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से, हेरेडिटी के प्रभाव से उत्तम नहीं बन सकता और यह भी कि प्रतिभा किसी खास नस्ल की बपौती नहीं है। यह भी सही नहीं कि जिस समुदाय की संख्या सबसे अधिक होगी वही समाज के बदलावों का संचालक होगा, बल्कि उसकी गुणवत्ता क्या है, यह अधिक महत्वपूर्ण है। गुरु जी के जीवन-काल में मुसलमानों की संख्या एवं सामाजिक प्रतिष्ठा अधिक थी, कथित निम्न कोटि की जातियां बहुत थीं, पर बंटी हुई और गुणवत्ता में भी बदतर थीं, इसलिये सामाजिक परिवर्तन की दिशा उल्टी करने के लिये यही आवश्यक था कि इन जातियों में गुणात्मक उत्कृष्टता आये और गुरु जी ने यही कर दिखाया। गुरु नानक साहिब के काल से जो सिक्ख धर्म से प्रभावित हो कर्मकांडों, अंधविश्वासों, पूजा-पुरोहितों के चंगुलों से निकल रहे थे उन्हें पूर्णता देने की जरूरत थी :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥

(पन्ना १४२९)

१६९९ ई में खालसा सृजने के साथ सामाजिक परिवर्तनों का जो सिलसिला गुरु जी ने प्रारंभ किया था, उसमें कथित छोटी जातियां सिर उठाने लगी थीं। तत्कालीन शोषण व्यवस्था के प्रतिपोषक राजाओं-सामंतों के प्रति बगावत की भावना तो फैली हुई थी ही, गुरु जी के खालसा-अभियान ने उसे क्रांति में बदल दिया। कम संख्या होते हुए भी उत्कृष्टता के कारण एक-एक व्यक्ति राजाओं की टुकड़खोर सैनिकों की बहुगिनती पर भारी था और जो-जो नियम गुरु जी ने खालसा के लिये सुझाये थे वे एक इंसान को संत-सिपाही बनाने के लिये काफी थे। तभी

(शेष पृष्ठ ७५ पर)

श्री गुरु नानक देव जी का अनूठा आशीर्वाद

*-डॉ. लीला मोदी**

बात तो बहुत पुरानी है, लेकिन संस्कृति की आत्मा में आज भी शाश्वत है। श्री गुरु नानक देव जी का यह अनूठा आशीर्वाद सृष्टि के साथ चिर शाश्वत रहेगा।

श्री गुरु नानक देव जी अपने शिष्यों को साथ लेकर यात्रा पर जाते थे। विश्व के उत्थान के लिए हर मानव को कर्मरत और संस्कारवान बनाना उनका ध्येय था। वे जगह-जगह जाकर, लोगों को उपदेश देते थे। उनके चरण-कमलों का स्पर्श धरती के जिस भी कोने पर होता था लोग चुंबक की तरह आकर्षित होकर खिंचे चले आते थे। उनके बोल रूपी उपदेशों की अमृत-बाणी को सुनने के लिए लोग प्यासे चातक की तरह प्रतीक्षा करते थे। विश्व के कोने-कोने के लोग चाहते थे कि जीवन में एक बार श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन अवश्य हों।

श्री गुरु नानक देव जी एक दिन ऐसे गांव में पहुंचे जहां के लोग बहुत आलसी थे। वे कोई भी काम नहीं करना चाहते थे। अच्छी बातें सीखने में उनकी कोई रुचि नहीं थी। वे अतिथि की आवभगत की परंपरा को नहीं जानते थे। उस गांव में दरिद्रता और मलिनता छाई हुई थी। अनुशासन व खुशहाली का नामोंनिशान भी नहीं था। श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों में वहां के लोगों ने कोई रुचि नहीं ली। गुरु जी का आदर-सत्कार नहीं किया। श्री गुरु नानक देव जी कुछ दिन वहां रहे। वे अपने सदुपदेशों की अमृत-वृष्टि करते रहे।

आज विदाई का दिन था। गांव के अधिकांश लोग उन्हें विदा करने आये। श्री गुरु नानक देव जी जब उस गांव से चलने लगे तो लोगों के शीश आशीर्वाद के लिए नीचे झुके हुए थे, उनके कान आशीष सुनने को बेताब थे। गुरु जी के मुख से निकला, "यहीं बसे रहो!" उनके शिष्यों को गुरु जी की यह बात अजीब लगी। उन्हें इसका अर्थ समझ में नहीं आया। गुरु नानक साहिब अनूठा आशीर्वाद देकर अपने शिष्यों के साथ वहां से चल दिए।

कुछ दिनों के बाद श्री गुरु नानक देव जी दूसरे गांव में पहुंचे। गांव में खुशहाली छाई हुई थी। जगह-जगह संपन्नता बिखरी हुई थी। जब वहां के लोगों को यह पता चला कि श्री गुरु नानक देव जी आए हैं, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। सारे का सारा गांव और दूर-दूर से लोग उनके दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े। सब लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। गुरु जी तथा उनके शिष्यों के रहने की उचित व्यवस्था की। काम करने के बाद वे श्री गुरु नानक देव जी के पास आ बैठते। अपनी आंखों में उनकी मोहक छवि निहारते रहते। हर पल उनके उपदेश सुनने के लिए बड़ी संख्या में संगत इकट्ठी होती। लोगों ने श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों को बड़े ध्यान से सुना तथा उन्हें जीवन में उतारने का प्रण लिया।

कुछ दिन वहां रहकर श्री गुरु नानक देव जी ने वहां से विदा मांगी। विदा होते समय लोगों की आखों से आंसू झर-झर बह रहे थे। विदा होते समय श्री गुरु नानक देव जी के

**२९१, मोती स्मृति, टिपटा कोटा (राजस्थान)-३२४००६*

मुखारबिंद से निकला, "यह गांव उजड़ जाए, यहां के लोग सब तरफ बिखर जाएं!"

उनके शिष्यों को गुरु जी के इस अनोखे व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस गांव के लोगों ने अच्छाई को ग्रहण किया, गुरु जी ने उन्हें उजड़ जाने का आशीर्वाद क्यों दिया?

उनके एक प्रिय शिष्य भाई मरदाना जी से न रहा गया। वे बोले, "गुरदेव! आपके आशीर्वाद का रहस्य क्या है? जहां आपका अपमान हुआ वहां के लोगों को आपने वहीं बसे रहने का आशीर्वाद दिया, जहां पर आपका सम्मान हुआ, वहां के लोगों को आपने उजड़ जाने को कहा, ऐसा क्यों? अच्छाई व बुराई के बदले में यह अनोखा अंतर क्यों गुरु जी?"

श्री गुरु नानक देव जी बोले, "हे भाई! जो लोग अच्छाई नहीं अपनाना चाहते और बुराई के साथ ही जीते हैं ऐसे लोग एक ही स्थान पर ही सीमित रहें तो भला है तांकि अपनी बुराइयां वे कहीं और न फैला पाएं।"

शिष्यों ने पूछा, "यह तो ठीक है, परंतु आपने तो अच्छे लोगों को उजड़ने का आशीर्वाद दे दिया। उसका क्या कारण है?"

श्री गुरु नानक देव जी ने प्यार से समझाया, ताकि वे अपनी अच्छाई को अधिक से अधिक लोगों में बांट सकें जिससे प्रेरणा लेकर और भी लोग अच्छे बनें तथा अच्छाई चारों ओर फैल जाए।"



दशम गुरु जी द्वारा जगाने से . . .

(पृष्ठ ७३ का शेष)

गुरु जी ने इतने आत्मविश्वास के साथ कहा था:
सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

और वह खालसा जिसके लिये गुरु जी ने कहा :
खालसा मेरो रूप है खास।
खालसह महि हउं करहुं निवास।१। (सरबलोह ग्रंथ)

आज खालसा को क्यों नफरत की दृष्टि से देखा जा रहा है? क्यों इसे नेस्तनाबूद करने को सोचा जा रहा है? क्यों हमारे बच्चे ये शक करते हैं कि लंबे केश-दाढ़ी रखने से पुलिस पकड़ कर ले जायेगी? शायद गुरु जी ने इस समस्या को पहले से समझ लिया था। उन्हें मालूम था कि जो रूप मैं खालसा को दे रहा हूं वह किसी भी समुदाय में नहीं खपेगा अर्थात् आम औसत नागरिक से उसे श्रेष्ठ बनना ही है, तभी वह 'खालसा' कहला सकेगा। उन्हें मालूम था कि खालसा को कठिनाइयां होंगी, इसलिये सदैव काल में पथ-निर्देश के लिये, शंकाओं से मुक्ति के लिये उन्होंने श्री ग्रंथ साहिब को सदीवी गुरु का रुतबा देते हुए मानवता को इसकी रुहानी अगवाई में दे दिया:
गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह।
('पंथ प्रकाश' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ)

अकाल पुरख की ओट लेने वाला खालसा जानता है कि उसे सदैव धर्म तथा सच्चाई का पक्ष लेना है :
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

खालसा चाहे किसी देश, किसी प्रांत में हो, उसके सजाने वाले पिता का उसे हुक्म है कि सत्य के लिये समर्पित रहना है, न्याय के लिये जूझना है, और जीतना है। 

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-४१

उपनिषदों के अनुवादक : कवि प्रहलाद राय

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में आश्रय प्राप्त करने वाले विद्वानों एवं कवियों में से एक थे--कवि प्रहलाद राय।

सन् १६९० ई. में जब गुरु जी पाऊंटा साहिब से अनंदपुर साहिब वापस आये तो उन्होंने साहित्यिक विकास की महान योजनाएं बनायीं। इन योजनाओं में 'महाभारत', 'उपनिषद' एवं राजनीतिक ग्रंथों के अनुवाद विशेष रूप से शामिल थे। एक ओर जहां विभिन्न विद्वानों को 'महाभारत' के विभिन्न पर्वों का अनुवाद करने का कार्य सौंपा गया, वहीं विद्वान कवि प्रहलाद राय को उपनिषदों के अनुवाद की जिम्मेदारी भी दी गई।

उपनिषदों का अनुवाद आरंभ करते समय कवि प्रहलाद राय ने स्वयं लिखा है कि वह संवत् १७४६ वि. (सन् १६८९ ई.) को श्री गुरु (दशमेश पिता) जी की आज्ञा से उपनिषदों का अनुवाद आरंभ कर रहा है।

इससे कुछ ही समय पूर्व मुगल शहजादे दाराशिकोह ने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कराया था। प्रहलाद राय ने यह भी स्पष्ट किया है कि वह उपनिषदों को 'यामनी भाषा' (फारसी) से पुनः हिंदवी भाषा में लाने के लिए यह अनुवाद कर रहा है।

इस प्रकार कवि प्रहलाद राय ने संस्कृत और फारसी में मौजूद उपनिषदों को जन-भाषा में लाने का काम किया। यह तथ्य साबित करता है कि कवि प्रहलाद राय संस्कृत और फारसी के श्रेष्ठ विद्वान थे।

कवि प्रहलाद राय ने कुल मिलाकर पचास उपनिषदों का अनुवाद किया। तैत्तरीय, ईशावास्य, छांदोग्य, मुंडक, कठ, कैवल्य, प्रश्न, शौणिक, मांडूक्य, तारक आदि कुछ प्रमुख उपनिषद इसमें शामिल हैं।

यह अनुवाद गद्य में किया गया है, उदाहरणत :

"नाराइण कैसा है जो सभनां जीवां विखै रहता है अरु जीव सभ तिस में रहते हैं। उस परमातमा एका एकी ने चहिआ जो इक थीं मैं बहुतु होवां अर ऐस एकता थी विच अनेकता दे प्रकास करां। प्रथमे इस नाराइण थीं इछा शकति गुपत अप्रगटि प्रगटि सि होई बहुड़ि भूताकास होति भया। बहुड़ वाओ अरु अगन अरु जल अरु प्रिथवी जो आधार सभनां दी है, प्रकास होए।"

प्रहलाद राय ने मात्र विद्वतापूर्ण अनुवाद-कार्य ही नहीं किये बल्कि बहुत सुंदर काव्य भी रचा। उनका काव्य उनकी सूक्ष्म आध्यात्मिक समझ को दर्शाता है :

रे नर जान बूझ मति मंदा।
सब साधन सब सुक्रित को फल, भजिओ न कौसल चंदा। . . .
बात बनाइ करत लोकन मैं, चतुराई बहु ठानै।
ध्रिग ध्रिग तेरी चतुराई प्रभु सिउ रति नहीं आनै। . . .
सत सनेहु राम सिउ उपजै, बिखै भोग बिख लागै।
तब जानऊ 'प्रहिलाद' हिऐ महिं, प्रभु करुणा ते जागै।

इस प्रकार कवि प्रहलाद राय एक ओर श्रेष्ठ विद्वान के रूप में दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर संवेदनशील कवि नज़र आते हैं।



**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ०९४१७२-७६२७१*

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक : गुरमति-दरशन ते सिक्ख-सभिआचार (पंजाबी) पृष्ठ : १८४
संपादक : स. सिरमजीत सिंघ कीमत सजिल्द : ४० रुपये
प्रकाशक : धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर।

प्रतिनिध सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अपने साथ संबंधित विभागों सहित सिक्ख संगतों और पंजाबी पाठकों को उच्च स्तरीय गुरमति साहित्य लागत या इससे भी कम कीमत पर उपलब्ध कराने की दिशा में प्रयासरत है। इसी प्रसंग में इसकी धर्म प्रचार कमेटी द्वारा नवप्रकाशित पुस्तक "गुरमति-दरशन ते सिक्ख-सभिआचार", जो कि गुरमति प्रकाश/ गुरमति ज्ञान के संपादक स. सिमरजीत सिंघ द्वारा संपादित है, सिक्ख संगतों और संभावित पंजाबी पाठकों की जानकारी हेतु उसके उपलक्ष्य में जान-पहचान करायी जा रही है।

इस पुस्तक में गुरमति साहित्य को समर्पित पूरे डेढ़ दर्जन प्रसिद्ध लेखकों/लेखिकाओं द्वारा लिखित कुल उन्नीस उच्च स्तरीय आलेख शामिल हैं। इस पुस्तक को रीतिगत रूप में भागों में नहीं विभाजित किया गया। वैसे व्यवहारिक रूप में यह अपने शीर्षक के पूर्णत: अनुरूप दो भागों में नियोजित हुई अवश्य दृश्टव्य होती है। पहले नौ आलेख 'गुरमति-दर्शन' विषय-वस्तु के साथ संबंधित हैं और बाद वाले दस आलेख 'सिक्ख-सभ्याचार' की विषय-वस्तु के साथ अपना नाता बनाते दीखते हैं। विभिन्न लेखकों/ लेखिकाओं ने इन दोनों विषय-वस्तुओं के साथ संबंधित मूल और प्रमुख संकल्पों एवं धारणाओं को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी के प्रमाणों सहित खोला है। प्रस्तुत आलेखों में इस अद्वितीय ग्रंथ की बाणी को ही अध्ययन तथा विश्लेषण का आधार बनाया गया है। 'गुरमति-दर्शन' और 'सिक्ख-सभ्याचार' का मूल स्रोत भी तो यही अद्वितीय ग्रंथ है।

पुस्तक का पहला आलेख सुप्रसिद्ध सिक्ख चिंतक डॉ. तारन सिंघ द्वारा लिखित है जिसका शीर्षक है, "स्री गुरू ग्रंथ साहिब जी दे दारशनिक सिधांत"। यह 'ब्रह्म', 'आत्मा' और 'जगत-प्रकृति', तीन मूल दार्शनिक सिद्धांतों को रेखांकित करता है। इन पर सूत्रिक शैली में भरपूर विवेचन प्रस्तुत है। लेखक स्पष्ट करता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप भेद अथवा रहस्य का है न कि शास्त्र का और इसके बारे में यह भी बताया जाता है कि इसकी पावन बाणी में से शास्त्र को प्राप्त किया जा सकता है। यह आलेख अत्यंत मूल्यवान विचार-बिंदु को स्पष्ट करता है कि पूर्बले ग्रंथों से इस ग्रंथ में सदाचार और सामाजिकता की मीरी अथवा अमीराना वृद्धि है जो कि इसको सबसे विलक्षण स्वरूप तथा प्रकृति देती है।

प्रिं: प्रीतम सिंघ द्वारा लिखा हुआ आलेख शबद, नाम, सत्य, चित्त, आनंद और मुक्ति पहलुओं पर अपने शीर्षक के अनुरूप तत्वमूलक चिंतन है। 'शबद' को सिक्ख धर्म का बुनियादी संकल्प बताया गया है। 'शबद' ही सृष्टि-रचना का मूल कारण है। इस रूहानी विचार के आधार पर प्रोफेसर महोदय वर्तमान वैज्ञानिकों की तरफ से दिये गए विकासवादी सिद्धांत से इसको अधिक प्रौढ़ स्थापित करने के प्रति तीव्र इच्छा व्यक्त करते हैं, जबकि डॉ. कुलदीप सिंघ कृत "गुरबाणी अते विगिआन : आधुनिक दरशन" द्वारा सृष्टि-रचना के उपलक्ष्य में ईसाई मत द्वारा प्रचारित मिथ्या विवेचनों/कथनों के प्रसंग में गुरमति दर्शन की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। यह स्मरणीय है कि डॉ. साहिब एक ही समय

विज्ञान के संबंध में और गुरमति संबंधी उच्च स्तरीय आलेखों के रचयिता हैं।

'निरमला संप्रदाय' के साथ संबंधित निर्मल रहिणी एवं दृष्टि के धारक ज्ञानी बलवंत सिंघ कोठागुरू, गुरबाणी और अनमती ग्रंथों के ठोस अध्ययन के आधार पर गुरमति-दर्शन से संबंधित पावन गुरबाणी के संकल्प '੧ੴ' से पूर्व प्रचलित धारणा 'ओम' से व्यापकता तथा विलक्षणता सिद्ध करते हैं। एक सकुशल प्रबंधक की हैसियत से सिक्ख कार्य-क्षेत्रों में जाने-माने शिरोमणि कमेटी के उच्चाधिकारी स. वरिआम सिंघ ने आवागमन तथा मुक्ति के विषय के साथ पूर्व प्रचलित शास्त्रीय धारणाओं, वर्तमान युग तक प्राचीन काल से चली आ रही जन-धारणाओं के उपलक्ष्य में बताते हुए इन दार्शनिक पहलुओं को गुरमति दर्शन के अनुरूप स्पष्ट किया है। डॉ. बलकार सिंघ अपने आलेख में शबद-गुरु के सिक्ख माडल को उजागर करते हुए इसको अस्पष्टता के धुंध गुबार में पहुंचाने वाले वर्तमान स्वार्थी तत्वों से हमें सावधान करते हैं।

'सिक्ख सभिआचार' वाले भाग की शुरूआत प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर के आलेख 'गुरमति-सभिआचार' के साथ होती है। प्रोफेसर महोदय ने गुरमति सभ्याचार के उगमने की पृष्ठभूमि देते हुए इसके कर्मकांड विरोधी और सर्वसांझीवालता पर आधारित अनेकों मानवतावादी लेखक सरोकारों को सही-सही रेखांकित किया है। स्थापित सिक्ख की हैसियत से जाने जाते प्रिं: सरमुख सिंघ अमोल इस सभ्याचार के उगमने तथा विकसित होने के साथ जुड़े भूगौलिक स्थिति, इतिहास, भाषा तथा लिपि, 'कुल्ली, गुल्ली, जुल्ली' अथवा मकान, रोटी, वस्त्र तथा उपजीवका के अन्य भी कई पासार दृष्टिगोचर करते हैं। सुप्रसिद्ध सिक्ख विद्वान प्रो. पिआरा सिंघ पदम द्वारा लिखित आलेख सिक्ख सभिआचार, दसतार, गुरु-ग्रंथ तथा गुरु-पंथ आदि महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

स. सुखदेव सिंघ शांत पुस्तक में अपने दो आलेखों 'सिक्ख सभिआचार अते बाणी' और 'स्री गुरू ग्रंथ साहिब जी विच विशव भाईचारे दी मजबूती दा विचारधारक आधार' द्वारा अधिक योगदान डाल सकने के कारण भाग्यशाली भी हैं और अधिक ध्यान दिये जाने योग्य भी। ऐसे ही पुस्तक में चाहे दो ही लेखिकाओं द्वारा लिखित आलेखों को शामिल किया जा सका है लेकिन दोनों ने अपने-अपने विषयों के साथ पूर्ण न्याय करते हुए अपनी ऊंची योग्यता तथा व्यापक क्षमता को सिद्ध किया है। डॉ. जसविंदर कौर कृत आलेख 'स्री गुरू ग्रंथ साहिब दी बाणी विच सुचज्जी नार दा संकलप' और डॉ. शरण कौर रचित 'स्री गुरू ग्रंथ साहिब दा विशवविआपी संदेश' दोनों कृतियां अपनी संवेदनशीलता की अधिक ऊंची डिगरी के कारण पाठकों को झकझोरने तथा अमल-व्यवहार की दिशा में क्रियाशील होने के लिए प्रेरणा देने में प्रभावशाली हैं। स. शमशेर सिंघ अशोक रचित 'स्री गुरू ग्रंथ साहिब विच समाजिक सुधार', डॉ. शमशेर सिंघ रचित 'सांझीवालता अते सरबत्त दा भला' और डॉ. परमवीर सिंघ रचित 'स्री गुरू ग्रंथ साहिब दा विशवविआपी द्रिशटीकोण' इन कलम-साधकों की गहरी साधना तथा परिश्रम का मुंह बोलता प्रमाण कहे जा सकते हैं। संपादक महोदय ने 'करम सिधांत' द्वारा और इन लाइनों के लेखक ने (मैंने) उनकी ओर से दिये विषय 'स्री गुरू ग्रंथ साहिब विच जगत अते मनुक्ख सबंधी दारशनिक विवेचन' पर तिल-फुल रूपी विचार द्वारा हाजरी लगवाई है। कुल मिलाकर यह पुस्तक संपादक स. सिमरजीत सिंघ का एक गंभीर विषय पर एक गंभीर प्रयत्न कहा जा सकता है।

समीक्षाकार,
सुरिंदर सिंघ निमाणा, सहायक संपादक।
मो. : ८८७२७३५१११



ख़बरनामा

मोबाइल फोन कंपनियां 'गुरबाणी' को 'गाना' कहकर गुरबाणी का अपमान करने से बाज आएं : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १६ मई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने मोबाइल फोन कंपनियों द्वारा अपने ग्राहकों को किसी नंबर पर डायल करते समय आगे से साधारण घंटी की आवाज सुनने की बजाय मनचाही कालर-ट्यून या गाना डाऊनलोड करने के लिए प्रदान की प्रक्रिया में 'गुरबाणी' को 'गाना' कहे जाने का गंभीर नोटिस लेते हुए इस प्रक्रिया में तुरंत संशोधन करने के लिए कहा है।

यहां से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इस कार्यालय में बड़ी संख्या में पत्र व फोन-संदेश पहुंच रहे हैं कि जब किसी मोबाइल फोन-धारक द्वारा दूसरे मोबाइल नंबर पर डायल किया जाता है तो घंटी की आवाज सुनने से पूर्व आपरेटर द्वारा यह कहा जाता है कि 'गाना कापी करने के लिए स्टार के बाद ९ दबाएं' लेकिन बाद में 'गाने' की जगह 'गुरबाणी के शबद' की पंक्तियां सुनाई देती हैं। उन्होंने कहा कि गुरबाणी श्रवण करना/ करवाना बढ़िया रुझान है मगर 'गुरबाणी' को 'गाना' कहे जाने पर मोबाइल फोन कंपनियों को इस शब्दावली में तुरंत सुधार करने को कहा है। 'गुरबाणी-शबद' डाऊनलोड करवाने के लिए 'गाने' की जगह 'गुरबाणी-शबद' इस्तेमाल किया जाए।

धार्मिक परीक्षा नवंबर २०१० का परिणाम घोषित

श्री अमृतसर : १८ मई। धर्म प्रचार कमेटी के अतिरिक्त सचिव स. सतबीर सिंघ ने जानकारी देते हुए बताया कि स्कूलों/कालेजों में पढ़ते विद्यार्थियों को गुरमति के साथ जोड़ने के लिए गुरबाणी, सिक्ख इतिहास तथा सिक्ख रहित मर्यादा सम्बंधी पाठ्यक्रय के आधार पर धर्म प्रचार कमेटी द्वारा नववर २०१० में ली गई धार्मिक परीक्षा का परिणाम जारी कर दिया गया है और यह शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की वेबसाईट www.sgpc.net पर भी उपलब्ध है। परीक्षा में भाग ले चुके विद्यार्थी तथा शिक्षण संस्थाओं के प्रबंधक वेबसाईट से परिणाम की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स. सतबीर सिंघ ने कहा कि नवंबर २०१० में ली गई चारों दर्जों की धार्मिक परीक्षा में बीस हजार विद्यार्थी शामिल हुए। धार्मिक परीक्षा में अव्वल आने वाले प्रथम दर्जे में से ७५०, दूसरे दर्जे में से ४००, तीसरे दर्जे में से १५० तथा चौथे दर्जे में से ३० विद्यार्थियों को क्रमश: प्रति विद्यार्थी ११०० रुपए, २१०० रुपए, ३१०० रुपए तथा ४१०० रुपए वजीफे के रूप में दिए जाएंगे। चारों दर्जों में पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमश: २१००, १५०० तथा ११०० रुपए विशेष इनाम के रूप में भी दिए जाएंगे।

वजीफा प्राप्त करने के अलावा विशेष इनाम प्राप्त करने वाले पहले दर्जे में से गुरु रामदास अकादमी, गांव-रिआली कलां, जिला गुरदासपुर की छात्रा बीबा रमनदीप कौर, अनुक्रमांक ४२४५ ने २२८ अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान हासिल किया, लिटिल फ्लावर्ज मॉडल सीनीयर सेकंडरी स्कूल, गहिरी मंडी, श्री अमृतसर की छात्रा बीबा हरमनप्रीत कौर, अनुक्रमांक ४०५३, ने २२७ अंक प्राप्त कर दूसरा स्थान तथा गुरु रामदास अकादमी, गांव रिआली कलां, जिला गुरदासपुर के छात्र रोजबीर सिंघ, अनुक्रमांक ४२४४ ने २२६ अंक प्राप्त कर तीसरा स्थान हासिल किया। दूसरे दर्जे में से प्रीत

माडल सीनियर सेकंडरी स्कूल, बडरुक्खां, जिला संगरूर की छात्रा बीबा कविश बावा, अनुक्रमांक ५८३९ ने २२२ अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया; शांति देवी आर्य महिला कालेज, दीनानगर, जिला गुरदासपुर की छात्रा बीबा गुरप्रीत कौर, अनुक्रमांक ५७८२ ने २२० अंक तथा बाबा गुरमुख सिंघ बाबा उत्तम सिंघ सीनियर सेकंडरी स्कूल, तरनतारन की छात्रा बीबा डिंपलजीत कौर, अनुक्रमांक ६२९६ ने भी २२० अंक प्राप्त कर दूसरा स्थान प्राप्त किया एवं इसी स्कूल की छात्रा बीबा गुरप्रीत कौर, अनुक्रमांक ७०८४ ने २१८ अंक प्राप्त कर तीसरा स्थान प्राप्त किया। तीसरे दर्जे में से श्री गुरु अंगद देव कालेज, खडूर साहिब (तरनतारन) की छात्रा बीबा जसप्रीत कौर, अनुक्रमांक ९१७ ने २०९ अंक प्राप्त कर पहला स्थान हासिल किया; दूसरे स्थान के लिए इसी कालेज की छात्रा बीबा हरविंदरपाल कौर अनुक्रमांक ९१२ ने २०८ अंक प्राप्त किए; तीसरे स्थान के लिए २०७ अंक प्राप्त करने वालों में संत बाबा लाल सिंघ जी बरकत डिग्री कालेज, टल्लेवाल (बरनाला) की छात्रा बीबा मनदीप कौर, अनुक्रमांक ६१३ तथा माता गुरमेज कौर मेमोरियल कालेज, मजीठा (श्री अमृतसर) की छात्रा बीबा राजविंदर कौर, अनुक्रमांक १४२५ के नाम शामिल हैं। चौथे दर्जे में से प्रथम स्थान के लिए सिक्ख नेशनल कालेज, कादीआं (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा राजिंदर कौर, अनुक्रमांक ६८ ने २०१ अंक तथा शांति देवी आर्य महिला कालेज, दीनानगर (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा गगनदीप कौर, अनुक्रमांक १२२ ने भी २०१ अंक प्राप्त किए। इसी प्रकार बाबा आइआ सिंघ रिआड़की कालेज, तुगलवाला (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा इंदरजीत कौर, अनुक्रमांक १४ ने २०० अंक प्राप्त करके दूसरा स्थान प्राप्त किया और गुरु नानक कालेज, मोगा के छात्र हीरा सिंघ, अनुक्रमांक १६२ ने १९९ अंक प्राप्त कर तीसरा स्थान हासिल किया।

इस अवसर उन्होंने विद्यार्थियों, उनके परिजनों तथा शिक्षण-संस्थाओं के प्रबंधकों को मुबारकबाद देते हुए बताया कि नवंबर २०११ में होने वाली धार्मिक परिक्षा के लिए नया पाठ्यक्रम तैयार कर लिया गया है जिसके अनुसार चारों दर्जे में तीन पेपरों की जगह दो पेपर कर दिए गए हैं।

श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में फूलदार पौधे लगाने की सेवा आरंभ

श्री अमृतसर : श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा तथा बरामदों की छतों की बनावट को और अधिक सुंदर बनाने के लिए सुंदर गमलों में फूलदार पौधों को लगाने की सेवा आरंभ की गई है। यह सेवा कार-सेवा वाले बाबा अमरीक सिंघ को सौंपी गई है।

इस अवसर पर शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सदस्य स. जसविंदर सिंघ एडवोकेट ने कहा कि आज के युग में बढ़ रहे प्रदूषण तथा कम हो रही हरियाली ने वातावरण तथा प्राकृतिक स्रोतों को कमजोर किया है। उन्होंने इस कार्य को सफल बनाने के लिए बाबा अमरीक सिंघ को हर संभव सहयोग देने का भरोसा दिया है। बाबा अमरीक सिंघ ने कहा कि वे शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, संगत तथा फूलदार पौधों के विशेषज्ञ चंडीगढ़ के डॉ. नरूला के सहयोग से इस सेवा-कार्य को नियत समय में पूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगे।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०६-२०११